

**BRAHMAVART P.G. COLLEGE, MANDHANA,
KANPUR NAGAR**

प्रश्नBANK

**FOR CSJM UNIVERSITY'S
ODD SEMESTER EXAMINATION**

**M.A.I SEM (HINDI)
PAPER- IVth**

**कथा साहित्य
(A010704T)**

**Dr. Amit Kumar Dubey
Department of Hindi, Brahmavart P.G. College, Kanpur**

प्रश्नपत्र का परिचय

परास्नातक हिंदी चतुर्थ प्रश्नपत्र (कोर) है- कथा साहित्य | यह प्रश्नपत्र चार ब्लॉक (खंड) में वभक्त है। प्रत्येक ब्लॉक (खंड) में दो इकाई है। इस तरह कथा साहित्य प्रश्नपत्र में कुल चार ब्लॉक और 8 इकाइयां है। ब्लॉक और इकाइयों का ववरण निम्नानुसार है-

Block(खंड)	Unit (इकाई) Details
Block - I	Unit- 1. उपन्यास आधुनिकता मध्य वर्ग और उपन्यास प्रेमचंद - गोदान Unit- 2. प्रेमचंदोत्तर उपन्यास आंच लकता और हिंदी उपन्यास फणीश्वर नाथ रेणु - मैला आंचल
Block - II	Unit- 1. कहानी आख्यान और कथा-संरचना आख्यायिका, कथा और कहानी प्रारं भक हिंदी कहानी Unit- 2. स्वाधीनता पूर्व हिंदी कहानी उसने कहा था: चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' कफ़न: प्रेमचंद मधुआ: जयशंकर प्रसाद
Block - III	Unit- 1. नई कहानी एवं अन्य कहानीआंदोलन हिंदी कहानी पर व भन्न वचारधाराओं का प्रभाव Unit- 2. कहानीकार अमरकांत और मन्नू भंडारी जिंदगी और जोक: अमरकांत यही सच है: मन्नू भंडारी
Block - IV	Unit- 1. कहानीकार भीष्म साहनी और फणीश्वर नाथ रेणु चीफ की दावत: भीष्म साहनी तीसरी कसम: फणीश्वर नाथ रेणु Unit- 2. कहानीकार निर्मल वर्मा, उषा प्रयंवदाऔर ज्ञानरंजन परिंदे: निर्मल वर्मा वापसी: उषा प्रयंवदा पता: ज्ञान रंजन

खंड एक (Block-1) के बारे में-

परास्नातक हिंदी चतुर्थ प्रश्नपत्र कथा साहित्य का प्रथम खंड हिंदी साहित्य की लोक प्रय
वधा उपन्यास पर आधारित है। इसके अंतर्गत आप दो इकाइयों का अध्ययन करेंगे।

प्रथम खंड की इकाइयां इस प्रकार हैं-

इकाई (यूनिट) 1- उपन्यास

- आधुनिकता मध्यवर्ग और उपन्यास
- प्रेमचंद - गोदान

इकाई (यूनिट) 2- प्रेमचंदोत्तर उपन्यास

- आंच लकता और हिंदी उपन्यास
- फणीश्वर नाथ रेणु - मैला आंचल

प्रथम इकाई के अंतर्गत आप हिंदी कथा साहित्य की लोक प्रय वधा उपन्यास की परिभाषा, स्वरूप, विकास-वस्तार के साथ आधुनिकता मध्य वर्ग और उपन्यास से परिचित होंगे। आप इस इकाई के माध्यम से हिंदी साहित्य में उपन्यास सम्राट के नाम से प्रसिद्ध प्रेमचंद और उनके अमर उपन्यास गोदान के विषय में भी जान पाएंगे।

इकाई (यूनिट) 01- उपन्यास

- आधुनिकता, मध्यवर्ग और उपन्यास
- प्रेमचंद- गोदान

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 आधुनिकता

1.3 मध्यवर्ग और हिंदी उपन्यास

1.4 उपन्यास: अर्थ, परिभाषा, स्वरूप

1.4.1 उपन्यास के तत्व

1.4.2 हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा (संक्षिप्त)

1.5 गोदान: कथावस्तु

1.5.1 गोदान: चरित्र योजना

1.5.2 गोदान: भाषा शैली

1.5.3 गोदान: महाकाव्यात्मकता

1.5.4 गोदान: प्रतिपाद्य

1.6 सारांश

1.7 बोध प्रश्न/अभ्यासों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई दो भागों में विभक्त है। पहले भाग में आप आधुनिकता, मध्यवर्ग और उपन्यास का अध्ययन करेंगे। दूसरे भाग में कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' का अध्ययन- अनुशीलन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :-

- आधुनिकता की अवधारणा के सम्बंध में जान सकेंगे।
- मध्यवर्ग का आशय समझ सकेंगे
- हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग का चित्रण किस प्रकार हुआ है, यह जान सकेंगे
- 'गोदान' के लेखक प्रेमचंद के संक्षिप्त जीवन परिचय से अवगत हो सकेंगे
- गोदान की चरित्र योजना से परिचित हो सकेंगे।
- गोदान की भाषाशैली, प्रतिपाद्य, एवं महाकाव्यात्मकता का अध्ययन करेंगे।

1.1 प्रस्तावना :-

आपने स्नातक के पाठ्यक्रम में वृंदावनलाल वर्मा कृत उपन्यास झांसी की रानी का अध्ययन किया है। हमें पूरा विश्वास है कि अब आपमें उपन्यास वधा की अच्छी समझ विकसित हो चुकी है। अब आप परास्नातक में कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद के लोकप्रिय उपन्यास 'गोदान' का अध्ययन करने जा रहे हैं। जैसा कि इकाई के उद्देश्य से वदित है आप इकाई का अध्ययन दो भागों में करेंगे। 'गोदान' पढ़ने से पहले आप आधुनिकता, मध्यवर्ग और हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग, इन बिंदुओं पर विस्तार से अध्ययन करेंगे। तत्पश्चात् गोदान के विविध आयामों पर विस्तृत चर्चा करेंगे, जिससे आपमें विवेचनात्मक दृष्टि का विकास हो सके।

1.2 आधुनिकता :

'आधुनिकता' शब्द समय सापेक्ष अर्थ व्यक्त करता है। अभिप्राय यह है कि वर्तमान जीवन मूल्य प्राचीन जीवन मूल्यों की सापेक्षता में आधुनिक हैं जबकि भविष्य में यही वर्तमान जीवन मूल्य जो आधुनिक हैं, प्राचीन हो जाएंगे। विस्तृत: आधुनिकता की व्याख्या अतीत से जोड़कर ही की जा सकती है। अतीत से निरपेक्ष रहकर आधुनिकता की कोई व्याख्या नहीं हो सकती। आधुनिकता का मूल्य ऐतिहासिक दृष्टिकोण के साथ ही है। प्राचीन मूल्यों एवं ऐतिहासिक बोध का मानसिक प्रत्यक्षीकरण करके ही हम आधुनिकता की अवधारणा से परिचित हो सकते हैं। आधुनिक होना एक बौद्धिक अभिवृत्ति है। इसमें पारम्परिक विचारों, सद्धांतों, एवं सांस्कृतिक मूल्यों से परे हटते हुए विवेक, वैज्ञानिकता एवं तर्क के आधार पर चीजों को जानने समझने का प्रयास किया जाता है। विवेकयुक्त होना आधुनिक होने की पहचान है।

आधुनिकता के सम्बंध में कुछ प्रमुख विद्वानों के विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं जिससे इसे और अधिक स्पष्टता से समझा जा सके।

अंग्रेज समीक्षक जी.एस. फ्रेजर के अनुसार- "आधुनिकता को अपनी सुरक्षा के लिए अतीत से संबंध रखना चाहिए।"

दिनकर के शब्दों में कहें तो " आधुनिकता एक प्रक्रिया का नाम है। यह प्रक्रिया अंध विश्वास से बाहर निकलने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया नैतिकता से उदारता बनाने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया बुद्धवादी बनने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया धर्म के सही रूप तक पहुंचने की प्रक्रिया है।"

इसी क्रम में लक्ष्मीकांत वर्मा जी कहते हैं, " आधुनिकता एक ऐतिहासिक परिधि है जो एक मानसिक धरातल को कुछ नई उपलब्धियों के साथ काटती छाँटती है अथवा उसमें नए संदर्भ जोड़ती है और पुरानी को या ऐसों को जो सतत गतिशील नहीं रह पाते अपने से पृथक् भी करती है"।

प्रसद्ध समीक्षक डॉ. जगदीश गुप्त के अनुसार "आधुनिकता का मूल आधार मानवतावादी दृष्टि है। यह दृष्टि ही सुव्यवस्थित आधुनिक दृष्टिकोण है और मानव मुक्ति से किसी-न-किसी रूप में अवश्य जुड़ी होती है।"

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी जी आधुनिकता के सम्बंध में कहते हैं, "आधुनिकता एक जड़ स्थिति न होकर विकास की स्थिति है। उसकी प्रकृति सदैव गत्यात्मक रहती है। नवीन परिस्थितियों के संदर्भ में अपने आपका संस्कार ही आधुनिकता है। आधुनिकता एक दृष्टि है जो संस्कृति की ग्रहणशीलता तथा उसकी विकासोन्मुखता की परिचायक है इस लिए वह समूचे जीवन व्यवस्था को प्रभावित करती है"।

आधुनिकता के विषय में प्रसद्ध आलोचक बच्चन सिंह के अनुसार, " आधुनिक ज्ञान विज्ञान और टेक्नोलॉजी के फलस्वरूप उत्पन्न मानवीय स्थितियों का नया गैर रोमांटिक और अमथकीय साक्षात्कार आधुनिकता है"।

डॉ. गरिजा कुमार माथुर कहते हैं, "आधुनिकता परिवर्तित भावबोध की वह स्थिति है जिसका प्रादुर्भाव यांत्रिक तथा वैज्ञानिक विकास क्रम के वर्तमान बिंदु पर आकर हुआ है।"

आधुनिकता के सम्बन्ध में उपरोक्त वद्वानों के मत से अवगत होने के पश्चात निम्न निष्कर्ष निकलते हैं-

- 1- आधुनिकता एक दृष्टि है।
- 2- आधुनिकता का अर्थ समय सापेक्ष होता है।
- 3- आधुनिकता एक मूल्य है जो तार्किकता पर आधारित है।
- 4- संवेदना और अनुभूति का नयापन ही आधुनिकता है।
- 5- धर्म, दर्शन, साहित्य सभी के प्रति नवीन दृष्टिकोण का आवर्भाव ही आधुनिकता है।
- 6- आधुनिकता एक क्रियाशील सृजनात्मक चेतना है।
- 7- आधुनिकता एक गतिशील प्रक्रिया है, जो ववेक, तर्क और परीक्षण पर आधारित है।
- 8- आधुनिकता की व्याख्या अतीत की सापेक्षता में ही संभव है।
- 9- आधुनिकता का मूल आधार मानवतावादी दृष्टि है।
- 10- आधुनिकता वर्तमान के संदर्भ में वह सब वह बोध है जो भविष्योन्मुख होता है।

आधुनिकता के उदय की पृष्ठभूमि -

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य में आधुनिक काल का उदय लगभग संवत् 1900 व. (सन 1843) से माना है। प्रत्येक काल के उदय में तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का योगदान रहता है। 1857 में हुए भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ने देश में एक नई चेतना को जन्म दिया।

आधुनिकता के तत्त्व-

- 1 - मानवीयता

2- राजतंत्र के स्थान पर जनतंत्रीकरण को महत्व

3- वज्ञानवादी एवं भौतिकवादी वचारकों के प्रभावस्वरूप बौद्धिक जगत में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया।

4- न्याय, स्वाधीनता और मुक्ति की बात की गई।

5- अस्तित्व की खोज

वैज्ञानिक बुद्धवाद, तार्किकता, धर्मनिरपेक्षता, प्रगति की अवधारणा आदि 'आधुनिकता' के घटक तत्व हैं।

आधुनिकता के प्रभाव-

आधुनिक ज्ञान और वज्ञान के प्रतिष्ठित होने के बाद इसका सबसे पहला प्रभाव धर्म और परम्पराओं पर पड़ता है। पहले इन पर सवाल खड़े करना संभव नहीं था, अब धर्म को भी वज्ञान के प्रतिमानों को अपनाना पड़ रहा था। आधुनिकता ने एक औद्योगिक नगर सभ्यता को जन्म दिया था। इस सभ्यता ने एक ऐसी भीड़ को जन्म दिया जो क्षुद्र बाज़ार और रुचियों से युक्त होने के साथ साथ चेहरा वहीन भी था। आधुनिकता के सामने सबसे उलझा हुआ और कठिन सवाल यह है कि औद्योगिक विकास के कारण अनेक सुख-सुवधाओं की प्राप्ति के बावजूद मनुष्य एकाकी क्यों है ?

हिंदी साहित्य में आधुनिकता -

हिंदी साहित्य में आधुनिकता का प्रवेश लगभग 1960 के पश्चात ही माना जाता है। साहित्यिक क्षेत्र में अनिर्णयात्मक

आक्रामकता, वडंबना, यौन वकृति, प्रजातंत्र की खोज, अजनबीपन, उपेक्षा का भाव रचनाओं में प्रमुख स्वर हैं। साहित्य में 'आधुनिक' का अर्थ मध्यकाल से भन्नता है। मध्यकाल अपनी जड़ता, रूढ़िवादिता एवं अवरोध के कारण स्थिर हो गया था, उसमें एकरसता आ गई थी।

इसे व शष्ट एवं गत्यात्मक बनाने वाले मूल्य ही आधुनिक मूल्य हैं। हिंदी साहित्य में आधुनिकता के तत्व अज्ञेय की रचनाओं में राजकमल चौधरी की रचना- मुक्तिप्रसंग, कथावती में, श्रीकांत वर्मा - मगध, मायादर्पण, जलसाघर में, जगदीश चतुर्वेदी के- इतिहास में धूमिल की रचना- संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे, सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र, लीलाधर जगूड़ी- नाटक जारी है आदि रचनाओं में आधुनिकता के तत्व देखे जा सकते हैं।

1.3 मध्यवर्ग और उपन्यास

'मध्यवर्ग' जैसा क नामकरण से ही वदित है, यह वर्ग उच्च वर्ग एवं निम्नवर्ग के बीच का वर्ग है। मध्यवर्ग से आशय समाज के उस वर्ग से है जो न अमीर हैं न गरीब। मध्यवर्ग मार्क्सवादी दर्शन का शब्द है। यह शब्द अंग्रेजी के 'Middle Class' शब्द का पर्यायवाची है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में मध्यवर्ग का उदय 19 सदी में हुए औद्योगिक क्रांति से माना जाता है। "हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली" पुस्तक की मानें तो यह पूंजीवादी व्यवस्था की देन है। इस वर्ग के लोगों में पर्याप्त आंतरिक भन्नता होती है, इसके बकवजूद इनका व शष्ट चरित्र होता है। मार्क्सवाद की दृष्टि में ये दुलमुल नीति वाले और अवसरवादी होते हैं।" यद्यपि कसी भी क्रांति में ये अग्रदूत नहीं होते हैं कंतु वैचारिक आधार में इनकी ऐतिहासिक भूमिका होती है।

वस्तुतः पूंजीवादी व्यवस्था में दो मुख्य वर्ग होते हैं बुर्जुआ और सर्वहारा। लेकिन इनके बीच एक अन्य वर्ग भी होता है जिसे मध्यवर्ग कहते हैं। इस वर्ग को समाज की सत्ता संरचना में तो कोई स्थान नहीं मिलता कन्तु उसके लाभ उसे अवश्य मिलते हैं। इसके वपरीत सर्वहारा वर्ग को कोई भी सामाजिक लाभ नहीं मिलता। इन्हीं फायदों के कारण मध्यवर्ग सर्वहारा वर्ग के साथ अपने हितों को नहीं देख पाता। फलस्वरूप सत्ता में सर्वहारा वर्ग की स्थिति कमजोर रहती है और बुर्जुआ वर्ग की स्थिति मजबूत बनी रहती है। 19 वीं सदी में हुए औद्योगिक

क्रांति के फलस्वरूप बुर्जुआ और सर्वहारा वर्ग का उदय हुआ इन्हीं के साथ मध्यवर्ग भी अस्तित्व में आया। इसके पूर्व मध्यवर्ग का कोई इतिहास नहीं मलता।

मानक हिंदीकोष के अनुसार मध्यवर्ग " समाज के आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से वभाजित वर्गों (उच्च, मध्य और निम्न) में से बुद्धिप्रधान वर्ग जो सामान्य आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति वाला समझा जाता है और उच्चवर्ग (धनी) और निम्नवर्ग (श्रमिक) के बीच का माना जाता ।

स्पष्ट है मध्यवर्ग का अस्तित्व स्वतः ही समाज के श्रेणीकरण की ओर संकेत करता है"।

वस्तुतः मध्यवर्ग का अपना अलग अस्तित्व है। यह वर्ग उच्च शिक्षित, ज्यादातर महानगरों में रहने वाला अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यह वर्ग सबसे अधिक आबादी वाला होने के साथ-साथ बौद्धिक एवं उत्पादक वर्ग भी है। इस वर्ग के अंतर्गत किसी विशिष्ट जाति-धर्म के लोग नहीं आते हैं अपितु विशिष्ट आर्थिक स्तर के लोग आते हैं। आज जितनी भी क्रांतियाँ हो रही हैं उसके मूल में मध्यवर्ग ही है। यह वर्ग अपनी प्रगति के साथ राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

मध्यवर्ग और हिंदी उपन्यास -

उपन्यास साहित्य की एक कला स्रष्टा है, जिसमें उपन्यासकार जीवन के विविध रंगों को अपनी रचनात्मकता से इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि पाठक को उसमें महाकाव्य सा आस्वाद मिलता है। हिंदी साहित्य में ऐसे अनेक उपन्यास लिखे गए हैं जिन्हें महाकाव्यात्मक उपन्यास कहा गया है, किन्तु यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि यह महाकाव्यात्मकता न तो उच्चवर्ग की है न निम्नवर्ग की अपितु 'मध्यवर्ग' की है। डॉ. हरदयाल उपन्यास के संदर्भ में लिखते हैं - "वस्तुतः उपन्यास मध्यवर्ग का ही महाकाव्य या प्रबंधकाव्य है।"

हिंदी उपन्यास का उदय आधुनिक युग में हुआ। 19वीं सदी में उपन्यास विधा अपने प्रारम्भिक रूप में थी। प्रथम स्तर पर अंग्रेजी तथा बंगला उपन्यासों का अनुवाद होता रहा। हिंदी उपन्यास अनूदित, मौलिक, ऐतिहासिकसामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आंचलिक आदि अनेक प्रकार के उपन्यासों की

गौरवशाली यात्रा पर है और निरंतर अग्रसर है। गौरतलब बात यह है कि प्रारम्भ से लेकर अब तक उपन्यासों के केंद्र में प्रायः मध्यवर्ग ही रहा है। आज उपन्यास व्यष्टिवादी हों या समष्टिवादी बहुधा सभी का केंद्र मध्यवर्ग ही है। विशेष बात यह भी है कि उपन्यास के साथ मध्यवर्ग का दोहरा संबंध है। उपन्यास का रचनाकार होने के साथ-साथ मध्यवर्ग ही उसका पाठक एवं आस्वादक भी है। भाषा कोई भी हो उसके उपन्यास का उद्भव और विकास मध्यवर्ग के उद्भव और विकास से जुड़ा हुआ है। निम्नवर्ग अपने शारीरिक श्रम से जीविकोपार्जन में ही संलग्न रहता है। रोजी-रोटी की चिंता से उसे इतना अवकाश ही नहीं मिलता कि वह साहित्य कला आदि में सृजन कर सके या आस्वादन की क्षमता ही विकसित कर सके। यदि निम्नवर्ग का कोई व्यक्ति अपने परिश्रम से इस योग्य हो जाता है तो उसका वर्ग चरित्र बदल जाता है। उसकी श्रेणी परिवर्तित होकर मध्यवर्ग की हो जाती है। वह मध्यवर्ग का व्यक्ति हो जाता है। वहीं दूसरी ओर उच्चवर्ग प्रायः अपने भोग विलास में ही तल्लीन रहता है। इन कारणों से ही मध्यवर्ग स्वाभाविक रूप से कला, साहित्य, संस्कृति का संवाहक बन जाता है। उसके पास परिष्कृत अभिरुचि एवं सृजन की क्षमता होती है, साहित्य और कला के आस्वादन का समय भी होता है। इन्हीं कारणों से हमारे देश के विभिन्न भाषाओं का साहित्य प्रायः मध्यवर्ग से सम्बंधित है।

हिंदी साहित्य में ज्यादातर उपन्यासकार मध्यवर्ग के हैं अतएव इन्होंने मध्यवर्ग को अधिक सटीक एवं प्रभावी ढंग से कलमबद्ध किया है। इसके मूल में है उनका व्यापक और समृद्ध जीवन अनुभव। हिंदी कथा सम्राट प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में 'मध्यवर्ग' को पूरी समग्रता के साथ अभिव्यक्त किया है। डॉ. सुरेश बत्रा लिखते हैं- 'प्रेमचंद पहले ऐसे साहित्यकार थे जिन्होंने राष्ट्रव्यापी जनचेतना और समाज सुधारवादी अवधारणा को व्यापक आवाज देने के लिए समाज के शोषित वर्ग की वास्तविक स्थिति को प्रकट किया है। हिंदी उपन्यासों में 'मध्यवर्ग' चित्रण परम्परा का ववेचन करते समय प्रेमचंद जी को केंद्र मानकर इस परंपरा को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

(1) प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग

(2) प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग

(3) प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग

प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग :-

अंग्रेजी शिक्षा एवं उसके प्रचार-प्रसार का प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा। फलस्वरूप व भन्न साहित्यिक वधाओं का सृजन हुआ। हिंदी उपन्यास का जन्म भी अंग्रेजी शासन की ही देन है। प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी एवं बंगला के उपन्यासों के अनुवाद हुए। अंग्रेजी और बांग्ला साहित्य से प्रेरित होकर ही हिंदी में भी मौलिक उपन्यास लेखन प्रारम्भ हुआ। प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों में मध्यवर्ग अपने शैशवकाल में ही पाया जाता है। हिंदी उपन्यासों में सर्वप्रथम श्रद्धाराम फुल्लौरी द्वारा 'लखत भाग्यवती' (1877) मध्यवर्गीय चित्रण परम्परा का प्रथम उपन्यास है। इसमें मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण है। 'भाग्यवती' उपन्यास की नायिका है जो मध्यवर्ग से संबंध रखती है। पति से अनबन होने की स्थिति में व्यापार करके जीवनयापन करती है। डॉ. अर्जुन के अनुसार- "फुल्लौरी के इस उपन्यास में मध्यवर्ग के पढ़े-लिखे व्यक्तियों ने सामाजिक चेतना का संचार किया है। तत्कालीन सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन को समझने के लिए इस उपन्यास का अपना महत्व है।

लाला श्रीनिवासदास ने अपने उपन्यास 'परीक्षागुरु' (1882) में उन्नीसवीं सदी में एक सत हो रहे मध्यमवर्गीय समाज को रेखांकित किया है। इस उपन्यास में भारतीय मध्यमवर्गीय समाज में बढ़ रहे अंग्रेजी शिक्षा का आकर्षण, युवकों की वन्यासी प्रवृत्ति आडम्बर प्रयत्नात्मकता, झूठी शान-शौकत आदि का चित्रण नायक मदन मोहन के द्वारा किया है। 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' में भारतेन्दु ने भी मध्यवर्ग का चित्रण किया है। प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों में मनोरंजक, तिलस्मी, ऐय्यारी, जासूसी, एवं ऐतिहासिक उपन्यास लिखे इसमें देवकीनंदन खत्री, कशोरीलाल गोस्वामी, वृंदावनलाल वर्मा, गोपालराम गहमरी आदि। इन्होंने अपने उपन्यासों में मध्यवर्ग का चित्रण तो नहीं

कया ले कन मध्यवर्गीय पाठक को अपने उपन्यासों की ओर आकर्षित जरूर कया। इसी क्रम में बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित उपन्यास 'सौ अजान एक सुजान' तथा 'नूतन ब्रह्मचारी' का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके उपन्यास मध्यमवर्गीय समाज के आदर्श स्वरूप के संवाहक हैं। इन उपन्यासों में आदम्बर प्रयत्ना, खुशामदी प्रवृत्त के साथ आदर्श संस्कारों का भी चित्रण कया है। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने अपने उपन्यास 'ठेठ हिंदी का ठाठ' तथा 'अध खला फूल' में तत्कालीन मध्यवर्गीय समाज की ववाह समस्या, प्रेम समस्या, नारी समस्या, सामाजिक कुरीतियों का चित्रण कया है। लज्जाराम मेहता ने 'धूर्तर सकलाल', 'स्वतंत्र रमा परतंत्र लक्ष्मी', हिन्दू गृहस्थ, आदर्श दंपति आदि सामाजिक उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण कया है।

इस प्रकार हमने देखा क कस प्रकार हिंदी उपन्यासकारों ने अपने आरंभक काल में ही मध्यवर्ग को अपने सृजन के केंद्र में रखा। प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यासों में भले ही मध्यवर्ग अपने शैशवकाल में रहा हो कन्तु आगामी उपन्यासकारों के लए एक ठोस आधारभूम प्रदान की है।

प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग-

हिंदी उपन्यास जगत में जिस समय प्रेमचंद का पदार्पण हुआ वह समय अपने पूर्ववर्ती समय से सर्वथा भन्न हो चुका था। इस समय का उपन्यास कल्पना की उड़ान तथा मनोरंजन को छोड़कर सामान्य जनजीवन से जुड़ चुका था। प्रेमचंद ने साहित्य को महलों तथा राजदरबारों से निकलकर झोपड़ों, आम-आदमियों के घरों तक पहुंचाया। प्रेमचंद का जीवन बहुआयामी अनुभवों का दस्तावेज है ऐसा उनके उपन्यासों से प्रतीत होता है। उनके उपन्यास सेवासदन (1918) से लेकर गोदान (1936) तक के श्रेष्ठ उपन्यासों में भारतीय समाज के सभी वर्गों का यथार्थ चित्रण मलता है। प्रेमचंद के साहित्य में चाहे वह सेवासदन हो वरदान, प्रेमाश्रम, रंगभूम, प्रतिज्ञा, कायाकल्प, निर्मला, गबन हो सभी उपन्यासों में मध्यवर्ग के सरोकार उकेरे गए हैं। 'गोदान' प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ रचना है। उपन्यास का नायक होरी एक कसान है। इस उपन्यास में रिश्वतखोर दरोगा और बेदखली

कलेक्टर, तहसीलदार, जमींदार, रायसाहब, प्रोफेसर मेहता, मालती, मस्टर खन्ना आदि पात्र मध्यवर्ग के ही हैं।

प्रेमचंद युग में प्रेमचंद के अतिरिक्त जयशंकर प्रसाद ने अपने उपन्यास 'कंकाल' और तितली में मध्यवर्गीय प्रवृत्तियों को स्थान दिया है। 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' ने अलका, कुल्लीभाट, निरुपमा आदि उपन्यासों में मध्यवर्ग का चित्रण किया है। वशवम्भरनाथ कौशिक ने भी माँ और भखरिणी में मध्यवर्ग की स्वार्थी दृष्टि, आर्थिक संकट, चरित्र हीनता का चित्रण किया है। वृंदावनलाल वर्मा ने अपने सामाजिक उपन्यास लगन, संगम, कुण्डलीचक्र, तथा प्रेम की भेंट और माटी हो गई सोना आदि में मध्यवर्ग की मजबूरी, गरता आर्थिक स्तर, खंडित व्यक्तित्व का चित्रण किया है।

प्रेमचंदयुगीन उपन्यासकारों में पांडेय बेचन शर्मा उग्र ने समाज के घृणित नग्न पक्ष को साहित्य में अभिव्यक्त किया। उन्होंने दिल्ली का दलाल, बुधुआ की बेटी, सरकार तुम्हारी आँखों में, चंद हसीनों के खतूत, आदि में सामाजिक नग्नता को उद्धृत किया तो इन्हीं की परंपरा के उपन्यासकार ऋषभचरण जैन ने दिल्ली का व्यभिचार, भाई, चाँदनी रात, तपोभूमि, वेश्यापुत्र आदि उपन्यासों में मध्यवर्ग की वक्तव्यों, वडंबनाओं, नैतिकता, वेश्या समस्या, आदि अन्य समस्याओं का चित्रण किया है। इसी क्रम में भगवती प्रसाद वाजपेयी, प्रतापनारायण श्रीवास्तव ने अपने अपने उपन्यासों में मध्यवर्ग की समस्याओं सरोकारों का चित्रण किया है।

हमने देखा कि प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यासकारों ने मध्यवर्गीय जीवन को बड़ी सजगता से चित्रित किया है। प्रेमचंद का युग सामाजिक संक्रमण का युग था। इस काल में मध्यवर्ग एक ओर तो नए नए आचार वचार, सभ्यताओं को अपनाने लगा था तो वहीं दूसरी तरह पारम्परिक रीति रिवाजों, रूढ़ियों में भी जकड़ा हुआ था।

प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग :-

इस काल के उपन्यासों में भारतीय समाज के बदलते स्वरूप का चित्रण मिलता है। भारतीय समाज में व्याप्त क्रांतिकारी आंदोलन, सामाजिक उथल पुथल, देश विभाजन आदि परिस्थितियों ने भारतीय समाज एवं साहित्य को बहुत गहरे तक प्रभावित किया। इन प्रभावों से भारतीय मध्यवर्ग भी अछूता नहीं रह सका। भारतीय मध्यवर्ग वक सत होने के साथ साथ व्यक्तिवादी होता गया। प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास का स्वर भी व्यक्तिवादी, मनोवैज्ञानिक होने लगा। जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय और डॉ. देवराज आदि उपन्यासकारों ने मध्यवर्गीय व्यक्ति की मनोवैज्ञानिकता और द्वंद को बहुत गहराई से व्यक्त किया है। जिसमें जैनेन्द्र का त्यागपत्र, सुनीता, अज्ञेय का शेखर एक जीवनी, अपने अपने अजनबी, नदी के द्वीप, इलाचंद्र जोशी का सन्यासी, जहाज का पंछी, प्रेत और छाया आदि प्रमुख हैं। जिनमें मध्यवर्ग के अर्थाभाव, प्रेम समस्या, मानसिक दुर्बलता, अनैतिक संबंध, यौन लप्सा, कुंठा घुटन आदि को अभिव्यक्ति दी गई है। भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास पतन, चत्रलेखा, टेढ़े मेढ़े रास्ते, भूले-बिसरे चत्र, आ खरी दांव में भी मध्यवर्गीय कथानक का निर्वाह किया गया है। मार्क्सवादी उपन्यासकार यशपाल ने 'दादा कामरेड', पार्टी कामरेड, देशद्रोही, मनुष्य के रूप, झूठा सच, आदि उपन्यासों में इस वर्ग की आर्थिक राजनीतिक और सामाजिक स्थिति का अंकन किया है।

इसी क्रम में रांगेय राघव, नागार्जुन, अमृत राय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता आदि ने अपने उपन्यासों द्वारा मध्यवर्गीय पीड़ा, संत्रास, अलगावबोध, टूटन, घुटन, आदि का सूक्ष्म अंकन किया है। देश आजाद होने के पश्चात उपन्यासकारों की एक नई पीढ़ी आयी। इस पीढ़ी के प्रायः उपन्यासकार शहरी मध्यवर्ग से रहे जिससे वे अपने उपन्यासों में शहरी मध्यवर्गीय जीवन और उसकी समस्याओं का चित्रण करने लगे। इन उपन्यासकारों में मुक्तिबोध, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, लक्ष्मीकांत इत्यादि हैं। आधुनिक

उपन्यासकारों ने बदलते महानगरीय जीवन, दिशाहीनता, टूटते मानवीय मूल्य, बदलते सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक मूल्यों आदि को यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किया है।

नई पीढ़ी के उपन्यासकारों में महिला लेखिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें मन्नू भंडारी, ममता का लया, कृष्णा सोबती, उषा प्रयम्बदा, गीतांजलि श्री आदि हैं। इन लेखिकाओं ने मध्यवर्गीय स्त्री जीवन को अपने उपन्यासों का केंद्र बनाया।

उपर्युक्त ववेचन से स्पष्ट है कि हिंदी उपन्यास अपने आरंभिक काल से लेकर आधुनिक काल तक बहुधा मध्यवर्गीय जीवन एवं उसके सरोकारों के केंद्र में रहा। हम कह सकते हैं कि हिंदी उपन्यास का इतिहास मध्यवर्ग का इतिहास है। आज के उपन्यासों की अंतर्वस्तु इस बात का प्रमाण है कि भारतीय समाज के मध्यवर्ग में दूरगामी और मौलिक परिवर्तन हो रहे हैं। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग का भविष्य उज्ज्वल है।

1.4 उपन्यास: अर्थ, परिभाषा व स्वरूप

उपन्यास शब्द सुनने पर या उपन्यास के बारे में पढ़ते हुए जो प्रश्न हमारे विचार में आता है वह यह कि आखिर उपन्यास है क्या? उपन्यास शब्द दो - शब्दों 'उप' + 'न्यास' से मिलकर बना है 'उप' का अर्थ 'समीप' और 'न्यास' का अर्थ है 'रखना'। इस प्रकार उपन्यास का शब्दगत अर्थ है समीप रखना। हिंदी साहित्यकोश के खंड एक में उपन्यास शब्द का अर्थ इस तरह बताया गया है - “यह शब्द उप - समीप तथा न्यास - धातु के योग से बना है जिसका अर्थ हुआ (मनुष्य) निकट रखी हुई वस्तु। अर्थात् वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिंब है, इसमें हमारी ही कथा हमारी ही भाषा में कही गई है”। उपन्यास को अंग्रेजी में 'नॉवेल' (Novel) गुजराती में 'नवलकथा' तथा मराठी में 'कादंबरी' नाम से जानते हैं। गोपाल राय ने 'हिंदी उपन्यास का इतिहास'

पुस्तक में लिखा है - “हिंदी में नॉवेल के अर्थ में उपन्यास पद का प्रथम प्रयोग 1875 ईस्वी में हुआ।”

न्यू इंडिया डक्शनरी में नॉवेल की परिभाषा इस प्रकार दी गई है- “नॉवेल वह वस्तुतः गद्यात्मक आख्यान प्रधान रचना है जिसमें वास्तविक जीवन का अनुकरण करने वाली घटनाओं और पात्रों का एक व्यवस्थित कथावस्तु के रूप में वर्णन रहता है।”

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने उपन्यास को वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा मानते हुए लिखा है “मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्र मात्र समझता हूँ मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।”

क्षेमेन्द्र सुमन के अनुसार -“उपन्यास मानव जीवन की आंतरिक और बाह्य परिस्थितियों का उसके मन के संघर्ष-वर्घर्ष का उसके चारों ओर के वातावरण और समाज का काल्पनिक चित्र है, किंतु काल्पनिक होता हुआ भी वह यथार्थ है। उसमें जीवन के सत्य की अभिव्यक्ति होती है।”

भगीरथ मश्र के अनुसार “युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण झांकी प्रस्तुत करने वाला गद्य काव्य उपन्यास कहलाता है।”

डॉ.जे.बी. क्रस्टले ने लिखा-“उपन्यास जीवन का विशाल दर्पण है और इसका विस्तार साहित्य के किसी भी रूप से बड़ा है।”

रोल फ्रांस के अनुसार “उपन्यास केवल काल्पनिक करते नहीं है वरन् वह मानव जीवन का गद्य है ऐसी प्रथम कला जिसने संपूर्ण मानव को लेने और उसे अभिव्यंजना देने का प्रयास किया है।”

डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है-“उपन्यास आधुनिक युग की देन है। नए गद्य के प्रचार के साथ-साथ उपन्यास प्रचार हुआ है। आधुनिक उपन्यास केवल कथा मात्र नहीं है और

पुरानी कथाओं और आख्यायिकाओं की भांति कथा सूत्र का बहाना लेकर उपमाओं रूपकों दीपकों और श्लेशों की छठा और सरस पदों में गुम्फित पदावली की छटा दिखाने का कौशल भी नहीं है। यह आधुनिक वैयक्तिकतावादी दृष्टिकोण का परिणाम है।”

वस्तुतः उपन्यास वर्तमान युग की लोक प्रिय साहित्यिक वधा है। वर्तमान जीवन सूत्र यथार्थता, स्पष्टता, मांसलता, बौद्धिकता आदि हैं। इन्हीं सूत्रों के सार से उपन्यास का स्वरूप गठित हुआ है। वर्तमान युग चेतना इतनी गुम्फित और असाधारण हो गई है कि इसे साहित्य के किसी अन्य रूप में इतने आकर्षक और सहज रूप में प्रस्तुत करना दुष्कर है जितनी सहजता के साथ उपन्यास में चित्रित करता है। उपन्यास पूरी संभावना और सजीवता के साथ उसे उपस्थित करता है। इसी लिए उपन्यास को आधुनिक युग का महाकाव्य कहा जाता है।

1.4.1 उपन्यास के तत्व

उपन्यासके कुछ निश्चित उपादान/तत्व होते हैं जिनके संघात से रचना निर्मित होती है।

उपन्यास के तत्व हैं -

कथानक और कथावस्तु

चरित्र - चित्रण

परिवेश

संरचना - शिल्प

प्रतिपाद्य

यह तत्व ही वह कसौटी हैं जिसका आधार लेकर किसी रचना (उपन्यास) के गुण दोष का ववेचन किया जाता है।

कथानक का अर्थ है वह ढांचा जो घटनाओं चरित्र तथा वर्णनों को आपस में बांधता है। यह अंग्रेजी शब्द प्लॉट का हिंदी अनुवाद है। एक अच्छे कथानक में अनुपात गति और संबंध

निर्वाह का ध्यान रखा जाता है अनुपात का अर्थ है ना तो घटना, वर्णन और चरित्र इतने ज्यादा हों क पाठक उनके साथ संगति ना बैठ सके और ना ही इनका वर्णन बहुत कम हो की उपन्यास के आस्वादन में समस्या होने लगे। गति का अर्थ यह है क उपन्यास पढ़ते समय ना तो अनावश्यक वराम बीच में आए जिससे पाठक को बोरियत महसूस होने लगे, न ही घटनाओं के घटने की गति इतनी तीव्र हो क पाठक कथानक के साथ तादात्म्य न बना सके। व भन्न चरित्रों और घटनाओं को ठीक तरीके से आपस में जोड़ देना, कुशल संबंध निर्वाह का उदाहरण है। कुछ समीक्षकों ने गोदान उपन्यास की शहरी और ग्रामीण कथा को असम्बद्ध बताया है। उपन्यास में एक से अधिक कथाएं होने पर प्रमुख कथा को आधिकारिक कथा जब क शेष कथाओं को प्रासंगिक या अवान्तर कथा कहते हैं। कथानक में यह गुण होना चाहिए क सभी प्रासंगिक कथाएं आधिकारिक कथा को आगे बढ़ाने में सहायक हों।

कथावस्तु का अर्थ है की कहानी की वषय वस्तु या सामग्री कहां से ली गई है? कथावस्तु का स्रोत इतिहास भी हो सकता है, वर्तमान भी और कल्पना भी। इस आधार पर कथावस्तु को प्रख्यात, उत्पाद्य तथा मस में वर्गीकृत किया जाता है। प्रख्यात का अर्थ है कसी प्रसिद्ध कथा को आधार बना लेना, उत्पाद्य का अर्थ है कल्पना से नई कथा वस्तु बनाना तथा मस का अर्थ है प्रसिद्ध तथा काल्पनिक तत्वों को मिलाकर कथा का निर्माण करना। उपन्यास की कथा ठोस एवं श्रीखलाबद्ध होनी चाहिए अनावश्यक प्रसंग से बचना चाहिए। कथावस्तु विश्वसनीय और प्रामाणिक होनी चाहिए। उदाहरण के लिए गोदान की कथावस्तु अत्यंत प्रामाणिक और विश्वसनीय है क्योंकि वह जीवन के यथार्थ पर आधारित है इसके विपरीत देवकीनंदन खत्री के उपन्यास की कथावस्तु विश्वसनीय है क्योंकि वह अतिशयोक्तिपूर्ण कल्पनाओं से भरी है। पहले के उपन्यासों में कल्पना का अधिक स्थान होता था किंतु आज

यथार्थ जीवन की घटनाओं को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है पहले कथावस्तु का विकास वर्णन द्वारा होता था, कंतु आज कथा कसी भी रूप में आरंभ हो सकती है।

कोई भी रचनाकार यदि कथा के माध्यम से अपनी बात कहना चाहता है तो उसे कुछ पात्र या चरित्र गढ़ने पड़ते हैं जिससे उनकी क्रियाओं- प्रति क्रियाओं के माध्यम से अपने भाव का संप्रेषण कर सके। जिन व्यक्तियों के जीवन की घटना को लेकर कथा का आयोजन किया जाता है वह उपन्यास के पात्र कहलाते हैं। सामान्यतः उपन्यास में एक या दो मुख्य पात्र होते हैं अन्य पात्र मुख्य पात्र के चरित्र को सशक्त बनाने के लिए रचे जाते हैं। उदाहरण के लिए गोदान में धनिया गोबर स लया, झुनिया आदि पात्र होरी के चरित्र को संपूर्ण रूप से वक सत एवं सशक्त बनाने के लिए रचे गए हैं। अच्छे चरित्र योजना में चरित्र के सर्फ बाहरी पक्षों का वर्णन नहीं होता बल्कि लेखक उनके मन के भीतर प्र वष्ट होकर मनोवैज्ञानिक स्थितियों का भी सूक्ष्म अंकन करता है। उदाहरण के लिए प्रेमचंद ने अपने चरित्र के मनोवैज्ञानिक पक्षों के वश्लेषण पर अत्य धक बल दिया है जिसके कारण उनके चरित्र अत्यंत सजीव बन पड़े हैं।

परिवेश के अंतर्गत देशकाल वातावरण अर्थात वह स्थान और समय आता है जहां कहानी की घटना घटित हुई है। उपन्यासकार के लिए यह आवश्यक है क वह देश एवं काल का यथार्थ रूप प्रस्तुत करे। यदि ग्राम की कथा है तो पूरा परिवेश ग्रामीण होना चाहिए। समर्थ लेखक देश और काल की निश्चित सूचनाएं ना देकर तत्कालीन परिस्थितिया दिखाते हैं ता क रचना उसे काल के साथ-साथ वर्तमान काल में भी प्रासंगक बनी रहे। उदाहरण के लिए प्रेमचंद ने गोदान में एक भी काल संबंधी सूचना ति थ या वर्ष के साथ नहीं दी और देश संबंधी सूचनाओं में लखनऊ शहर के अतिरिक्त कसी भी शहर का नाम देने से बचे हैं। इस लिए गोदान अपने देश और काल का अतिक्रमण कर पता है और महाकाव्यात्मक उपन्यास कहलाता है।

निश्चित तौर पर सूचनाओं के न होने पर भी प्रेमचंद ने तत्कालीन परिस्थितियों का इतना सघन चित्रण गोदान में किया है कि 1936 का अवध आंखों के सामने तैरने लगता है। वातावरण का अर्थ सिर्फ प्राकृतिक वातावरण से नहीं बल्कि सामाजिक आर्थिक राजनीतिक वातावरण से भी है। समर्थ रचनाकार रचना में सूचित समय के परिवेश को इतना जीवंत बना देता है कि पाठक स्वयं को इसी वातावरण के भीतर महसूस करने लगता है। गोदान में प्रेमचंद ने ग्रामीण परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है।

संरचना शल्प

सामान्यतः शैली और शल्प को एक मान लिया जाता है, जबकि दोनों भिन्न हैं। शल्प किसी भी रचना के स्वरूप और संगठन का अनिवार्य तत्त्व है। विषय वस्तु, कथानक, उद्देश्य आदि के विकास के आंतरिक तत्वों के संबंध में जानकारी प्राप्त करने हेतु, शल्प का विश्लेषण आवश्यक हो जाता है। जहां कथानक से क्या पेश किया गया की जानकारी मिलती है वहीं शल्प से विषय-वस्तु को किस तरह से पेश किया गया की जानकारी प्राप्त होती है। शल्प को विषय वस्तु प्रस्तुत करने की तकनीक कहा जा सकता है।

शैली

शैली का संबंध रचना लिखने के तरीके से है। प्रत्येक उपन्यासकार अपने तरीके से कथा को प्रस्तुत करता है जिसे हम शैली के नाम से जानते हैं। विषय वस्तु के अनुसार एक ही उपन्यासकार की अलग-अलग रचनाओं की शैली परिवर्तित हो जाती है।

संवाद

रचना में पात्रों के बीच आपसी वार्तालाप को संवाद कहते हैं। उपन्यास में यदि चरित्रों के मध्य सीधी बातचीत कराई जाए तो प्रभाव क्षमता बढ़ जाती है क्योंकि पाठक सीधे चरित्रों से

रूबरू होता है। संवादों के माध्यम से पात्रों के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है तथा उपन्यास की कथा आगे बढ़ती है। साथ ही हम पात्रों के वचार भी संवाद के माध्यम से जान सकते हैं। अच्छी संवाद योजना वहां होती है जहां संवाद छोटे-छोटे कैसे हुए चुस्त और गतिशील हैं उनका गतिशील होना जरूरी है ताक एक बात से दूसरी बात निकलती जाए।

भाषा

उपन्यासकार भाषा के माध्यम से रचना में सजीवता लाता है। भाषा के प्रयोग से पात्र सजीव एवं स्वाभाविक लगते हैं। यदि उपन्यासकार अपना वचार रख रहा हो तो उसकी अपनी भाषा होनी चाहिए। कंतु पात्रों के संवादों की भाषा पात्रों के मनः स्थिति के अनुरूप होनी चाहिए। प्रायः सरल एवं बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। उदाहरण के लए गोदान के पात्र अक्सर अपने चरित्र के अनुकूल भाषा बोलते हैं जिससे इसमें स्वाभाविकता की रक्षा हुई है।

प्रतिपाद्य

प्रतिपाद्य से आशय है क रचनाकार ने कस प्रयोजन से सृजन किया है अर्थात् वह रचना के माध्यम से कस प्रयोजन की उपलब्धि करना चाहता है। यह उद्देश्य सामान्यतः कसी वचारधारा या आदर्श या नैतिक मूल्य की स्थापना करना होता है। सफल रचनाकार उद्देश्य को उपदेश की तरह थोपता नहीं बल्कि रचना के भीतर इस तरह घुला- मला देता है क वह पाठक के हृदय को प्रभावित करने के साथ ही अलग से चपका हुआ भी नजर नहीं आता। 1950 के बाद साहित्य में उद्देश्य का महत्व कम हुआ है। यथार्थ इतना सघन हो गया है क अधिकांश लेखक यथार्थ का वर्णन करना चाहते हैं; अलग से उद्देश्य लेकर नहीं चलते इसी स्थिति को कुछ लोगों की भाषा में 'उद्देश्य का टूटना' कहते हैं, जब क अन्य के अनुसार परिवर्तन सिर्फ इतना हुआ है क आज के लेखक उद्देश्य के तौर पर यथार्थ के भीतर छिपी वद्रूपताओं को उभारकर पाठक को उनसे लड़ने के लए तैयार करना चाहते हैं।

1.4.2 हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा:-

अभी तक के अध्ययन में आप उपन्यास के अर्थ परिभाषा स्वरूप और तत्त्व को समझ चुके हैं। अब आप हिंदी में उपन्यास वधा की विकास यात्रा का अध्ययन करेंगे।

आप जान चुके हैं कि उपन्यास आधुनिक गद्य साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय तथा सशक्त वधा है। हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा को सामान्यतः तीन चरणों में विभाजित किया जाता है -

- प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यास
- प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यास
- प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास

प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यास

1882 से लगभग 1916 ई तक के युग को हिंदी उपन्यास में प्रेमचंद पूर्व युग के नाम से जाना जाता है। यह हिंदी उपन्यास के विकास का आरंभक काल है जहां मध्यकाल के आदर्शवाद तथा रोमानियत के तत्त्व धीरे-धीरे खत्म हो रहे थे और यथार्थवाद के तत्त्व बढ़ रहे थे। इस युग की वास्तविक भूमिका एक पृष्ठभूमि के रूप में है जिसने परिपक्व उपन्यास लेखन को आधार प्रदान किया। इस समय तीन प्रकार के उपन्यास लिखे गए-

सुधारवादी उपन्यास

मनोरंजन परक उपन्यास

ऐतिहासिक उपन्यास

पहले प्रकार के उपन्यास मूलतः धर्म सुधार तथा नवजागरण आंदोलन की प्रेरणा से लिखे गए। भारतेन्दु मंडल के कुछ लेखक व श्रद्धा राम फुलौरी जैसे तत्कालीन लेखक इस वर्ग में शामिल हैं। इन्होंने सांस्कृतिक सामाजिक पतन व उससे बचाव के उपाय पर काफी कुछ

लखा। इसके अतिरिक्त भारतीय नारी व हिंदू जीवन शैली जैसे वषय इन उपन्यासों में प्रमुख रहे। इन रचनाओं में यथार्थवाद का तत्व कम है और आदर्श व उपदेश के तत्व हावी हैं। औपन्यासक संरचना की दृष्टि से इसका महत्व बहुत अधिक नहीं है। इसके कुछ उदाहरण हैं-

लाला श्रीनिवास दास - परीक्षा गुरु

श्रद्धा राम फुलौरी -भाग्यवती

राधा कृष्ण दास - निस्साय हिंदू

बालकृष्ण भट्ट - सौ अजान एक सुजान

मनोरंजनपरक उपन्यास में दो प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं- तिलस्मी - ऐयारी उपन्यास
जासूसी उपन्यास

इस प्रकार के कुछ उपन्यास इस प्रकार हैं

देवीकी नंदन खत्री - चंद्रकांता, चंद्रकांता संतति

कशोरी लाल गोस्वामी - तिलस्मी महल

गोपालराम गहमरी -.सरकटी लाश, जासूस पर जासूसी

इस युग में तीसरे प्रकार के उपन्यास ऐतिहासिक वषय वस्तु पर केंद्रित थे। यहां इतिहास का प्रयोग मुख्यतः दो कारण से हुआ - कुछ लेखकों ने नवजागरण की चेतना से युक्त होकर इतिहास के गौरवशालक प्रसंगों का प्रस्तुतीकरण किया तो कुछ ने इतिहास का प्रयोग सिर्फ नारी व पुरुष के रोमांस को दिखाने के लिए आवरण की तरह किया। इनका महत्व सिर्फ इस लिए है कि यह उपन्यास के इतिहास के प्रारंभिक काल में रचे गए ना कि इस लिए कि यह विशेष गुणवत्ता धारण करते हैं। ऐसे कुछ उपन्यास इस प्रकार हैं -

कशोरी लाल गोस्वामी - तारा, रजिया बेगम, आदर्श रमणी

मश्रबंधु - वीरम ण

बाबू ब्रजनंदन सहाय - लालचीन

प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यास

1916 से 1936 ई तक का समय हिंदी उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यास के नाम से जाना जाता है। प्रेमचंद का आगमन हिंदी उपन्यास के इतिहास में एक युग परिवर्तनकारी घटना है। उनसे पहले जो उपन्यास लखे जा रहे थे वह बाहरी ढांचे में तो उपन्यास थे किंतु औपन्यासिक तत्वों तथा यथार्थवादी दृष्टिकोण के नजरिए से अक्सर सत थे। अभी तक का हिंदी उपन्यास समाज का प्रतिबिम्ब नहीं बन सका था। प्रेमचंद ने अपने 20 वर्षों के लेखन काल में हिंदी उपन्यास की धारा को बुनियादी तौर पर पुनर्व्यवस्थित किया और देखते ही देखते हिंदी उपन्यास समाज का प्रमाणक दस्तावेज बन गया।

प्रेमचंद सेवासदन (1918) से हिंदी उपन्यास जगत में कदम रखते हैं। अपने प्रारंभिक दौर में प्रेमचंद ने आदर्शवादी उपन्यासों की रचना की किंतु समय के साथ वे यथार्थवाद की ओर मुड़ गए और यथार्थ परक उपन्यासों की रचना की। पूर्व युग के उपन्यासों की चर्चा करते हुए प्रेमचंद ने कहा -“हमने जिस युग को अभी पर किया है, उसे जीवन से कोई मतलब न था। हमारे साहित्यकार कल्पना की सृष्टि खड़ी कर उनमें मनमाने तिलस्मी बांधा करते थे। कहीं फसानये अजायब की दास्तान थी, कहीं बोस्ताने खयाल की और कहीं चंद्रकांता संतति की। इन आख्यानो का उद्देश्य केवल मनोरंजन था और हमारे अद्भुत रस - प्रेम की तृप्ति। साहित्य का जीवन से कोई लगाव है यह कल्पनातीत था। कहानी कहानी है जीवन जीवन दोनों परस्पर वरोधी समझी जाती थीं”।

प्रेमचंद के चर्चित उपन्यास में: सेवा सदन (1918), वरदान (1920), प्रेमाश्रम (1922), (रंगभूमि), (1925), कायाकल्प (1926), निर्मला (1927), गबन (1931), कर्मभूमि, (1932), गोदान (1936), मंगलसूत्र (अधूरा) मरणोपरांत (1948) में प्रकाशित।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में सामाजिक कुरीतियों, राष्ट्रीय भावनाओं, ग्रामीण जीवन की समस्याओं, मजदूर, किसान, नेता, उपदेश, राजा, रंक आदि सभी को वषय बनते हुए उनका बड़ा ही संजीव यथार्थ चित्र खींचा है। प्रेमचंद के उपन्यासों की भाषा व्यावहारिक और बोलचाल की सहज भाषा है।

इस युग के अन्य उपन्यासकारों में-

पांडे बेचन शर्मा 'उग्र' बुधवा की बेटी, शराबी

चतुरसेन शास्त्री - अमर अ भलाणा, बहते आंसू

सयारामशरण गुप्त - गोंद, अंतिम आकांक्षा, नारी

जयशंकर प्रसाद - कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)

प्रेमचंद युगीन उपन्यास में उपन्यास की दो प्रकार की शैलियों का चलन हुआ जिन्हें प्रेमचंद शैली तथा प्रसाद शैली के नाम से जानते हैं। प्रेमचंद शैली में कथा के यथार्थ चित्रण पर बल दिया जाता था जब कि प्रसाद का जोर भावनाओं के ऊहापोह पर ज्यादा रहता है।

प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास

आपने देखा कि प्रेमचंद युग में ही उपन्यास वधा की दो धाराएं एक सत हो रही थीं। 1936 के बाद भारतीय समाज की प्रकृति में तीव्र व व्यापक परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं जिसके कारण उपन्यासों की दुनिया भी तेजी से बदलती है। देश को स्वाधीनता मिलना फिर उससे मोहभंग होना, शहरीकरण का बढ़ता प्रभाव, ग्रामीण पीढ़ी का शहर पहुंचना, महिलाओं का घर से बाहर समाज के प्रत्येक क्षेत्र में कदम रखना और अधिकारों की मांग, स्त्री पुरुष संबंध

में तेजी से बदलाव और आगे चलकर मध्यवर्ग की संख्या में तेजी से वृद्धि, उपभोक्तावादी संस्कृति का देखते ही देखते मीडिया पर सवार होकर देश भर में फैल जाना, इन सारे परिवर्तनों से सामाजिक संरचना जटिल होती गई और उपन्यास के समक्ष इस जटिल यथार्थ को प्रस्तुत करने की चुनौती खड़ी हो गई। हिंदी उपन्यास ने इन सभी परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य में समाज के जीवंत चित्र प्रस्तुत किए जिन्हें कई वर्गों में वभाजित किया जा सकता है-

मनोवैज्ञानिक उपन्यास

मार्क्सवादी समाजवादी या प्रगतिवादी उपन्यास

सामाजिक यथार्थ के उपन्यास

आंचलिक उपन्यास

ऐतिहासिक पौराणिक उपन्यास

नया उपन्यास

समकालीन उपन्यास

मनोवैज्ञानिक उपन्यास

मनो विज्ञान का प्रयोग यूं तो प्रेमचंद ने भी किया था किंतु उनके बाद मनो विज्ञान के तकनीकी पक्ष का महत्व बढ़ गया और उसने साहित्य को प्रभावित किया। 20वीं सदी के आरंभ में सर्गेन्ट फ्रॉयड ने थॉमस एडलर तथा कार्ल युंग के साथ मिलकर मनो विश्लेषणवाद प्रस्तुत किया जिसने सारी दुनिया को वैचारिक तौर पर प्रभावित किया। मनोवैज्ञानिक उपन्यास मुख्यतः इसी सद्धांत के आधार पर रचे गए। वे व्यक्ति के मन की तह में झांक कर प्रचलित नैतिक सद्धांतों की समीक्षा करते हैं। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

जैनेंद्र - त्यागपत्र, सुनीता, कल्याणी

अज्ञेय - शेखर: एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी

इलाइचंद जोशी - जिप्सी, जहाज का पंछी, सन्यासी

डॉक्टर देवराज - अजय की डायरी

मार्क्सवादी समाजवादी या प्रगतिवादी उपन्यास

समाजवादी या प्रगतिवादी उपन्यास मार्क्सवादी वचारधारा को आधार बनाकर लखे गए हैं संपूर्ण प्रगतिवादी साहित्य मार्क्स के वचारधारा पर आधारित है। यद्यपि प्रेमचंद पर अंतिम समय में मार्क्सवाद का थोड़ा बहुत प्रभाव दिखाई पड़ता है पर वास्तविक अर्थों में समाजवादी उपन्यास प्रेमचंदोत्तर युग में लखे गए। यशपाल इस धारा के केंद्रीय लेखक हैं। इन उपन्यासों की भाषा शैली सामान्यतः सरल होती है क्योंकि यह निम्न वर्ग को संघर्ष हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से रचे जाते हैं। समाजवादी उपन्यासों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

यशपाल - पार्टी कामरेड, दादा कामरेड, झूठा - सच, दिव्या

नागार्जुन - बाबा बटेसर नाथ, वरुण के बेटे

भैरव प्रसाद गुप्त - मशाल, गंगा मैया

रांगेय राघव -घरौंदा, वषाद मठ

समाजवादी उपन्यासों की सबसे बड़ी सीमा यह है कि इनमें कई बार सद्धांत पक्ष हावी हो जाता है और पाठक कथानक से सहज संबंध बना नहीं पाता।

सामाजिक यथार्थ के उपन्यास

जिस उपन्यास धारा को प्रेमचंद ने प्रवर्तित किया था वही आगे चलकर नई-नई सामाजिक समस्याओं का वर्णन तथा विश्लेषण करती रही। इसी धारा को सामाजिक यथार्थवादी धारा

कहा जाता है। इस धारा के लेखक कसी भी वचारधारा के मोह से बचते हुए अपने स्वतंत्र नजरिये से समाज की समस्याओं का सूक्ष्म अंकन करते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

भगवती चरण वर्मा - भूले बिसरे चत्र टेढ़े-मेढ़े रास्ते

नरेश मेहता - यह पथ बन्धु था

श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी

भीष्म साहनी - तमस

अमृतलाल नागर - बूंद व समुद्र

राजेंद्र यादव - सारा आकाश

सामाजिक उपन्यास की धारा आज भी कई अन्य धाराओं में परिवर्तित होकर सक्रिय बनी हुई है जैसे महिला लेखन की धारा महानगरीय उपन्यासों की धारा आदि।

आंचलिक उपन्यास

स्वतंत्रता पश्चात के उपरांत हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा में आंचलिक उपन्यास की व शष्ट धारा का उदय फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यास मैला आंचल से माना जाता है। तब से लेकर आज तक यह धारा प्रवाहमान है। क्षेत्र विशेष/अंचल से कथा का चयन कर उसी को आधार बनाकर कथा रचना के कारण इसे आंचलिक उपन्यास कहा जाता है। आंचलिक उपन्यासों में नायक या नायिका नहीं होते बल्कि परिवेश (अंचल) ही नायक होता है। अंचल विशेष के अपने रीति - रिवाज, संस्कार, जीवन प्रणाली, परंपराएं और मान्यताएं आदि होती हैं। ऐसे उपन्यास में भाषा, रहन-सहन, खान-पान, आचार - वचार, तीज - त्यौहार आदि का वर्णन अंचल विशेष के आधार पर होता है। आंचलिक उपन्यास के विषय में रामदरस मश्रा ने कहा है कि “आंचलिक उपन्यास तो आंचल के समग्र जीवन का उपन्यास है।”

आंचलिक उपन्यासों में-

फणीश्वर नाथ रेणु - मैला आंचल, परती परिकथा

नागार्जुन - रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे

उदय शंकर भट्ट - सागर लहरों और मनुष्य

रांगेय राघव - कब तक पुकारू

राही मासूम राजा - आधा गांव

शव प्रसाद सिंह - अलग-अलग वैतरणी

शवपूजन सहाय - देहाती दुनिया आदि प्रमुख हैं।

ऐतिहासिक पौराणिक उपन्यास-

ऐतिहासिक उपन्यास प्रेमचंद पूर्व युग में भी थे कंतु उनमें इतिहास बोध कमजोर कस्म का था। आजादी के बाद कुछ उपन्यासकारों ने अंग्रेजों के साम्राज्यवादी इतिहास बोध को खारिज करते हुए नई इतिहास दृष्टि के साथ कुछ उपन्यास लखे जो इस परंपरा में शामिल हैं। इनका उद्देश्य था कि इतिहास व पुराणों के कुछ प्रसंग के माध्यम से वर्तमान समाज को प्रेरणा व ऊर्जा दे सकें। ऐसे उपन्यासों में -

भगवती चरण वर्मा - चन्नलेखा

चतुरसेन शास्त्री - वैशाली की नगरवधू

वृंदावन लाल वर्मा - झांसी की रानी

रांगेय राघव - मुर्दों का टीला

यशपाल - दिव्या आदि प्रमुख हैं।

नया उपन्यास-

नया उपन्यास कोई सैद्धांतिक नामकरण नहीं है, हालांकि व्यवहार में यह काफी प्रचलित हो गया है। जिस तर्ज पर नई कविता, नई कहानी और नई समीक्षा आंदोलन हिंदी साहित्य में

दिखते हैं उसी तर्ज पर कुछ समीक्षक नवलेखन के दौर के उपन्यासों को नया उपन्यास कहते हैं। यह दौर मुख्यतः छठे दशक से संबंधित है जो उपन्यास व कहानी में छठे दशक के बाद भी लंबे समय तक चलता रहा। नव लेखन के पूरे दौर में एक विशेष दृष्टिकोण दिखाई देता है जिसने अन्य वधाओं की तरह उपन्यास को भी प्रभावित किया। नए उपन्यास को कुछ वर्गों में बांट कर विश्लेषण किया जा सकता है, जो इस प्रकार है-

आधुनिक भावबोध की धारा/महानगरी उपन्यास की धारा-

मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, न आने वाला कल

निर्मल वर्मा - वे दिन, एक चथड़ा सुख

यौन चेतना के उपन्यास

पांडे बेचन शर्मा उग्र - चंद हसीनों के खतूत

राजकमल चौधरी - मछली मरी हुई

महेंद्र भल्ला - एक पति के नोट्स

मण मधुकर - सफेद मेमने

कृष्णा सोबती - सूरजमुखी अंधेरे के

मृदुला गर्ग - चतकोबरा

महिला लेखन के उपन्यास-

प्रभा खेतान - छिन्नमस्ता

शवानी - कृष्णकली

कृष्णा सोबती - मर्तों मरजानी, डार से बिछुड़ी

मन्नु भंडारी - आपका बंटी

समकालीन उपन्यास-

1980 के बाद के उपन्यासों को समकालीन उपन्यास कहा जाता है। इस काल में भारतीय समाज में बहुत तीव्र परिवर्तन हुए हैं और इसी के अनुसार उपन्यासों में वै वध्य दिखाई देता है। 1980 के बाद तेजी से मीडिया क्रांति हुई जिसने न सिर्फ पूरे विश्व को गांव बना दिया अपितु ग्लैमर की चमक दमक भी पैदा कर दी। कुछ प्रमुख समकालीन उपन्यास इस प्रकार हैं-

निर्मल वर्मा - रात का रिपोर्टर

पंकज बिष्ट - ले कन दरवाजा

सुरेंद्र वर्मा - मुझे चांद चाहिए

चित्रा मुद्गल - एक जमीन अपनी

मनोहर श्याम जोशी - हरिया हरक्यू लस की हैरानी, हमजाद

तरसेम गुजराल -.जलता हुआ गुलाब

गरिराज कशोर - ढाई घर

वीरेंद्र जैन - डूब, पार

कमलेश्वर कतने - पा कस्तान

कुल मिलाकर हिंदी उपन्यास समाज के यथार्थ चित्रण का अपना दायित्व बखूबी निभाता आया है और आज भी निभा रहा है।

1.5 गोदान की कथावस्तु

प्रायः सभी आलोचकों ने एकमत से 1936 ई. में प्रकाशित गोदान को प्रेमचंद के उपन्यासों का शिखर स्वीकार किया है। यह न केवल हिंदी साहित्य अपितु किसी भी भारतीय भाषा में लिखे गए उपन्यासों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसमें प्रेमचंद की उपन्यास कला पूरे

वैभव के साथ प्रकट हुई है। उनका संपूर्ण जीवन अनुभव गोदान में समेट कर केंद्रीभूत हो गया है। गोदान की कथा के दो प्रमुख सूत्र हैं-

ग्राम्य जीवन

नागरिक जीवन

होरी, गोबर, धनिया, झुनिया तथा अन्य ग्रामीण व्यक्तियों दातादीन, नोखेराम, पटेश्वरी झंगुरी सिंह आदि को लेकर चलने वाला कथा सूत्र ग्राम्य जीवन के साथ वक सत होता है। दूसरा कथा सूत्र नगरीय जीवन से संबंधित है जिसमें, पंडित ओंकारनाथ, (संपादक) श्याम बिहारी तंखा, (बीमा कंपनी के दलाल) मस्टर खन्ना, (उद्योगपति) मस्टर मेहता, (दर्शनशास्त्र के अध्यापक) मस्टर मर्जा (जूते के दुकानदार) और मस मालती (लेडी डॉक्टर) प्रधान पात्र हैं। दोनों कथा सूत्र को जोड़ने वाले तीन संपर्क सूत्र हैं- राय साहब, गोबर, मेहता - मालती। दोनों कथाओं को गोबर के लखनऊ जाने और होरी के रामधनुष यज्ञ पर नगर वालों के पास जाने के सूत्र से जोड़ा गया है।

गोदान कृषक जीवन के महाकाव्य के रूप में स्वीकृत है। होरी की कथा (कृषक जीवन की कथा) आधिकारिक तथा नगरीय कथा को प्रासंगिक कथा माना जाता है। गोदान उपन्यास में कुल 86 पात्र हैं। होरी उपन्यास का नायक है। वह कसानों का प्रतिनिध है। सामंती व्यवस्था का शकार होरी धर्म के ठेकेदारों(दातादीन आदि) छोटे-बड़े महाजनों (झंगुरी सिंह, दुलारी सहुआइन)और जमींदारों (राय साहब) के जाल में उलझा हुआ मरजाद की रक्षा करता हुआ मर्यादावादी कसान घिसते- घिसते मजदूर हो जाता है और पसते पसते शव। संक्षेप में यही उसका जीवन है। तत्कालीन समाज में सामंतवादी व्यवस्था ने कस तरह एक आम कसान को तोड़कर रख दिया है इसका बखूबी ज्ञान प्रेमचंद को था जिसका चित्रण गोदान में होरी के माध्यम से करते हुए प्रेमचंद ने लिखा है- “होरी की दशा दिन-दिन गरती जा रही थी।

जीवन के संघर्ष में सदैव उसकी हार हुई पर उसने कभी हिम्मत ना हारी.....अब उसे धोखा भी न रह गया था, झूठी आशा की हरियाली और चमक भी अब नजर न आती थी”। दूसरी ओर सभ्य नागरिक समाज की स्थिति भी सामाजिक उत्थान के लए आशाप्रद नहीं है। जनता के सेवक कहलाने वाले पत्रकार स्वार्थी हैं। वे अमीरों से चुपके-चुपके रुपया खाते हैं। दार्शनिक दृष्टि वाले प्रोफेसर इस सीमा तक तटस्थ हैं क मजदूरों की हड्डी पर महल खड़ा करते हैं। गांवों और नगरों के बीच त्रिशंकुवत लटके हुए जमींदार कसानों को सोखकर अधिकारियों को संतुष्ट करते हैं। यही प्रेमचंद का युग- जीवन है। ऐसे समाज का उत्थान सुधारों से नहीं हो सकता- प्रेमचंद इस निष्कर्ष पर पहुंच गए हैं। इसी लए उपन्यास के अंत में वे स्वप्न को साकार नहीं सत्य को अनावरित कर देते हैं-

“धनिया यंत्र की भांति उठी, आज जो सुतली बेंची थी उसके बीस आने पैसे लाई और पति के ठंडे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली- महाराज घर में न गाय है ना बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है और पछाड़ खाकर गर पड़ी”

गोदान का कथानक गाय की आकांक्षा से शुरू होकर गो-दान की वडंबनापूर्ण मांग पर समाप्त होता है। रचना के अंत में गोदान की परंपरा होरी की त्रासदी को और गहरा बनती है।

वजय देवनारायण शाही ने लिखा है “प्रेमचंद की प्रकाश अभ्यस्त आंखें हिम्मत करके अंधकार देखने की कोशिश कर रही हैं” निर्मल वर्मा ने लिखा-“गोदान में प्रेमचंद ने पहली बार भारतीय कसान के अंधकार (मैलेनको लक) भ वष्य को प्रस्तुत किया है”

जीवन के कलाकार प्रेमचंद ने गोदान रचना सामग्री जीवन से ही ग्रहण की है। प्रेमचन्द गोदान में भारतीय समाज का संपूर्ण चित्र उतारना चाहते थे, जिसका प्रमुख भाग गांव में बिखरा पड़ा है। उन्होंने इसमें कसानों के होने वाले शोषण का वर्णन किया है, जिसे प्रत्यक्ष रूप से जमींदारी कहते हैं जमींदारों को शहर से जोड़ा गया है और शहरी कथा की सार्थकता

इसमें है क वह ग्रामीण वषमता को उभारती है। जमींदारों और पूंजीपतियों की वलास प्रयत्ता, व णक- वृ त्त, स्वार्थपरता, कृषक-जीवन की करुणा को उभारने में सहायक हुई है।

1.5.1 गोदान की चरित्र योजना

प्रेमचंद ने घो षत रूप से स्वीकार किया है क उनके उपन्यासों का उद्देश्य चरित्र पर प्रकाश डालना है-

“मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूं”

“मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्य को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है”।

प्रेमचंद की चरित्र योजना को समझने के लए यह जानना जरूरी है क उन्होंने गांधी व मार्क्स के सद्धांतों का सूक्ष्म समन्वय किया है। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है-

“गांधी और मार्क्स को प्रेमचंद ने फेंटकर मिलाया है”।

आरंभ में प्रेमचंद गांधी से ज्यादा प्रभावित थे कंतु गोदान तक आते-आते वह मार्क्स व गांधी के मध्य सहमति बिंदु की तलाश करते दिखते हैं। इस लए वह किसी भी चरित्र को इस प्रकार दिखाते हैं क वह अपनी सामाजिक आर्थिक स्थितियों का बाई- प्रोडक्ट भी नजर आता है तो दूसरी ओर बीच-बीच में उसका अनूठा व्यक्तित्व भी झलक जाता है।

नंददुलारे वाजपेई जी का मानना है क ‘चरित्र चित्रण की दृष्टि से प्रेमचंद को गोदान में अप्रत्याशित सफलता मिली है। इसके पात्र कठपुतली न होकर रक्त मांस के सजीव व्यक्ति हैं जिसमें सर्वत्र गतिशीलता है’।

गोदान के पुरुष पात्रों में सबसे मुख्य चरित्र होरी का है। होरी के अलावा राय साहब अमरपाल सिंह(ग्रामीण तथा नगरीय पात्रों के बीच संबंध सेतु) होरी का पुत्र गोबर पंडित दातादीन भोला अहीर शोभा हीरा आदि ग्रामीण पुरुष पात्र हैं। नगर जीवन से जुड़े पुरुष पात्रों में मल मालक

खन्ना, दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर मस्टर मेहता, बिजली संपादक पंडित ओंकारनाथ बैकर और दलाल श्यामबिहारी तंखा तथा मस्त मौला मर्जा खुर्शेद आदि। ग्रामीण स्त्री पात्रों में सबसे मुख्य धनिया है। झुनिया, सलीया के अलावा सोना, रूपा, दुलारी सहुआइन गोदान के अन्य ग्रामीण नारी पात्र तथा वलायत में शिक्षित लेडी डॉक्टर मस मालती एवं मल मालक खन्ना की पत्नी गोबिंद आदि शहरी स्त्री पात्र हैं।

गोदान उपन्यास में प्रयुक्त पात्रों पर विचार करें तो उनमें वर्गीय गतिशील पात्रों का स्वरूप सामने आता है। प्रेमचंद की रचनाओं के चरित्र सामान्यतः वर्गगत होते हैं क्योंकि उनका मानना है कि एक वर्ग के व्यक्ति सामान्यतः एक जैसे होते हैं।

“कसान पक्का स्वार्थी होता है इसमें संदेह नहीं।... जब तक पक्का विश्वास न हो जाए, वह किसी के फुसलाने में नहीं आता”

“हर सरल गृहस्थ की भांति होरी के मन में भी गऊ की लालसा चरकाल से संचित चली आ रही थी”।

गोदान उपन्यास में जहां तक चरित्रों की संख्या का प्रश्न है प्रेमचंद ने उनकी भीड़ नहीं लगाई है। कथानक के आकार की दृष्टि से चरित्रों की संख्या ठीक है। कहीं-कहीं कुछ चरित्र अनावश्यक प्रतीत होते हैं जैसे- मीनाक्षी देवी, राय साहब का पुत्र इत्यादि। चरित्रों का आनुपातिक महत्व भी ठीक है। प्रमुख चरित्रों को ज्यादा स्थान दिया है और गौण चरित्रों को कम। चरित्र केवल अच्छे या केवल बुरे नहीं हैं बल्कि अच्छे और बुरे हैं। सभी मुख्य चरित्र संश्लिष्ट हैं जिनमें अच्छाई व बुराई दोनों आनुपातिक रूप में हैं। होरी अच्छा जरूर है किंतु भोला व दमड़ी के प्रसंग में उसकी कमजोरी उभरती है। मथुरा सोना के प्रति एकनिष्ठ है किंतु सलीया के साथ एकांत में संबंध बनाना चाहता है। ऐसे ही स्वाभाविक कमजोरी सभी प्रमुख चरित्र में है।

गोदान में प्रेमचंद ने पात्रों की बाह्य विशेषताओं का वर्णन करने के साथी बाह्य व्यक्तित्व कन परिस्थितियों में निर्धारित हुआ है यह वर्णन करते हैं-

“उसकी ही उम्र अभी क्या थी ? छत्तीसवां ही साल तो था; पर सारे बाल पक गए थे, चेहरे पर झुर्रियां पड़ गई थी, सारी देह ढल गई थी, वह सुंदर गेंहुआ रंग सांवला गया था और आंखों से भी कम सूझने लगा था। पेट की चंता ही के कारण तो”।

प्रेमचंद भली भांति समझते हैं की आंतरिक व्यक्तित्व व प्रक्षेपित व्यक्तित्व में अंतराल होते हैं। वह गोदान में चरित्रों के बाह्य व्यक्तित्व पर ही नहीं रुक जाते, उस फांक को भी दिखाते हैं जो उसके भीतरी और बाहरी व्यक्तित्व में वद्यमान है-

“मालती बाहर से तितली है भीतर से मधुमक्खी”

“राय साहब राष्ट्रवादी होने पर भी हुक्काम से मेल-जोल बनाए रखते थे”।

इसके साथ ही प्रेमचंद ने चरित्रों के अंतर्द्वंद्व का भी सूक्ष्म में वर्णन गोदान में किया है तथा चरित्रों के वर्णन में प्रमाणकता लाने के लिए मनोवज्ञान का भी सुंदर प्रयोग किया है। गोदान के चरित्र योजना की कुछ सीमाएं भी हैं जैसे कई चरित्र पर अंत में प्रेमचंद का आदर्शवाद हावी हो जाता है जिसके कारण उनका हृदय परिवर्तन होते हुए दिखाया गया जैसे हीरा गोबर खन्ना मालती। इससे यथार्थ का तत्त्व कुछ कम हो गया है और चरित्र की प्रभाव क्षमता पर नकारात्मक असर पड़ा है। शहरी चरित्र का व्यक्तित्व जिन परिस्थितियों में उभारा गया है वह प्रायः कृत्रिम हैं; इस लिए चरित्र प्रभावशाली नहीं बन सके उदाहरण के लिए धनुष यज्ञ व कबड्डी जैसे प्रसंग कथानक पर थोपे प्रतीत होते हैं। कुछ चरित्र सर्फ आदर्श के प्रक्षेपण के माध्यम होकर रह गए हैं जैसे गो वंदी, मालती (अंत) में।

1.5.2 गोदान की भाषा शैली

हिंदी उपन्यास की परम्परा को प्रेमचंद ने जो महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं, उसमें से एक भाषा शैली के स्तर पर भी है। प्रेमचंद से पहले हिंदी गद्य की भाषा शैली को लेकर प्रमुख वाद यह था कि उसमें तत्सम शब्दावली को ज्यादा महत्व दिया जाए या फारसी शब्दावली को। प्रेमचंद ने भाषा का न संस्कृतकरण किया और न ही फारसीकरण, फिर भी दिखा दिया कि इन वादों में उलझे बिना कैसे एक सशक्त व संजीव गद्य शैली विकसित हो सकती है। उनकी भाषा हिंदुस्तानी है जिसका समर्थन महात्मा गांधी राष्ट्रभाषा के तौर पर कर रहे थे। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में इसका प्रयोग करके इसे सचमुच पूरे राष्ट्र में प्रसारित करके राष्ट्रभाषा बना दिया।

प्रेमचंद की भाषा शैली आम बोलचाल से जुड़ी होने के कारण ही महत्वपूर्ण नहीं है, वह साहित्यिक समीक्षा के प्रतिमानों पर भी खरी उतरती है। चित्रण की सजीवता, प्रभावशाली संवाद योजना, जीवंत बिंदुओं की उपस्थिति, कोमल हास्य का पुट तीखे व्यंग्यों की धार, मुहावरों और लोकोक्तियों में निहित लोकधर्मी प्रभाव और वाक्य वन्यास की चुस्ती जैसे गुण प्रेमचंद की भाषा शैली के संरचनात्मक तत्व हैं। जो शैलीगत प्रयोग वे अपने पहले के उपन्यासों में कर रहे थे, गोदान उन्हीं की पूर्णता या सद्ध की अवस्था है।

गोदान की भाषा शैली की प्रमुख विशेषताएं निम्न बिंदुओं में समझ सकते हैं-

गोदान की भाषा चरित्रों के अनुसार अपना रूप बदलती रहती है। पात्रों की भाषा शैली उनकी सामाजिक आर्थिक स्थितियों से निर्धारित होती है। जहां निम्न और ग्रामीण पात्रों की भाषा में अमानकीकृत कंतु सहज प्रयोग मिलते हैं, वहीं शक्ति और शहरी पात्रों में मानकीकृत और आभजात्य प्रयोग दिखाई पड़ते हैं। उदाहरण के लिए-

होरी- “हम सब बिरादरी के चाकर हैं उससे बाहर नहीं जा सकते”।

धनिया- “जब मर्द इधर-उधर ताक- झाँक करेगा तो औरत भी आंख लड़ाएगी... मर्द का हरजाईपन औरत को भी उतना ही बुरा लगता है जितना औरत का मर्द को”।

मर्जा खुशीद- “मुझे अब इस डेमोक्रेसी में भक्ति नहीं रही... मैंने तो इरादा कर लिया है, अब इलेक्शन के पास न जाऊंगा। मेरा प्रोपेगेंडा अब डेमोक्रेसी के खिलाफ होगा”।

मेहता- “मेरे लिए धन केवल उन सुवधाओं का नाम है जिससे मैं अपना जीवन सार्थक कर सकूँ”।

जहां ग्रामीण पात्रों की भाषा में हमें अवधी, भोजपुरी, देशज व तद्भव शब्दावली का प्रयोग दिखता है- भुग्गा, पुछतर कनबतियाँ, तल्लियां आदि वहीं शहरी पात्रों की भाषा में तत्सम और वदेशज (मुख्यतः अंग्रेजी और फारसी के) शब्द अधिक- उदाहरण के लिए सद्धांत, पत्र, साम्राज्य, स्पेकुलेशन, डेमोक्रेसी, यूनिवर्सिटी आदि

व्यंग्यात्मकता प्रेमचंद की भाषा शैली की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। गोदान के कई हिस्सों में उन्होंने अपनी धारदार व्यंग्य शैली से चरित्रों की छिपी हुई वास्तविकता का उद्घाटन कर दिया है, उनके आंतरिक और बाह्य चरित्रों के अंतर्विरोधों को उभार दिया है।

गोदान की भाषा शैली लोक जीवन के अत्यंत निकट है। अतः उसमें मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग होना स्वाभाविक है।-

“मुश्किल से पचास कदम चले होंगे की गर्दन फटने लगी, पांव थरथराने लगे और आंखों में तितलियां उड़ने लगी”।

“ये शब्द तपते हुए बालू की भांति हृदय पर पड़े और चने की भांति सारे अरमान झुलस गए”।

गोदान में प्रयुक्त उपमाएं उत्प्रेक्षाएं साधारण जनजीवन के भीतर से ली गई हैं। शिवकुमार मश्र ने ‘प्रेमचंद की वरासत और गोदान’ में उनकी भाषा पर वचार करते हुए कहा है-

“गोदान में जब तब उपमाएं उत्प्रेक्षाएं भी आती रहती हैं, कंतु वह ऐसी उपमाएं- उत्प्रेक्षाएँ हैं जो साधारण जनजीवन के भीतर से ली गई हैं। उनके लए प्रेमचंद की कल्पना को रोमांटिकों की तरह आकाश पाताल नहीं थाहने पडे हैं-

“ वपन्नता के इस अथाह सागर में सुहाग ही वह तृण था जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी”

“हारे हुए महीप की भांति उसने अपने को इस तीन बीघे के कले में बंद कर लिया था”।

“मेहता से जो उसे एक श्रद्धा थी, उसे एक धक्का सा लगा मानो कोई शष्य अपने गुरु को कोई नीच कर्म करता देख ले”।

“प्रेम सीधी - सादी गऊ नहीं खूंखार शेर है जो अपने शकार पर कसी की आंख भी नहीं पडने देता”

“हिंदी उपन्यास का इतिहास’ में गोपाल राय ने प्रेमचंद के गोदान उपन्यास के शल्प पर वचार करते हुए लखा है-

“वस्तुतः शल्प वषय का अनुवर्ती होता है और उसकी सार्थकता उपन्यास के वजन के अनुरूप होने में है। प्रेमचंद ने इस रचना व्याकरण को समझा था और इस दिशा में प्रयोग कए थे। इसी लए गोदान में कथानक की पूर्णता और गठन के लए न तो वषय या पात्रों को वकृत कया गया है, न ही, उपन्यास की संरचना की उपेक्षा की गई है। गोदान में प्रेमचंद ने दृश्यात्मक और परिदृश्यात्मक प्र व धर्यों को उनके उत्कर्ष पर पहुंचाते हुए उन्हें नाटकीय प्र व धर्यों से - पत्रों के स्वगतालाप, अतीत का स्मरण, दृश्यों की पात्रों के मनः प्रभाव के रूप में प्रस्तुति, उपचेतन के छायादृश्य - संबंधत कर अत्यंत प्रभावशाली बना दिया है”।

सामान्यतः प्रेमचंद व्यास शैली के रचनाकार हैं कंतु इसके बावजूद उन्होंने गोदान के कुछ प्रसंग में सूत्र भाषा और समास शैली का अत्यंत सधा हुआ प्रयोग देखने को मल जाता है। ऐसे प्रयोग से उन्होंने बहुत छोटे से वाक्य में ही पूरे जीवन का निचोड़ प्रस्तुत कर दिया है।
“इस जमाने में मोटा होना बेहियाई है।सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है”।

“समाज की दृष्टि से वैवाहिक जीवन को व्यक्ति की दृष्टि से अ ववाहित जीवन को”।

“बूढ़ों के लए अतीत के सुखों और वर्तमान के दुखों और भ वष्य के सर्वनाश से मनोरंजक कोई प्रसंग नहीं होता”।

गोदान उपन्यास में प्रेमचंद ने ऐसे बिम्ब रचे हैं क पाठक की आंखों में पूरा चत्र उतर जाता है-

“सरोज बी.ए. में पढती थी, दुबली सी, लंबी, पीली, रूखी, कटु”

“नोखेराम नाटे, मोटे, खल्वाट, लंबी नाक और छोटी-छोटी आंखों वाले सांवले आदमी थे”।

“लू चल रही थी, बगुले उठ रहे थे, भूतल धधक रहा था जैसे प्रकृति ने वायु में आग घोल दी हो”।

गोदान में हमें अप्रस्तुत योजना का सौंदर्य और लोक संस्कृति की मठास भी देखने को मल जाती है। एकाध प्रसंग में उन्होंने लोकगीत शैली का प्रयोग क्या है-

“जिया जरत रहत दिन रैन

आम की ड लया कोयल बोले

तनिक न आवत चैन”।

स्पष्ट है क गोदान के माध्यम से प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास परंपरा को एक नई भाषा शैली प्रदान की जिसे आगे चलकर यशपाल, उपेन्द्रनाथ अशक और भीष्म साहनी जैसे लेखकों ने संरक्षित व प्रसारित क्या।

गोपाल राय ने 'हिंदी उपन्यास का इतिहास' में लिखा है

“कहने की आवश्यकता नहीं है कि कथ्य वैवध्य, वजन, चरित्रसृष्टि, शल्प और भाषा सभी दृष्टियों से प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास को एक ऐसी ऊंचाई पर पहुंचा दिया जो आज भी एक मंजिल और मानदंड के रूप में स्वीकृत है। लगभग दो दशकों की प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा उपलब्धियों की दृष्टि से पूर्ववर्ती पांच दशकों की उपन्यास यात्रा से बढ़कर मानी जा सकती है”।

1.5.3 गोदान: महाकाव्यात्मकता का प्रश्न

गोदान हिंदी का पहला महाकाव्यात्मक उपन्यास माना जाता है। महाकाव्य और उपन्यास वधाओं में गहरा आंतरिक संबंध है। जिस प्रकार महाकाव्य मध्यकाल की सरल जीवन को संपूर्णता में धारण करता था वही कार्य आज के जटिल और बिखरे हुए जीवन में उपन्यास करता है। यही कारण है कि इसे गद्य महाकाव्य भी कहा जाता है। सबसे पहले फील्डिंग ने टॉम जॉन्स की भूमिका में उपन्यास को महाकाव्य कहा था। आगे चलकर रॉल्फ फॉक्स तथा जॉर्ज लुकास जैसे चिंतकों ने भी उपन्यास को आधुनिक युग के महाकाव्य की संज्ञा से वभूषित किया। ‘लॉ टॉलस्टॉय’ का ‘वार एंड पीस’ तथा ‘फील्डिंग’ का ‘टॉम जॉन्स’ पश्चिमी परंपरा के प्रसिद्ध महाकाव्यात्मक उपन्यास हैं।

प्रश्न है कि गोदान को महाकाव्यात्मक उपन्यास किन कसौटियों के आधार पर कहा जा सकता है? ‘प्रेमचंद की वरासत और गोदान’ पुस्तक में ‘शिवकुमार मश्रू’ लिखते हैं “महाकाव्य की अवधारणा, वह पश्चिम की हो अथवा भारत की, अपने तमाम वैशिष्ट्य के बावजूद कुछ मुद्दों पर एक दूसरे से बहुत मेलती है। ये मुद्दे और ये बिंदु हैं- जीवन की समग्रता जीवन के एक बड़े प्रसार को समेटना; इस समग्रता के अनुरूप की गई चरित्र सृष्टि और उसके बीच से उभरने वाला एक केंद्रीय चरित्र या नायक, और इसके अलावा समूची रचना से ध्वनित

होने वाला एक महान संदेश एक बड़ा जीवन सत्य तथा समूची रचना से निस्पन्न महत् प्रभाव को लंबे समय तक कायम रखना। वस्तुतः समीक्षकों ने ऐसे उपन्यासों के कुछ विशेष लक्षणों की चर्चा की है जिनके आधार पर गोदान के महाकाव्य का निर्धारण किया जा सकता है-

महाकाव्यात्मक उपन्यास कसी सी मत स्थान से बंधा नहीं होता बल्कि पूरे समाज को धारण करने में सक्षम होता है। गोदान अवध प्रांत के दो गांव - सेमरी और बेलारी की कथा होते हुए भी प्रेमचंद ने इसमें सेमरी और बेलारी के सांस्कृतिक और भौगोलिक चित्रों का सघन चित्रण न के बराबर किया है। जहां मैला आंचल जैसे उपन्यास एक गांव के भीतर बंधकर उसकी हर विशेषता उभार देना चाहते हैं वहीं प्रेमचंद की कोशिश से की गोदान कसी गांव विशेष से न बंध जाए। वह लिखते हैं- “सेमरी और बेलारी दोनों अवध प्रांत के गांव हैं। जिले का नाम बताने की जरूरत नहीं। यहां जिले का नाम बताने की जरूरत इस लिए नहीं है कि ऐसे गांव हर जिले में हैं। यहां तक की पाठक के अपने जिले में भी। प्रेमचंद का स्पष्ट संकेत है की होरी कोई विशेष चरित्र और उसका गांव कोई विशेष स्थान नहीं है। भारत का हर गांव सेमरी या बेलारी है और उस गांव में रहने वाला हर साधारण किसान होरी है। इस अर्थ में गोदान पूरे राष्ट्रीय जीवन को धारण करने वाला उपन्यास बन जाता है।

गोदान में प्रेमचंद ने तत्कालीन भारत की लगभग सभी स्थितियों और समस्याओं का जीवन चित्रण प्रस्तुत किया है। सामाजिक जीवन में धर्म, बिरादरी, मरजाद जैसी समस्याओं के साथ-साथ नारी आंदोलन (सरोज इत्यादि) दलित आंदोलन (सलिया का परिवार) दहेज समस्या (सोना और रूपा) अनर्मेल् ववाह की समस्या (नोहरी रूपा) वेश्यावृत्त (मेहता खुर्शीद का संवाद) सांप्रदायिकता (झुनिया के पति की मौत) आदि समस्याएं दिखाई हैं। आर्थिक समस्याओं के अंतर्गत गरीबी और ऋण (होरी व अन्य किसान) जैसी समस्याओं के अतिरिक्त

लग्गान की अ धकता बेरोजगारी (शहरी मजदूर) तथा कार्य स्थल पर होने वाले अलगाव व शोषण का वस्तुतः चित्रण किया है। गोदान में तत्कालीन राजनीतिक स्थितियों का भी प्रस्तुतीकरण मलता है जैसे- थानेदार और पंचायत द्वारा कसान का शोषण, जमींदार राय साहब द्वारा शोषण, लोकतंत्र का अमीर वर्ग तक सी मत होना इत्यादि। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गोदान में अपने समय की सभी सामाजिक राजनीतिक स्थितियां सघन रूप में चित्रित हैं।

गोदान में तत्कालीन समाज के सभी वर्गों के चरित्रों का एल्बम है। अधिकांश चरित्र वर्णगत हैं। इसी लिए वे सिर्फ अपनी विशेषताएं नहीं बताते, अपने पूरे वर्ग की विशेषताएं बताते हैं। होरी समूचे भारत के कसान वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। वहीं दुलारी सहुआइन, झगुरी सिंह तथा नोखेराम जैसे साहूकार वर्ग के चरित्र भी हैं जो, जोंक की तरह कसानों का खून चूस रहे हैं। एक और जमींदार और उसके कारिंदे हैं तो दूसरी ओर दातादीन जैसे धर्म के ठेकेदार जो शोषक वर्ग में शामिल हैं। इसी प्रकार एक और झुनिया जैसी वधवा महिला है तो दूसरी ओर नोहरी जैसे बेमेल ववाह की शकार महिला। शहरी क्षेत्र में भी वै वध्य कम नहीं हैं- खन्ना पूंजीपति वर्ग के प्रतिनिधि हैं, तंखा दलाल वर्ग के, मर्जा खुर्शद नवाबी शानो-शौकत के, मेहता बुद्धजीवी वर्ग के, ओंकारनाथ पत्रकार वर्ग के तो सरोज और मीनाक्षी देवी, नारी मुक्ति आंदोलन के समर्थक वर्ग से जुड़ी हैं। साफ नजर आता है कि प्रेमचंद ने समाज के किसी भी वर्ग को नहीं छोड़ा है, सभी को उचित स्थान दिया है।

जहां तक गोदान के शिल्प का प्रश्न है तो प्रेमचंद ने हिंदुस्तानी शैली का प्रयोग किया है जो जनसंख्या के हर वर्ग को समझ आती है। गांधी जी तो इसी हिंदुस्तानी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे। गांव और शहर की समांतर कथाएं रचकर प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन के साथ शहरी जीवन को भी समेट लिया है।

चरित्र योजना में उन्होंने ऐसी स्वाभाविकता रखी है कि चरित्र कठपुतलियां नहीं बने हैं बल्कि यथार्थपरक होने के कारण सामाजिक जीवन के यथार्थ को सचमुच प्रतिबिंबित करते हैं।

गोदान का प्रभाव उत्कर्षमूलक है जो महाकाव्यात्मक उपन्यास रचना की एक बड़ी विशेषता मानी जाती है।

‘शिवकुमार मश्रू’ ने ‘प्रेमचंद की वरासत और गोदान’ पुस्तक में लिखा - “काफी पहले गोदान पर लिखते हुए आचार्य नंददुलारे बाजपेयी ने यह सवाल उठाया था कि क्या गोदान को राष्ट्रीय प्रतिनिधि उपन्यास (Epic Novel) की समकक्षता में ही आचार्य बाजपेयी ने राष्ट्रीय उपन्यास की संज्ञा का प्रयोग किया है। माना जा सकता है। अपने ववेचन के क्रम में उन्होंने यह साबित करने का प्रयास किया है, और उसके लिए पर्याप्त तर्क भी दिए हैं कि एक महत्वपूर्ण रचना होते हुए भी गोदान की अंतर्वस्तु, और उसका रूपबंध ऐसा नहीं है कि उसे हम ‘राष्ट्रीय प्रतिनिधि उपन्यास’ कह सकें”।

वस्तुतः नंददुलारे बाजपेयी तथा कुछ अन्य आलोचकों ने गोदान को महाकाव्यात्मक उपन्यास कहने की आलोचना की है और तर्क दिए हैं, जो इस प्रकार हैं-

महाकाव्यात्मक उपन्यास की संज्ञा ही भ्रामक है।

गोदान में तत्कालीन स्वाधीनता संग्राम का चित्रण नहीं हुआ है जबकि यह उस समय के भारतीय जीवन का सबसे महत्वपूर्ण प्रसंग था।

गोदान में चरित्रों का वैविध्य पर्याप्त नहीं है।

गोदान का देश और काल सीमा है इस लिए वह पूरे राष्ट्र को समेट नहीं पाता।

गोदान में शहरी जीवन का चित्रण अत्यंत सीमा मात्रा में हुआ है और उसमें पर्याप्त प्रमाणकता भी नहीं है।

वस्तुतः यह आक्षेप गोदान की महाकाव्यात्मकता को खारिज नहीं कर पाते। जहां तक महाकाव्यात्मक उपन्यास की संज्ञा का प्रश्न है, यह ध्यान रखना चाहिए कि समय बदलने के साथ नई वधाएं अस्तित्व में आती हैं और कभी-कभी पारंपरिक वधाओं में मश्रण भी होता है। 'महाकाव्यात्मक उपन्यास' महाकाव्य के कुछ गुणों को धारण करने वाला उपन्यास है जिसकी स्वीकृति न सिर्फ भारत में बल्कि पश्चिम में फील्डिंग रॉल फॉक्स और जार्ज लुकाच के यहां भी मिलती है। स्पष्ट की गोदान महाकाव्य के सभी तत्वों को धारण करता है यही कारण है कि इसे हिंदी का पहला महाकाव्यात्मक उपन्यास होने का गौरव मिला है।

प्रेमचंद की वरासत और गोदान में शिव कुमार मश्र ने लिखा है-

“गोदान में प्रेमचंद ने मुखर होकर भले ही महाकाव्यकारों की भांति उद्बोधन न किए हों, झंडे न उठाए हों, या उठवाएं हों, समाज और मनुष्य युगों- युगों तक जिनकी ध्वजा उठाए चले और चलते रहे, उस व्यवस्था और उस निजाम को बरकरार रखने के लिए, यथास्थिति बनाए रखने के लिए, जो धर्मशास्त्रियों और बड़े-बड़े पोथों में उसकी नीयति के रूप में उसके लिए निर्धारित और निहित की गई है, किंतु उन्होंने अपनी अंतिम कृति में गोदान के रूप में होरी के गोदान के रूप में अथवा अपनी तमाम पूर्ववर्ती आस्थाओं को गोदान के रूप में कुछ व्यंजित और ध्वनित जरूर किया है। आने वाली पीढ़ी को एक संदेश जरूर दिया है, अपनी वसीयत के रूप में जो महत् संदेश है। महत् संदेश को, बड़े जीवन सत्य के उद्घाटन को महाकाव्य की बुनियादी विशेषता माना गया है। गोदान महाकाव्य की अन्य शर्तों को भले ही पूरा न करता हो महत् संदेश महत् व्यंजन वाली उसकी शर्त को जरूर पूरा करता है”।

1.5.4 गोदान का प्रतिपाद्य

गोदान प्रेमचंद का एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है। रंगभूम की तरह इसकी भी कथा द्वैवस्तरीय है- एक ग्राम कथा व दूसरी शहर कथा। ग्राम कथा के जरिए प्रेमचंद जी ने साम्राज्यवादी, सामंतवादी, महाजनी व पुरोहिती व्यवस्था में दम तोड़ते या मुक्ति के लिए छटपटाते कृषक जीवन का चित्रण किया है। होरी सामंती महाजनी जुए के नीचे कसमसाता हुआ धीरे-धीरे अपना वर्गीय आधार खो देता है। तब की सामाजिक आर्थिक सामन्तीय व्यवस्था का पूंजीवादी रूपांतरण हुआ हो या नहीं ले कन, कसान का मजदूर में रूपांतरण हुआ है। होरी की कथा भारतीय सीमांत कसान के मजदूर में बदलने की कथा है। प्रेमचंद जी ने इसके इस रूपांतरण के क्रम में तमाम शोषण शक्तियों को बेनकाब किया है; चाहे वह शक्तियां राय साहब के रूप में सक्रय हों या गांव के महाजन झंगुरी संह, दुलारी सहुआइन आदि या दातादीन जैसे पुरोहित के रूप में, जो मानते हैं क जब तक हिंदू है तब तक पुरोहिती रहेगी। वे जजमानी को बंक घर कहते हैं।

शहरी कथा में तत्कालीन राष्ट्रीय सामाजिक परिवर्तन की हलचल साफ दिखाई पड़ती है। एक तरफ खन्ना का चीनी उद्योग खुल रहा है तो दूसरी ओर जनता के ही पैसों को बैंक में रख अपना बैंक धन बढ़ाया जा रहा है, दूसरी तरफ राय साहब अपने सामंती वर्गाधार को खोता हुआ देख उसके पूंजीवादी रूपांतरण का प्रयास करते हैं। पंडित ओंकारनाथ बिजली अखबार के संपादक हैं, वह राय साहब की एक घुड़की पर अखबार में कसानों के वद्रोह की खबर दबा देते हैं। मेहता व मालती शक्त मध्यवर्ग के प्रतिनिध हैं। उनमें अंतर्वरोध है ले कन वे सच्चे मन से कसानों मजदूरों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए संघर्ष करते हैं। वे मानते हैं क निम्न वर्ग या सीमांत कृषक वर्ग को ऊपर उठाने के लिए मध्यवर्गीय भूमिका आवश्यक है।

बोध प्रश्न -

सही वकल्पों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

क. उपन्यास दो शब्दों.....से मलकर बना है। (उप+न्यास/ उप+नियास)

ख. उपन्यास को मराठी में.....कहते हैं। (कादंबरी/नवलकथा)

ग. उपन्यास का शब्दगत अर्थ है। (कथा/समीप रखना)

घ. मैं उपन्यास को मानव जीवन का मात्र समझता हूँ। (एल्बम/ चित्र)

2. सही वकल्प का चुनाव कीजिए:

क. उपन्यास का तत्व नहीं है-

१. कथावस्तु २. परिवेश ३. प्रतिपाद्य ४. उपन्यासकार

ख. कथा की सामग्री या वषय वस्तु से उपन्यास का कौन सा तत्व संबंधित है-

१. कथावस्तु २. भाषा शैली ३. प्रतिपाद्य ४. परिवेश

ग. प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यास का समय है-

१. 1882 ई. से 1916 ई. २. 1916 ई.से 1936 ई.

३. 1936 ई.से 1950 ई. ४. 1950 के बाद से

घ. सही सुमे लत नहीं है-

१. परीक्षा गुरु - लाला श्रीनिवास दास २. चंद्रकांता - देवकीनंदन खत्री

३. प्रेमाश्रम - प्रेमचंद ४. कंकाल - कशोरी लाल गोस्वामी

3. निम्न ल खत कथनों में सही अथवा गलत का चुनाव कीजिए:

क. राग दरबारी श्री लाल शुक्ल की रचना है। (सही/गलत)

ख. मैला आंचल तथा परती परिकथा आंचलक उपन्यास है। (सही/गलत)

ग. चत्रलेखा सामाजिक उपन्यास है। (सही/गलत)

घ. जैनेंद्र अज्ञेय तथा इलाचंद जोशी मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं। (सही/गलत)

अभ्यास प्रश्न

1. प्रेमचंद के पांच उपन्यासों के नाम लिखिए।
2. तीन महिला उपन्यासकारों के नाम लिखिए।
3. गोदान की भाषा शैली की विशेषताएं बताइए।
4. गोदान के महाकाव्यत्व पर प्रकाश डालिए।

1.6 सारांश

इस इकाई के माध्यम से आपने आधुनिकता मध्यवर्ग और उपन्यास एवं आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य की लोकप्रिय वधा उपन्यास तथा हिंदी कथा साहित्य में उपन्यास सम्राट के नाम से प्रसिद्ध प्रेमचंद के क्लासिक उपन्यास गोदान का अध्ययन किया।

- अब आप आधुनिकता मध्यवर्ग और उपन्यास का विश्लेषण कर सकते हैं।
- गोदान उपन्यास में तत्कालीन कृषक जीवन की त्रासदी को दर्शाया गया है। कथानक के आधार पर आप उपन्यास का विश्लेषण कर सकते हैं।
- लेखक ने उपन्यास के माध्यम से तत्कालीन समाज की विभिन्न समस्याओं- किसानों की समस्या, शहर की समस्याएं, बेरोजगारी की समस्या, बेमेल विवाह की समस्या, दहेज की समस्या, धर्म का पाखण्ड, महिलाओं की समस्या तथा सामंती जड़ संस्कारों का वर्णन किया है।
- इस आधार पर आप उपन्यास के कथानक और विभिन्न चरित्रों की विशेषताओं की व्याख्या कर सकते हैं।
- गोदान उपन्यास में किसानों की समस्या पर बड़ी ही गहराई से विचार किया गया है। इस आधार पर तत्कालीन समाज में किसानों की समस्याओं का विश्लेषण कर सकते हैं।

- गोदान की शैली यथार्थवादी, भाषा बोलचाल की एवं संवाद स्वाभाविक है। इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप कथानक के सहज प्रवाही शल्प की विशेषताएं बता सकते हैं।
- गोदान प्रेमचंद के उपन्यासों का शिखर है। इस उपन्यास के अध्ययनोपरान्त प्रतिपाद्य का आप विश्लेषण कर सकते हैं।

1.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

- | | | | |
|-----------------------|------------|----------------------------------|----------|
| 1. क. उपन्यास | ख. कादंबरी | ग. समीप रखना | घ. चित्र |
| 2. क. ४. उपन्यासकार | | ख. १. कथावस्तु | |
| ग. १.1882 ई.से1916 ई. | | घ. ४. कंकाल - कशोरी लाल गोस्वामी | |
| 3. क. सही | ख. सही | ग. गलत | घ. सही |

अभ्यासों के उत्तर

1. रंगभूमि, (1925), निर्मला (1927), गबन (1931), कर्मभूमि, (1932), गोदान (1936)
2. प्रभा खेतान, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी
3. इस प्रश्न के उत्तर के लिए 1.52 का पुनः अध्ययन कीजिए
4. इस प्रश्न के उत्तर के लिए 1.54 का पूर्ण अध्ययन कीजिए

उपयोगी पुस्तकें

1. उपन्यास की संरचना - गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिंदी का गद्य साहित्य -डॉ. रामचंद्र तिवारी, वश्व वद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. हिंदी उपन्यास का इतिहास - गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. गोदान - प्रेमचंद
5. प्रेमचंद और उनका युग - राम वलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. प्रेमचंद और भारतीय समाज - नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,
7. प्रेमचंद की वरासत और गोदान - शव कुमार मश्रा, अ भव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद
8. गोदान: नया परिप्रेक्ष्य गोपाल राय, अनुपम प्रकाशन, पटना
9. गोदान एक पुनर्वचार - संपादक परमानंद श्रीवास्तव, अ भव्यक्त प्रकाशन, इलाहाबाद

उपयोगी वेब लिंक्स

<https://ebooks.inflibnet.ac.in/hinp06/>

<https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%AE%E0%A4%9A%E0%A4%82%E0%A4%A6>

<http://www.bharatdarshan.co.nz/author-profile/8/munshi-premchand.html>

<https://www.youtube.com/watch?v=14i7pXwlaFE> गोदान फिल्म

<https://www.youtube.com/watch?v=hIqWYrUuch8>

<https://www.youtube.com/watch?v=JieXJThB5e8>

<https://www.drishtiias.com/hindi/postal-course/upsc-study-material-hindi>

इकाई 2: मैला आंचल :आंच लक उपन्यास

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 आंच लकता और हिंदी उपन्यास

2.3 फणीश्वरनाथ रेणु- मैला आंचल

2.4 मैला आंचल में आंच लकता

2.5 मैला आंचल में सामाजिक धार्मिक चेतना

2.6 मैला आंचल के पात्र

2.7 मैला आंचल के कथानक का भाषा- शिल्प

2.8 सारांश

2.9 बोध प्रश्न/अभ्यासों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम आंचलक उपन्यासों के बारे में जान सकेंगे। यहां आप महान आंचलक उपन्यासकार फणीश्वर नाथ रेणु के आंचलक उपन्यास मैला आंचल के बारे में अध्ययन कर सकेंगे। इस इकाई में हम मैला आंचल के कथा संबंधी और शिल्प संबंधी विशेषताओं को जान सकेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- उपन्यास की कथा का सारांश लिख सकेंगे।
- उपन्यास की कहानी का विश्लेषण कर सकेंगे और उसकी विशेषता बता सकेंगे।
- उपन्यास के महत्व से परिचित हो सकेंगे।
- उपन्यास के अंशों की स्वयं व्याख्या कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

हमने पछली इकाई में महान उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास गोदान के बारे में अध्ययन किया। प्रेमचंद यथार्थोन्मुख आदर्शवादी उपन्यासकार हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् उपन्यासों के प्रकार में आंचलक उपन्यास प्रमुख है। आंचलक उपन्यास के प्रणेता फणीश्वर नाथ रेणु हैं। मैला आंचल फणीश्वर नाथ रेणु का प्रथम उपन्यास है जो 1954 में प्रकाशित हुआ। मैला आंचल के प्रकाशन के पश्चात् फणीश्वर नाथ रेणु रातों-रात एक राष्ट्रीय लेखक

के रूप में प्रसिद्ध हो गए। उस समय इस उपन्यास का प्रकाशन हिंदी साहित्य की एक प्रमुख घटना माना गया इसके पश्चात फणीश्वर नाथ रेणु ने और भी उपन्यास लखे परंतु उनसे इतनी प्रसिद्ध न हो पाई। फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म 4 मई 1921 को बिहार के पूर्णिया जिला के औराही हिंगना गांव में हुआ था। फणीश्वर नाथ रेणु के व्यक्तित्व में केवल लेखकीय कर्म ही नहीं अपितु वे एक जागरूक नागरिक एवं देशभक्त थे। फणीश्वर नाथ रेणु ने स्वतंत्रता की लड़ाई में भी भाग लिया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने सदैव शोषण और अन्याय का विरोध किया जो कि उनकी रचनाओं में प्रदर्शित होता है।

फणीश्वर नाथ रेणु ने न केवल भारत की आजादी के आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई अपितु उन्होंने नेपाल की जनता को वहां की राजशाही से मुक्ति दिलाने के लिए सशस्त्र क्रांति एवं राजनीति में हिस्सा लिया।

फणीश्वर नाथ रेणु जी ने लेखन की शुरुआत वर्ष 1936 से ही शुरू कर दिया था। लेकिन उनकी शुरुआती कहानियों में वो परिपक्वता नहीं थी। जो बाद की कहानियों में देखने को मिली। जब रेणु जी वर्ष 1942 में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के कारण गिरफ्तार हुए और दो वर्ष जेल में रहने के बाद जब वह 1944 में रिहा हुए, उस दौरान उन्होंने एक से बढ़कर एक कहानियां लखीं। इन्हीं कहानियों में 'बटबाबा' और 'पहलवान की ढोलक' आदि कहानियां शामिल थीं जो 'साप्ताहिक विश्व मंत्र' के अंक में प्रकाशित हुई थीं।

इसके बाद रेणु जी के कई कहानी संग्रह प्रकाशित हुए जिसमें 'ठुमरी', 'आदिम रात्रि की महक', 'अगनखोर', 'एक श्रावणी दोपहरी की धूप', 'अच्छे आदमी', आदि प्रमुख हैं। वहीं रेणु जी को जितनी प्रसिद्ध कहानियों से मिली, उतनी ही ख्याति उपन्यासों से भी मिली। जिनमें 'मैला आँचल', 'जूलूस', 'परती परिकथा' और 'कतने चौराहे' उपन्यास प्रमुख हैं। रेणु की

कहानी मारे गए गुलफाम के आधार पर फिल्म तीसरी कसम बनी जो अपने समय की सुपरहिट फिल्मों में से थी । जिसने रेणु को प्रसिद्धि दिलाई।

रेणु ने आपातकाल का भी डटकर विरोध किया। जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में उन्होंने छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाई । उन्होंने फारबिसगंज से निर्दलीय चुनाव लड़ा, जिसमें उन्हें हार का सामना करना पड़ा। अपने गरीब स्वास्थ्य के कारण उन्होंने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया।¹¹ अप्रैल 1977 को रेणु जी का निधन हो गया।

फणीश्वर नाथ रेणु ने कहानी और उपन्यास के अतिरिक्त संस्मरण भी लिखे थे । उनके ऋणजल-धनजल, वन तुलसी की गंध, श्रुत-अश्रुत पूर्व प्रमुख संस्मरण हैं । रेणु ने दिनमान में रिपोर्टाज भी लिखा -नेपाली क्रांति कथा उनके रिपोर्टाज का उत्तम उदाहरण है । जिसको उन्होंने स्वयं जिया।

आंचलिक शब्द का अंग्रेजी पर्याय रीजन (region) होता है। अंग्रेजी साहित्य में आंचलिक उपन्यासों की शुरुआत वाल्टर स्कॉट और मारिया एडवर्थ के उपन्यासों में देखने को मिलता है। मारिया एडवर्थ के उपन्यासों में कासल रायकर्न्ट, बे लंदा आदि प्रमुख उपन्यास हैं। थॉमस हार्डी अर्नाल्ड बैनेट और विलियम फॉकनर अंग्रेजी में आंचलिक उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हुए हैं।

भारतीय साहित्य में भी आंचलिक को आधार बनाकर उपन्यास लिखे गए हैं । बांग्ला भाषा में सतीनाथ भादुड़ी विभूतिभूषण बंदोपाध्याय और मराठी में गोपाल नीलकंठ दांडेकर, पंजाबी में गुरदयाल सिंह आंचलिकता के वर्णन के कारण ही जाने जाते हैं।

2.2 आंचलिकता और हिंदी उपन्यास

यद्यपि मैला आंचलिक से पहले भी आंचलिक को केंद्र बना कर उपन्यास लिखे गए हैं । किंतु मैला आंचलिक हिंदी का प्रथम आंचलिक उपन्यास मना जाता है । आंचलिक उपन्यासों में किसी

अंचल को केंद्र में रखकर वहां के सुख दुख, संस्कृति, लोक जीवन, कला भाषा बोली, रहन सहन का वस्तार से वर्णन किया जाता है।

अंचल शब्द का अर्थ किसी विशेष क्षेत्र के संस्कृति, लोक जीवन, भाषा, भौगोलिक स्थिति, सुख-दुख, वेशभूषा, राजनीतिक सामाजिक स्थिति की पहचान से है जो उसे दूसरे अंचल से इन्हीं विशेषताओं के आधार पर अलग करता है। ऐसे किसी भी अंचल विशेष को आधार बनाकर लिखे जाने वाले उपन्यास कृति को आंचलिक उपन्यास कहा जाता है।

यद्यपि मैला आंचल को हिंदी का प्रथम आंचलिक उपन्यास माना जाता है। किंतु उपन्यास में अंचल विशेष का चित्रण रेणु के पहले भी मिलता है। लेकिन मैला आंचल को रेणु ने आंचलिक उपन्यास घोषित किया। मैला आंचल उपन्यास के प्रथम संस्करण की भूमिका में रेणु लिखते हैं-

यह है मैला आंचल एक आंचलिक उपन्यास

मैला आंचल आंचलिक उपन्यासों के लिए एक मानक के रूप में देखा जाने लगा। सन् 1925 में ही शिवपूजन सहाय के उपन्यास देहाती दुनिया में भोजपुरी क्षेत्र के एक अंचल का बहुत ही सुंदर चित्रण हुआ है। इस अर्थ में देहाती दुनिया को भी हिंदी का पहला आंचलिक उपन्यास माना जा सकता है। इसी परंपरा में शिव प्रसाद रुद्र के उपन्यास बहती गंगा जो कि 1952 में लिखा गया, को भी आंचलिक उपन्यासों की श्रेणी में गना जा सकता है।

नागार्जुन के उपन्यासों में भाषा शैली के स्तर पर आंचलिक तत्व है लेकिन जिस प्रकार मैला आंचल में मेरीगंज अंचल ही एक नायक के रूप में प्रस्तुत हुआ है। उसी प्रकार की आंचलिकता नागार्जुन के उपन्यासों में देखने को नहीं मिलती। नागार्जुन अपने उपन्यासों में एक क्षेत्र विशेष के राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं को उठा रहे थे न कि अंचल विशेष का चित्रण कर रहे थे। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में रेणु की भांति आंचलिक शब्द का

प्रयोग नहीं किया है। नागार्जुन के उपन्यासों में बलचनमा 1952 में भी आंचलिकता का पुट देखने को मिलता है। जिसका आधार बिहार की मथला भूमि को बनाया गया है। बलचनमा की कहानी हिंदू वर्णव्यवस्था जमींदारी, शोषण के बीच मथला समाज का वर्णन है। वहां के ववाह, जन्म-मृत्यु, सुख-दुख, झगड़ा, न्याय, रीति-रिवाज, त्यौहार, वेशभूषा, गीत राजनीतिक-सामाजिक स्थिति का वर्णन देखने को मिलता है। बाबा बटेसर नाथ आंचलिक उपन्यास की दृष्टि से एक नया प्रयोग है। इसमें रूपाली गांव का बूढ़ा वटवृक्ष नायक के रूप में उपस्थित हुआ है। जो अपने पूर्वजों के रूपाली गांव की मथला प्रदेश की और समूचे देश की कहानी सुनाने लगता है। वटवृक्ष का यह मानवीकरण आंचलिक जीवन में आसानी से देखा जा सकता है। नागार्जुन की नई पौध, कुंभीपाक, दुख मोचन, उग्रतारा, जमानिया का बाबा आदि भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

हिंदी के अन्य आंचलिक उपन्यासकारों में उदय शंकर भट्ट का नाम भी उल्लेखनीय है। सागर लहरें और मनुष्य में मुंबई के मछुआरों को बड़े ही मार्मिक ढंग से दिखाया गया है। उदय शंकर भट्ट के अन्य उपन्यास लोक परलोक में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के तीर्थ ग्राम का बहुत ही सुंदर चित्रण किया गया है।

रांगेय राघव के उपन्यास कब तक पुकारूं में राजस्थान और ब्रज की सीमा पर बसे गांव के नटों का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में आंचलिकता के चित्रण के लिए सजीव भाषा का इस्तेमाल किया गया है। जिसमें ब्रजभाषा के शब्द बहुतायत में हैं। रांगेय राघव के उपन्यास मुर्दों का टीला में भी आंचलिकता का वर्णन है।

देवेंद्र सत्यार्थी ने पंजाब के साथ-साथ हिंदी में भी अच्छा लेखन कार्य किया है। उनका उपन्यास ब्रह्मपुत्र असम के लोकजीवन का सुंदर चित्रण प्रस्तुत करता है। उनका अन्य उपन्यास दूध छाछ भी आंचलिक उपन्यास है।

राजेंद्र अवस्थी का उपन्यास जंगल के फूल में बस्तर के जनजीवन का वर्णन किया गया है । शैलेश मटियानी का हौलदार कुमाऊं के पर्वतीय क्षेत्र का चित्रण है। रामदरश मश्रा के उपन्यास पानी के प्राचीर में गोरखपुर के क्षेत्र का आंचलक चित्रण हुआ है।

शव प्रसाद सिंह के उपन्यास अलग-अलग वैतरणी में करेता गांव का जीवन है तो श्री लाल शुक्ल के राग दरबारी में शवपालगंज की कहानी है।

हिंदी के कुछ आंचलक उपन्यासों में अमृतलाल नागर का उपन्यास बूंद और समुद्र, सेठ बांकेलाल बलभद्र ठाकुर के मुक्तावली, आदिलनाथ हिमांशु श्रीवास्तव के लोहे के पंख और नदी फर बह चली राही मासूम राजा का आधा गांव मनहर चौहान हिरना सांवरी केशव प्रसाद मश्र कोहबर की शर्त भैरव प्रसाद गुप्त कृत गंगा मैया व सती मैया का चौरा ववेकी राय कृति लोकऋण हिमांशु जोशी कृत कगार की आग धूमकेतु कृत माटी की महक विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

चक्क पीरां का जस्सा ,राबी पार , क लकोष, शत चोर और चांद, दो अकालगढ़, जिंदगी नामा , मत्रों मरजानी, कभी न छोड़े खेत ,धरती धन न अपना, नरक कुंड में बास आदि हिंदी के अन्य आंचलक उपन्यास हैं

2.3 फणीश्वर नाथ रेणु: मैला आंचल

रेणु का संपूर्ण कथा साहित्य आंचलक परिवेश से भरा पड़ा है । जिस सटीकता से रेणु ने आंचलक परिदृश्य को अपने साहित्य में चित्रित किया है । वैसा कोई अन्य साहित्यकार नहीं कर पाया है । गांव के प्रति सरोकार रखने वाला लेखक जिन-जिन परिवेश और स्थितियों का वर्णन कर सकता है ; वह सभी रेणु के साहित्य में वर्तमान है , चाहे जंगल हो खेत हो , ख लहान हो , नदी , तालाब पेड़ -पौधे ,झाड़ियां कुछ भी रेणु की कलम से बच नहीं पाया । सुंदर और असुंदर दृश्य को उनकी साहित्यिक पूर्णता में अपनी लेखनी के माध्यम से

जिस प्रकार रेणु ने चित्रित किया है वह अन्य स्थान पर देखने को नहीं मिलता । रेणु ने अपने कालजयी उपन्यास मैला आंचल की भूमिका में लिखा है-

इसमें फूल भी हैं फूल भी धूल भी है गुलाब भी कीचड़ भी चंदन भी सुंदरता भी कुरूपता भी। मैं किसी से दामन बचा कर निकल नहीं पाया।

फणीश्वर नाथ रेणु ने मैला आंचल की भूमिका में बिहार के पूर्णिया जिले की स्थिति को स्पष्ट किया है। उन्होंने बताया है कि इसके एक ओर नेपाल दूसरी ओर पाकिस्तान (जो कि अब बांग्लादेश है) और पश्चिम बंगाल है। दक्षिण में संथाल परगना और पश्चिम में मथला की सीमा रेखाएं हैं। किंतु रेणु ने अपने उपन्यास की पृष्ठभूमि पूरे पूर्णिया जिले को न रखकर उसके एक गांव मेरीगंज को अपनी कथानक के केंद्र में रखा। लोक साहित्य और संस्कृति समाज में एक अलग स्थान रखता है । लोक संस्कृति का सजीव चित्रण हमें उपन्यास में देखने को मिलता है । सरलता , शिष्टता के मामले में इस उपन्यास का कोई दूसरा प्रतिद्वंद्वी नहीं है । रेणु ने अपने कथा साहित्य में लोक कथाओं को प्रमुखता से स्थान दिया है । रेणु ने अपने संचालित उपन्यास में लोक कथाओं को जीवंत कर दिया है। और दूसरी तरफ उन्होंने लोक कथाओं ने रेणु के कथा साहित्य को जीवन प्रदान किया है।

मेरीगंज गांव के नामकरण का भी एक दिलचस्प किस्सा है । इस गांव का नाम बीसवीं सदी के शुरू में आए एक अंग्रेज अधिकारी डब्लू जी मार्टिन ने अपनी पत्नी मेरी के नाम पर रखा। किन्तु मेरी का जीवन उस गांव में बहुत अधिक नहीं रहा । मेरी की मृत्यु मलेरिया के कारण हो गई। मेरी की मृत्यु से मार्टिन अत्यंत दुखी हुए । और वहां मेरीगंज में वह अपनी पत्नी की याद में एक डिस्पेंसरी खुलवाना चाहते थे । किंतु उनके जीवित रहते ऐसा न हो सका मार्टिन ने अपनी जमीन डिस्पेंसरी खुलवाने के लिए दान में दे दी । मेरीगंज में डिस्पेंसरी खुलने और 1947 के बाद भी सरकारी मशीनरी के काम करने का तरीका इस

उपन्यास में हम देख सकते हैं। प्रशासनिक भ्रष्टाचार कांग्रेसी आदर्शवाद अंग्रेजी सरकार का शोषण चक्र सामाजिक असमानता ग्रामीण परिवेश आदि चित्रण इस उपन्यास में प्रमुखता से देखने को मिलते हैं।

2.4 मैला आंचल में आंच लकता

उपन्यास का प्रारंभ भी आंच लकता के प्रमुख तत्व उसी गांव की बोली से शुरू होता है। वैसे तो उपन्यास में अधिकांश आंच लक शब्दों का प्रयोग ही हुआ है। किंतु पात्र अपने शिक्षा और संस्कार के अनुरूप भाषा को बोलते हैं अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के शब्द जो उपन्यास में आए हैं। वह कुछ शिक्षा के अभाव में और कुछ आंच लकता के पुट के कारण दिलचस्प हो गए हैं -

गांव में यह खबर तुरंत बिजली की तरह फैल गई मलेटरी ने बड़ा चेतारू को गरफफ कर लिया है और लोगों लाल के कुएं से बाल्टी खोलकर ले गए हैं।

यहां मलेटरी के लिए मलेटरी और गरफतार के लिए गरफफ का प्रयोग किया गया है।

ऐसे ही एक अन्य उदाहरण में अंग्रेजी शब्द वॉइस चेयरमैन को भैंसचरमन कहा जाता है।

और इस उच्चारण के पीछे का तर्क और भी रोचक है।

भैंसचरमन बाबू जरूर यादव ही होंगे किसी दूसरी जाति का ऐसा नाम क्यों होगा भैंसचरमन केवल अंग्रेजी के शब्द ही आंच लकता के पुट से ओत-प्रोत हैं। अभी तो खड़ी बोली के भी कई शब्द आंच लकता से प्रभावित होकर अपना रूप बदल देते हैं। जिससे उपन्यास की भाषा रोचक हो गई है। उपन्यास में एक स्थान पर कालीचरन कहता है -

सुराज कीर्तन में रोज सुनते हो नहीं देसवा के खातिर मजरूल हक भाई ले फकीरवा हो दिन भइले रजिन्नर परसाद देसवा सयों ।.....देस के खातिर अपना सब हक हिस्सा जगह जमीन माल मवेशी गंवाकर फकीर हो गए।

इस प्रकार खड़ी बोली और अंग्रेजी के कई शब्द हैं। जो आंच लकता के कारण एक नए स्वरूप में आए हैं। और वह उपन्यास के कथानक में बाधा उत्पन्न नहीं करते ।अ पतु उसे और दिलचस्प बनाते हैं, इन प्रकार के शब्दों में -

एरोप्लेन - एलोप्रेम , लाउडस्पीकर - लौड पसकर , जेंटलमैन - जेंटुलमैन , सनेमा सलीमा , टिकटचेकर - च कहर , प्लेटफार्म - लाटफार्म , जिंदाबाद - जिंदाबाघ ।

भारतीय भाषा और बो लयां बहुत ही संपन्न है । वहां मुहावरे , लोकोक्ति और कहावतों की कमी नहीं है जो आगे चलकर खड़ी बोली को समृद्ध करने में सक्षम हुई । ऐसे ही एक स्थान पर उपन्यास में कई स्थानों पर आंच लक मुहावरों नून नैबू चटाना और कहला बरेठा गदहा पर न चढेला का प्रयोग हुआ है ।

पानी का पंप आवेगा इंद्र भगवान की खुशामद की जरूरत नहीं कमला नदी में पंप लगा दिया । मशन स्टार्ट कर दिया और इंद्र भगवान को ही नून नैबू चटा रहे हैं।

रामपखारन संघ को रघू रामायनी का नखरा जरा भी पसंद नहीं जे बा से भर रात सारंगी बजाई और गवले गीत को बार बार गावेगा । इसी के खातिर इतना खुशामद ! सुबह से पांच हाली हमको घाट हा कम ने दौड़ाया है ।वही जो कहावत है नू कहला से बरेठा गधा पर नहीं चढता है ।

लोकगीतों के बिना आंच लकता की बात अधूरी है । उपन्यास में हर अवसर के लए लोकगीत गाए गए हैं।चाहे वह राजनीतिक जागरूकता हो, फसल की बुवाई हो , ब्याह शादी के अवसर हो, हर अवसर पर लोकगीत की प्रस्तुति हुई है। मेरीगंज में सूरज उत्सव मनाया जा रहा है। हाथी के साथ जुलूस निकाला गया है। सभी के लए खुशी का अवसर है। एक ग्रामीण उजाडु दास के द्वारा इस अवसर पर जोड़ा गया कीर्तन इस प्रकार है-

क थ ये चढिए आयेल

भारतमाता

क थ ये चढ़ल सुराज

चलु सखी देखन को !

क थ जे चढ़िए आयेल

बीर जमाहिर

क थ पर गंधी महाराज। चलु सखी देखन को !

बारिश का मौसम है। बारिश की छप- छपाहट और बादलों के बीच सोनाय झूमर बारहमासा गाता है -

अरे फागून मास रे गवना मोरा होईत

क पहिरु बसंती रंग हे

बाट चलैत आ के शया या संभारि बान्हू

अंचरा हे पवन झरे है ए ए ए !

एक अन्य प्रमुख तत्व आंच लकता का यह है क मेरीगंज गांव कई टोलों में बंटा हुआ

है।जैसे मा लक टोला , कायस्थ टोला, राजपूत टोला , यादव टोला।

मा लक टोला से यह खबर राजपूत टोली पहुंची । कायस्थ टोली के वश्वनाथ प्रसाद और तात्मा टोली के वीरांची को म लट्टी के सपाही पकड़ कर ले गए हैं.....

यादव टोली के लोगों ने खबर सुनते ही ब लया उर्फ बलदेव को गरफ्तार कर लिया।

पू र्णया जिले में ऐसे बहुत से गांव हैं । जो आज भी अंग्रेजी सरकार के समय नील की खेती करने के लए चुन लए गए थे । जिनके घुड़शाला आज भी हमें देखने को मल जाते हैं। उन्हीं गांव में से मेरीगंज भी एक गांव था । जहां पर अंग्रेज अधिकारी मार्टिन की कोठी आज भी देख सकते हैं ।आजादी के बाद भी उस कोठी से गुजरने वालों के लए वह उत्सुकता

का एक कारण है। और लोग अपनी बैलगाइयों को रुकवा कर मार्टिन की कोठी को देखते थे। फणीश्वर नाथ रेणु ने उपन्यास के दूसरे भाग में ही मेरीगंज गांव के प्राकृतिक अंचल का एक दृश्य प्रस्तुत किया है-

ऐसा ही एक गांव है मेरी गंज। रोहतट स्टेशन के सात कोस पूरब, बूढी कोशी को पार करके जाना होता है। बूढी कोसी के कनारे कनारे बहुत दूर तक ताड़ और खजूर के पेड़ों से भरा हुआ जंगल है। इस अंचल के लोग इसे नवाबी तड़बन्ना कहते हैं। कस नवाब ने इस ताड़ के वन को लगाया था, कहना कठिन है, ले कन वैशाख से लेकर आषाढ तक आस-पास के हलवाहे- चरवाहे भी इस वन में नवाबी करते हैं। तीन आने लबनी ताड़ी, रोक साल मोटर गाड़ी! अर्थात् ताड़ी के नशे में आदमी मोटर गाड़ी को भी सस्ता समझता है। तड़बन्ना के बाद ही एक बड़ा मैदान है जो नेपाल की तराई से शुरू होकर गंगा जी के कनारे खत्म हुआ है। लाखों एकड़ जमीन ! वंध्या धरती का वशाल आंचल इसमें दूब भी नहीं पनपती है। बीच-बीच में बालूचर और कहीं-कहीं बेर की झाइयां। कोस भर मैदान पर करने के बाद पूरब की ओर काला जंगल दिखाई पड़ता है। वही है मेरीगंज कोठी।

रेणु ने उपन्यास में मार्टिन और मेरी की प्रेम कहानी को बड़ी संक्षिप्तता से प्रस्तुत किया और कस प्रकार मार्टिन और मेरी की प्रेम कहानी मेरी गंज के लोगों के लिए एक प्रेम कथा के साथ-साथ भय का भी कारण बनी। मेरी की मृत्यु के पश्चात् मार्टिन की भी मृत्यु हो गई। और उन दोनों की कोठी; मेरीगंज की भुतहा दंतकथा का एक अंश आंचलकता को चित्रित करता है-

कोठी के बगीचे में अंग्रेजी फूलों के जंगल में आज भी मेरी की कब्र मौजूद है। कोठी की इमारत ढह गई है, नील के हौज टूट गए हैं; पीपल, बबूल तथा अन्य जंगली पेड़ों का एक घना जंगल तैयार हो गया है। लोग उधर दिन में भी नहीं जाते। कलमी आम का बैग

तहसीलदार साहब ने बंदोबस्त में ले लिया है, इस लए आम का बैग साफ सुथरा है। कंतु कोठी के जंगल में तो दिन में भी सयार बोलता है। लोग उसे भुतहा जंगल कहते हैं। ततमा टोले का नंदलाल एक बार ईंट लाने गया ईंट में हाथ लगाते ही खत्म हो गया था । जंगल से एक प्रेतनी निकली और नंदलाल को कोड़े से पीटने लगी सांप के कोड़े से । नंदलाल वहीं ढेर हो गया । बगुले की तरह उजली प्रेतनी!

नदियां आदिकाल से हमारी सभ्यता का अंग रही हैं । और नदियां हमारी पूजा और उपासना पद्धति का एक महत्वपूर्ण पक्ष भी है । मेरीगंज में भी कमला नदी है जिसकी एक धार्मिक मान्यता है, गांव में शादी ब्याह में, श्राद्ध में, भोज में लोग नदी में स्नान करते हैं; और कमला मैया को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं । पौष- पूर्णमा वहां का स्नान पर्व है , जिस दिन लोग स्नान करके धार्मिक कर्म से तुष्ट होते हैं । कंतु प्रत्येक अंचल की यह विशेषता उसकी एक दंतकथा होती है जो यह बताती है क प्रकृति ने वहां के लोगों को जितना दिया है, यदि प्रकृति रुष्ट हो जाए तो वह उसे छीन भी सकती है । इसकी एक झलक मेरीगंज की यह दंतकथा है -

गांव में कसी के यहां शादी - ब्याह या श्राद्ध का भोज हो , गृहपति स्नान करके, गले में कपड़े का खूंट डालकर , कमला मैया को पान - सुपारी से निमंत्रित करता था । इसके बाद पानी में हिलोरे उठने लगती थी , ठीक जैसे नील के हौज में नील मथा जा रहा हो । फर कनारे पर चांदी के थालों कटोरों और गलासों का ढेर लग जाता था । गृहपति सभी बर्तनों को गन कर ले जाता था और भोज समाप्त होते ही कमला मैया को लौटा आता था।ले कन सभी की नियत एक जैसी नहीं होती । एक बार एक गृहपति ने कुछ था लयां और कटोरा चुरा रखे । बस उसी दिन से मैया ने बर्तन दान बंद कर दिया और उस गृहपति का तो वंश ही खत्म हो गया - एकदम निर्मूल ! उस बिगड़ी नियति वाले गृहपति के बारे में गांव में दो

रायें हैं -राजपूत टोली के लोगों का कहना है, वह कायस्थ टोली का गृहपति था; कायस्थ टोली वाले कहते हैं, वह राजपूत था।

2.5 मैला आंचल में सामाजिक धार्मिक चेतना -

फणीश्वर नाथ रेणु ने मैला आंचल में सामाजिक स्थिति को बहुत ही नजदीकी ढंग से चित्रित किया है। गांव वालों का शोषण हो, उनका सीधापन हो, उनकी गरीबी हो, समाज में उनकी स्थिति हो उनके धार्मिक मान्यताएं हो सामाजिक चेतना हो, उनका जादू टोना में विश्वास, उनकी इच्छा शक्ति सबको बहुत ही निकट दृष्टि से देखा है। पूरे ग्रामीण परिवेश को इतनी सूक्ष्म दृष्टि से चित्रित करने में रेणु माहिर हैं। पाठक गांव का सीधा साक्षात्कार कर लेता है। पात्र के मन की बातों की अभिव्यक्ति पाठक के मानस पटल पर छा जाती है। मैला आंचल के माध्यम से रेणु उस आंचल की राजनीतिक चेतना को व्यक्त करते हैं। मैला आंचल उपन्यास के शुरुआत में ही तहसीलदार साहब मलट्टी वालों को डाली पहचाने जाते हैं। तहसीलदार साहब वीरांची दास से कहते हैं -

हिसाब लगाकर देख लो पूरे 50 रुपए का माल है या रुपया एक हफ्ते के अंदर अपने तोड़े और लोबिन के टोल से वसूल कर जमा कर देना वीरांची सामान सर से नीचे उतरकर झुक कर सलाम करता है सलाम सरकार...बकरा भी मे मया उठता है

उपन्यास के माध्यम से यह दिखाया गया है की शोषण की एक व्यवस्था बन चुकी है। सरकारी कर्मचारी के गांव में प्रवेश करते ही गांव का अभिजात वर्ग उनके लिए डाली लेकर पहुंच जाता है। जब क सरकारी कर्मचारी दूसरे कार्य के लिए गांव में आए होते हैं। गांव वालों की दृष्टि में उस समय अपने गांव बचाने का सबसे आसान तरीका स्वराजियों को बांधकर पुलिस के हवाले कर देना है। इसी लिए यादव टोली के लोग बालदेव को बांधकर सरकारी कर्मचारियों के सामने ले जाते हैं।

खम्हार में साल भर का लेखा-जोखा होता है। इसमें गांव के पूरे फसल चक्र में कसानों और मजदूरों द्वारा लया गया ऋण और उसे चुकता करने के तरीके का हिसाब कताब होता है। शोषण का यह चक्र राष्ट्रीय है। इसी प्रकार की व्यवस्था हम गोदान में भी देखते हैं। यह पूरे भारत की तस्वीर है बस हर क्षेत्र का तरीका अलग-अलग हो सकता है। लेकिन शोषण का यह चक्र लगभग पूरे भारत में देखा जा सकता है। आजादी के पहले इस क्षण को समाप्त करने के उद्देश्य से ही स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी गई कंतु आजादी मलने के पश्चात भी शोषण का यह चक्र समाप्त न हुआ। मैला आंचल में इस क्षण को इन पंक्तियों में बहुत अच्छे तरीके से प्रस्तुत किया गया -

अरे देशवा के सब धन-धन वदेशवा में जाए रहे

महंगी पड़त हर साल कृषक अकुलाए रहे

आजादी के पूर्व बहुत से बुद्धजीवी जिन्होंने कांग्रेस के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई लड़ी, कंतु आजादी के पश्चात शोषण की वही पुरानी व्यवस्था देखकर उनका कांग्रेस से मोह भंग हो गया। और उन्होंने एक नए वकल्प को खोजने का प्रयास किया आजादी के बाद की राजनीति जो प्रमुख रूप से समाजवादियों की राजनीति थी। जिसमें डॉक्टर लोहिया, जयप्रकाश नारायण प्रमुख नेता थे। और मैला आंचल में हम उनसे प्रभावित रही घटनाओं को देख सकते हैं। आजादी के बाद भी शोषण का चक्र जारी रहा है। इसका एक उदाहरण मैला आंचल में देखिए, रेणु व्यंग्य करते हैं-

सोने के अनाज से भरे हुए धरती के गुप्त भंडार का उद्घाटन करने वाले पर धरती माता का खूब स्वाभाविक है यह कारण है कि आज जमीन के मालकों ने जमीन के व्यवस्थापकों ने और धरती के न्याय ने धरती पर इनका कसी कस्म का हक नहीं जमाने दिया है जिस

जमीन पर उनके झोपड़ी हैं वह भी उनके नहीं हल में जुटा हुआ बल दिनभर खेत चार्ज करता है इस लए बैलों को भी धरती का हकदार कबूल कर लिया जाए यह कैसी बात है

रेणु ने इसमें बताने का प्रयास किया है क जो कसान धन-धान्य से देश को परिपूर्ण करता है। लोगों का पेट पालता है । इस कसान को देश का बुर्जुआ वर्ग पशुवत समझता है। और उसका उपयोग, उसके सीधेपन को अपनी राजनीति के लए प्रयुक्त करता है।

गांव वाले अत्यंत भोले और सरल स्वभाव के हैं। आजादी के तुरंत बाद कई प्रकार के अफवाहों का शकार होते हैं। और अपनी शिक्षा और सीधेपन के कारण बहुत से ऐसे मान्यताओं को मान लेते हैं जो क आज हास्यास्पद प्रतीत होती है । जैसे बिस्कुट के करारेपन को कालीचरण मान लेता है क इसमें अंडा मला हुआ है क्यों क उसको फोड़ने से कुरकुरे की आवाज आती है। कंतु उस कालीचरण में नैतिकता और अनैतिकता को पृथक करने का ववेक है। और वह समझता है की मठ के लए लर संह दास उ चत नहीं है। और वह लर संह दास को मठ से भगा देता है। गांव के सीधेपन की चर्चा डॉक्टर प्रशांत ममता को चट्ठी लखकर करते हैं-

गांव के लोग बड़े सीधे दिखते हैं । सीधे का अर्थ यदि अज्ञानी और अंध वश्वासी हो तो वास्तव में सीधे हैं । और जहां तक सांसारिक बुद्ध का सवाल है वह हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पांच सात बार ठग लेंगे । और तारीफ यह है क तुम ठगी जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लए मजबूर हो जाओगी।

मठ की स्थापना के आरंभ में जिस प्रकार एक सामाजिक और धार्मिक संबल का हेतु था। वह मठ समय आने पर कस प्रकार राजनीति और वकार के केंद्र बन गए । मैला आंचल उपन्यास में इसका वर्णन बहुत ही कुशलता से किया गया है। सामाजिक संगठन और नेतृत्व की भूमिका में मठ के योगदान को आज भी देखा जा सकता है । उपन्यास में रेणु मठों में

व्याप्त व्य भचार को उजागर करते हैं। मठ के महंत सेवादास के द्वारा कराए जा रहे भंडारे के बारे में यादव टोली का कसनू कहता है -

अंधा महंत अपने पापों का प्रायश्चित्त कर रहा है। बाबा जी होकर जो रखे लन रखता है। वह बाबा जी नहीं, ऊपर बाबा जी भीतर दगाबाजी। क्या कहते हो? रखैल नहीं दा सन

है। कसी और को सखाना! पांच बरस तक मठ में नौकरी क्या है । हमसे बढ़कर कौन जाने का मठ की बात और कोई देखे या नहीं देखे। ऊपर परमेश्वर तो है । महंत जब लक्ष्मी को मठ पर लाया था तो वह एकदम अबोध थी। एकदम नादान एक ही कपड़ा पहनती थी । कहां वह बच्ची और कहां पचास बरस का बुढ़ा। रोज रात में लक्ष्मी रोती थी ऐसा रोना क जिसे सुनकर पत्थर भी पघल जाए। हम तो सो नहीं सकते थे ,उठकर भीसों को खोलकर चराने चले जाते थे । रोज सुबह लक्ष्मी दूध लेने बथान पर आती थी उसकी आंखें कदम के फूल की तरफ सूजी रहती थी। रात में रोने का कारण पूछने का चुपचाप टुकुर-टुकुर मुंह देखने लगती थी। वैसा ही चांडाल है राम दसवा साला भी,अंधा होगा देख लेना। महंत एक बार चार दिन के लए पूर्णया गया था । हमने सोचा क आज रात तो लक्ष्मी चैन से सो सकेगी ले कन बेचारी बाघ के मुंह से छोटी तो बिलार के मुंह में गई। उसके बाद लक्ष्मी ऐसा बीमार पड़ी क मरते मरते बची।

आजादी के बाद के तुरंत भारत में छोटी-छोटी बीमारियों में हुई कस प्रकार भूत प्रेत और अंध वश्वास की धारणा लोगों में घर कर चुकी थी । और आम जन जीवन में कई प्रकार के दंत-कथाएं प्रचलित रहती थी । जो अशक्त जन समुदाय को एक दूसरे से बात करने के लए वषय भी उपलब्ध करवाते थे । और रोचकता भी बढ़ाते थे । इसी प्रकार की कई कहानियों का चत्र मैला आंचल में रेणु ने क्या है । गांव की राजनीति का एक केंद्र मठ

भी है । इसी लए मठ में आने वाले पात्रों के माध्यम से रेणु ने आडंबर को दिखाने का प्रयास किया है -

आचारज गुरु काशी जी से आए हैं

सभी महंत के जमींदार आचारज गुरु साथ में तीस मूरती आए हैं भंडारी, अधिकारी, ससेवक, खास, चलमची, अमीन, मुंशी, गवैया । साधुओं के दल से नागा साधु भी हैं । यद्यपि वह दूसरे मत को मानने वाला मूरती है, फिर भी आचारज गुरु उसको साथ में रखते हैं। बड़ा करोधी मूरती है। हाथ में छोटा सा कुल्हाड़ा रखता है। लंबी दाढ़ी जटा, सारे शरीर में भभूत और कमर में सर्प चांदी की सकड़ी! नंगा रहता है। महंत साहब के साथ जिस मठ पर जाता है वहां के महंत और अधिकारी को छट्ठी का दूध याद करा देता है। क्या मजाल की सेवा में कसी कस्म की तरौटी हो। इस लए आचारज गुरु जी उसको साथ में रखते हैं।

धार्मिक आडंबर और कुरीतियों के अतिरिक्त रेणु ने मैला आंचल में सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों का भी चित्रण बड़ी कुशलता से किया है। उन्होंने उपन्यास के कई दृश्यों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर भी प्रकाश डाला है। जितने भी टोले गांव में हैं सभी एक निश्चित अर्थव्यवस्था से संचालित होते हैं । चाहे वह मालक टोला हो, राजपूत टोला हो, यादव टोला हो, तात्मा टोला हो । गांव में अस्पताल के लए श्रमदान में आने वाली समस्याओं पर चर्चा करते हुए बालदेव के सामने जो बातें आती हैं । इसका एक चित्रण गांव की अर्थव्यवस्था को चित्रित करता है । इस दृश्य में भूमहीनों के दिनचर्या को रेणु ने प्रस्तुत किया है-

ततमा और दुसाध टोली के लोगों की बात जाने दीजिए। उनकी औरतें हैं, सुबह से दोपहरिया तक कमला में कादो पानी हिड़कर एक दो सेर गेंची मछली निकाल लाएंगी। चार सेर धान का हिस्सा लग जाएगा । बाबू लोगों के पुआल के टालों के पास धरती खरोंचकर, चूहे के

मांदो को छोड़कर भी कुछ धान जमा कर लेंगी। नहीं तो कोठी के जंगल में खमर आलू उखाड़ लाएंगी। रौतहट हाट में कटिहार मल के कुल्ली लोग चार आने सेर खमर आलू हाथों हाथ उठा लेते हैं।

उपन्यास में उस समय आजादी की लड़ाई का नेतृत्व करने वाले महात्मा गांधी , जवाहरलाल नेहरू, राजेंद्र प्रसाद और जयप्रकाश नारायण आदि का नाम आया है। बावनदास और बालदेव जैसे पात्रों का चित्रण कांग्रेस के आम कार्यकर्ता को ध्यान में रखकर किया गया है। गांधी जी की अहिंसा की नीति इन कार्यकर्ताओं के माध्यम से जनता के बीच में कस प्रकार पहुंच रही थी , रेणु जी ने यह दिखाने का प्रयास किया है। आजादी के पश्चात एक नए वकल्प की तलाश के लिए कई पार्टियों ने अपने घोषणा पत्र को जनता के सामने रखा। उन्हीं में से एक सोशलिस्ट पार्टी थी। जिसका नेतृत्व समाजवादी वचारधारा से प्रभावित था मैला आंचल गांव में सोशलिस्ट पार्टी का नेतृत्व कालीचरण यादव कर रहा था-

कामरेड कालीचरण और कामरेड वासुदेव! सुश लंग पार्टी ! रास्ते में कालीचरण वासुदेव को समझता है, यही पार्टी असल पार्टी है गरम पार्टी है क्रांती दल का नाम नहीं सुना था? बम फोड़ दिया फटाक से मस्ताना भगत सिंह। यह गाना नहीं सुने हो? वही पार्टी है। इसमें कोई लीडर नहीं। सभी साथी हैं, सभी लीडर हैं।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि रेणु ने अपने उपन्यास मैला आंचल में तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, राजनीतिक चेतना का कतने कुशलता से चित्रण किया है। गांव की राजनीति पर धार्मिक आंदोलन, राजनीतिक आंदोलन का क्या प्रभाव पड़ता है और आजादी के पूर्व के भारत तथा आजादी के पश्चात भारत में सामाजिक परिवर्तन कस प्रकार से हो रहा है यह दिखाने का प्रयास है। अंचल विशेष का होने के कारण आदिवासियों की सामाजिक राजनीतिक आर्थिक स्थितियों का वर्णन किया गया है।

2.6 मैला आंचल के पात्र

हिंदी साहित्य के इतिहास में यह पहला क्षण है। जहां पर मेरीगंज नामक एक अंचल उपन्यास का नायक है। रेणु ने सर्वप्रथम एक पछड़े अंचल को नायक बनाने की शुरुआत की। मैला आंचल में पात्रों की संख्या अधिक होने पर भी सभी उपन्यास की कहानी को वस्तुतः देने में योगदान देते हैं। मैला आंचल में बहुत से पात्र अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करने के पश्चात् भी उनकी एक अपनी व्यक्तिगत विशेषता है। उपन्यास के सभी पात्र आंचल के चरित्र निर्माण में योगदान देते हैं।

मैला आंचल में पात्रों का चित्रण कई स्तरों पर हुआ है। उपन्यास में प्रतिनिधि पात्र के साथ-साथ व्यक्तिपरक चरित्र का निर्माण भी हुआ है। उपन्यास में प्रभुत्वशाली वर्गों के चरित्र, पुरोहित वर्ग के चरित्र, मठ में उपस्थित चरित्र, स्त्री पात्र प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। उपन्यास के सभी चरित्र कहानी को बढ़ाने में योगदान देने वाले हैं।

उपन्यास के प्रभुत्वशाली वर्गों के प्रतिनिधि चरित्र हैं - तहसीलदार वश्वनाथ प्रसाद मलक, ठाकुर रामकृपाल सिंह, हर गौरी सिंह, खलावन सिंह यादव, दुलारचंद कापरा आदि। प्रभुत्वशाली वर्ग के चरित्र अपने स्वार्थ प्रियता, पाखंड, शोषण, अत्याचार और अंतरात्माहीन हैं। लेकिन इस वर्ग के चरित्र गांव के सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक एवं आर्थिक रूप से अपना प्रभुत्व रखते हैं। गांव के किसी भी सामाजिक और आर्थिक कार्यक्रम का नेतृत्व करते हैं। उपन्यास में रेणु ने तहसीलदार के चरित्र के दो अंतर्वरोधी रूप चित्रित किए हैं। एक पता के रूप में वह अत्यंत स्नेह युक्त कोमल हृदय चंता आतुर है। जबकि एक जमींदार के रूप में क्रूर स्वार्थी व अत्याचारी है। डॉक्टर प्रशांत ने उनके दोनों रूपों को देखा है। डॉक्टर स्वयं कमली से प्यार करता है। और शोषित वर्गों से सहानुभूति रखकर भी वह कई बातों में वश्वनाथ को पसंद नहीं करता है। लेकिन उससे नफरत नहीं कर पाता। यही वश्वनाथ प्रसाद

अपनी बेटी कमली और डॉक्टर प्रशांत का ववाह कर अपने नीचे काम करने वालों को पांच-पांच बीघा जमीन लौटाने की घोषणा करते हैं। तहसीलदार वश्वनाथ प्रसाद मलक की एकमात्र संतान कमली है, जो हजार बीघा जमीन के मालक हैं। लेकिन इस्पेंसरी के लिए सहयोग की बात आती है तो तहसीलदार वश्वनाथ सभी के योगदान की बात करते हैं। और धानुक टोली के मजदूरों को एक दिन की मजदूरी तक देने को तैयार नहीं होते। बलदेव के इस प्रस्ताव पर वश्वनाथ बाबू चढ़कर बोलते हैं-

धानुक टोली का तनुक लाल ? अपने को बड़ा काबिल समझता है। हर बात में वह एक न एक 'लेकन' जरूर लगाएगा। तुम भी तो बालदेव पूरे 'बम भोलानाथ' हो। उससे पूछा नहीं कि अस्पताल से सर्फ मालक लोगों की भलाई होगी क्या?

ठाकुर रामकृपाल सिंह राजपूत टोली के मुखिया हैं। इनके दादा महारानी चंपावती की स्टेट के सपाही थे। महारानी ने रामकृपाल सिंह के नाम अपनी बची हुई तीन सौ बीघा जमीन की लखा पड़ी कर दी। कायस्थ टोली के लोग राजपूत टोली को सपहिया टोली भी कहते हैं। बालदेव इस्पेंसरी का प्रस्ताव लेकर राजपूत टोली में जाते हैं तो हर गौरी उनसे अभद्रता करता है हर गौरी की अभद्र भाषा में बलदेव के प्रति वर्ग की घृणा साफ दिखाई देती है - अरे भाई, सभी काशी चले जाओगे ? पत्तल चाटने के लिए भी तो कुछ लोग रह जाओ। जेल क्या गए पंडित जमाहिरलाल हो गए। कांग्रेस ऑफिस में भोलटियरी करते थे, अब अंधों में काना बनकर यहां लीडरी छांटने आया है। स्वयंसेवक ना घोड़ा का दुम।

कंतु बलदेव की सामाजिक स्वीकार्यता और कांग्रेस के कार्यकर्ता के कारण राजपूत टोली के लोग हरगौरी और बालदेव के मामले को शांति से निपटाने का प्रयास करते हैं।

यादव टोली का प्रमुख पात्र कालीचरण है। कालीचरण नौजवान है उसे कांग्रेस के अहिंसात्मक नेतृत्व में दिलचस्पी नहीं है। वह मध्यम मार्गी नहीं है। उसके व्यवहार में लागलपेट नहीं है

। वह बालदेव का आदर तो करता है परंतु उसकी वचारधारा समाजवाद से प्रभावित है। इस लिए सोशलिस्ट पार्टी के बारे में बात करता है जहां नेता और कार्यकर्ता का भेद नहीं है, दोनों समान हैं -

कालीचरण नहीं, कामरेड कालीचरण। कामरेड माने साथी। हम सभी साथी, आप भी साथी। यहां कोई लीडर नहीं। सभी लीडर हैं, सभी साथी हैं।

कालीचरण यथास्थितिवादी नहीं है। मठ की महंती के मामले में जहां रामकृपाल सिंह , वश्वनाथ बाबू और बालदेव कोई लक्ष्मी की सहायता के लिए उपस्थित नहीं था । सभी नागासाधु की मनमानी , गाली गलौज सुन रहे थे कालीचरण ने लक्ष्मी का साथ दिया ।

मैला आंचल में मठ एक महत्वपूर्ण स्थान है। जहां से मेरीगंज की राजनीति और सामाजिक स्थिति प्रभावित होती है । मठ में सेवादास, रामदास , लर सिंहदास और लक्ष्मी प्रमुख पात्र हैं। जहां सेवादास मठ के महंत थे । लक्ष्मी दासी है रामदास और लर सिंह दास महंत के शिष्य हैं। रामदास पंद्रह साल पहले खजड़ी बजाने और भैंस चराने के लिए मठ में आ गया था। तब से वह मठ की जमीन की देखभाल करता है । सेवा दास की मृत्यु के पश्चात आश्रम गुरु अचारज ने लर सिंह दास को खबर लेने के लिए भेजा था । लर सिंह दास महंती का दावेदार हो जाता है। लर सिंह दास महंती हासिल करने के लिए जो चाल चलता है उसे देखकर किसी भी व्यक्ति के मन में मठ एवं साधुओं के प्रति घृणा उत्पन्न हो जाए। उपन्यास में लर सिंह दास, महंत और नागा साधु के माध्यम से मठों में हो रही राजनीति को उजागर किया गया है।

सेवादास और लक्ष्मी में उम्र के आधार पर दादा पोती का अंतर है कंतु मठ की दासी प्रथा के कारण सेवादास लक्ष्मी का शारीरिक शोषण करता है। जिसे सामाजिक और धार्मिक मान्यता मली हुई है। सेवादास की मृत्यु के पश्चात लर सिंह दास महंती के साथ-साथ

लक्ष्मी पर भी उत्तरा धकार प्राप्त करना चाहता है। कंतु कालीचरण के साहस से वह इस काम में असफल होता है। लक्ष्मी श क्षत न होने पर भी मठ में रहते हुए वह गांव की राजनीति को समझती है और समाज में मठ की स्थिति और निर्णायक भूमिका को भी समझती है । डस्पेंसरी निर्माण के समय महंत सेवादास द्वारा दिए गए भोज में लोगों के एक साथ उपस्थित न होने पर लक्ष्मी सभी के सम्मुख एकता का संदेश देती है। और सामाजिक भेदभाव मटाने के लिए लोगों का आवाहन करती है -

जोतखी जी ठीक कहते हैं।गांव के ग्रह अच्छे नहीं हैं। जहां छोटी- मोटी बातों को लेकर, इस तरह झगड़े होते हैं, जहां आपस में मेल मलाप नहीं, वहां जो कुछ न हो वह थोड़ा है।गांव के मुखिया लोग ही इसके लिए सबसे बड़े दोखी हैं । सतगुरु साहिब कहिन हैं -जहां मेल तहां स्वर्ग है।

मैला आंचल में श क्षत पात्रों में प्रशांत शीला और ममता प्रमुख हैं।प्रशांत प्रतिभाशाली वद्यार्थी है।उसे वदेश जाकर अध्ययन करने का मौका मलता है कंतु वह स्कॉलर शप पर भी वदेश न जाकर पूर्णया जिले के मेरीगंज गांव में आता है । जहां मलेरिया और कालाजार से होने वाली बीमारियों से मृत्यु पर शोध करता है । डॉ प्रशांत कुमार उपन्यास का केंद्रीय पात्र है । और रेणु के वचारों का प्रतिनिध है । डॉक्टर प्रशांत अपने कर्म में समाजवादी है, बुद्धजीवी है ,जिसने स्कॉलर शप की जगह भारत के पछड़े गांव का क्षेत्र अपने कर्मस्थली के लिए चुना । डॉ प्रशांत मेरीगंज के लोगों को जीवन दान देता है । और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों में शामिल होता है।और वश्वनाथ बाबू की पुत्री कमली को अपनी सं गनी बनाकर जीवन भर मेरीगंज में ही बिताने का निर्णय लेता है । उपन्यास में आदिवासी संथालों के वद्रोह को यदि कसी ने समर्थन दिया तो वो प्रशांत है। शीला को मनो वज्ञान

की समझ है और ममता हिंदू विश्व विद्यालय में पढ़ती है। प्रशांत ममता को पत्र लिखते हुए मेरी गंज के लोगों के बारे में बताता है -

गांव के लोग बड़े सीधे देखते हैं ; सीधे का अर्थ यदि अपढ़ अज्ञानी और अंध विश्वासी हो तो वास्तव में सीधे हैं वे। जहां तक सांसारिक बुद्ध का सवाल है वह हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पांच बार ठग लेंगे। और तारीफ यह है कि तुम ठगी जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लिए मजबूर हो जाओगी।

प्रशांत मेरी गंज में रहते हुए वहां के गरीबों की समस्याओं को समझता है। वह अपनी चकत्सा संबंधी सभी जिम्मेदारियों का पालन करता है। कुएं में दवा डलवाता है। बीमारियां फैलने से रोकता है, आसपास के गांव के मरीजों का उपचार करता है, किंतु उसे समझ में आ जाता है कि बीमारी, अशिक्षा, सामाजिक बुराइयों का एक ही कारण गरीबी है। प्रशांत अपने रिसर्च के बारे में लिखता है-

रिसर्च पूरा हो गया है। उन्होंने रोग की जड़ पकड़ ली है... गरीब और झालत... इस रोग के दो प्रतिवेदक हैं। वे संथालों के संघर्ष में उनके साथ शारीरिक रूप से निर्धारित बातें तो नहीं देते हैं, लेकिन संथालों को समझाते हैं कि तुम-लोग ही जमीन के असली मालक हो। कानून है, जिसने तीन साल तक जमीन का जोत बोया है, जमीन उसी की होगी। वे मूर्तिकार नाथ प्रसाद की बेटी कमला से प्रेम करते हैं, लेकिन वे मूर्तिकार नाथ के मूर्तिकारों से परिचित हैं। वे अपना विरोध भी करते हैं। कालीचरन से कहते हैं - साधु साहब मर्यादा में बड़े हैं। कमला की बीमारी के बारे में मुझे वहां सबसे ज्यादा चिंता-जाना है। वे मुझसे बहुत प्यार करते हैं... लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं साहब साहब के अन्याय का भी समर्थन करता हूँ या पक्ष लूंगा...।

प्रशांत मेरीगंज आने के पश्चात कई लोगों से मिलता है । उनमें से एक प्रमुख पात्र वश्वनाथ बाबू की लड़की- कमली है । जो युवा है , और वह प्रशांत के प्रेम में पड़ चुकी है लेकिन इस प्रेम में कमला के संवेदनशील और प्रबुद्ध होने का पता चलता है । डॉक्टर प्रशांत की प्रतीक्षा में वह शरतचंद्र, बं कम चंद्र आदि लेखन के साहित्य पढ़ जाती है। तथा अपने को उन चरित्रों से जोड़ कर देखती है। कमली भारतीय स्त्रियों की प्रतिनिधि चरित्र है जो प्रेम पर अपना सर्वस्व नष्ट कर सकती हैं। डॉक्टर प्रशांत के प्रेम में वह लोक-लाज संकोच सब कुछ भुला देती है। डॉ प्रशांत के साथ कमली का इतना मेल-जोल देखकर कमली की मां कहना चाहती है-

कई दिनों से मां चाहती है कि कमली को कहे , इतना हेलमेल अच्छा नहीं। लेकिन, अभी उसकी ओर देखते ही मां ने जाने क्या देखा कि मोम की तरह गल गई।..... दूधिया वर्ण और सुडौल बांहें , लंबे-लंबे बाल , सुगठित मांसपेशियां गौर आंखों में यह क्या ?..... कांप जाती है मां । यह क्या रे अभागी ! हतभागन ! आंचल को मैला मत करना बेटी , दुहाई! नहीं, नहीं वह भी कैसी है ! उसकी बेटी तो 'मां कमला ' है वह जो चाहे, करे!

इन पात्रों के अतिरिक्त अन्य अनेक पात्र हैं जो अपने-अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । बालदेव,बावनदास, सैनिक जी आदि राजनीतिक पात्र हैं जो कांग्रेस और सोशलिस्ट पार्टी का प्रतिनिधित्व करते हैं। बालदेव कांग्रेस कार्यकर्ता एवं स्वतंत्रता संग्राम में लड़ने के लिए तैयार रहता है किंतु वह गांधी जी के वचारों से प्रभावित है । और उसी रास्ते पर चलना चाहता है । बालदेव गांव के सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं । कई आलोचक मैला आंचल में बावनदास को केंद्रीय पात्र मानते हैं । बावनदास जिला कांग्रेस कमेटी की तरफ से मेरीगंज के कांग्रेस को मजबूत करने के लिए आए हैं । बावनदास कांग्रेस में दुलारचंद्र जैसे लोगों के प्रवेश से चंतित हैं। और उनका मानना है कि भारत माता इससे बेजार हो रही है

। बावनदास संथलों के भूम संघर्ष में उनके साथ खड़े रहते हैं । बावनदास के पास उनकी इंसानियत के अलावा कुछ भी नहीं है । बावनदास का महत्व उनकी मृत्यु के बाद अधिक दीर्घजीवी है । नित्यानंद तिवारी ने होरी और बावनदास की तुलना की है और कहा है- “होरी और बावनदास ऐसे सामान्य मनुष्य हैं, जिनके पास अपने आदम्यत के अलावा कोई ताकत नहीं है।”

बावनदास बहुत कम समय के लिए उपन्यास में आते हैं। कंतु बावनदास उस समय के स्वतंत्रता आंदोलन और वास्तविक जीवन से जुड़े हुए पात्र हैं । और गांधीवादी जीवन मूल्यों के प्रतीक हैं। जिस प्रकार आजादी के पश्चात गांधी जी की हत्या हुई थी । उसी प्रकार उपन्यास में बावन दास की हत्या होती है । क्योंकि बावनदास भी आजादी के बाद निहित स्वार्थ के रास्ते में एक रोड़ा थे।

कालीचरण यादव टोली का एक नौजवान युवा होने के साथ-साथ सोशलिस्ट पार्टी का क्रांतिकारी कार्यकर्ता है । जो आजादी के पश्चात संसाधनों के बंटवारे में समाजवादी दृष्टि से प्रभावित है । और वह बम फोड़ने वाले मस्ताने भगत सिंह से भी प्रभावित है।उसके जीवन में भी प्रेम का समावेश है । मंगल उसे अच्छी लगती है लेकिन अखाड़े के नियम के कारण वह उससे चार हाथ की दूरी बनाए रखता है।चरित्र कर्मकार भूमगत क्रांतिकारी है । जो साम्यवादियों के वर्ग संघर्ष में विश्वास रखता है।उसको अपने साथ कोई जोड़ना नहीं चाहता क्योंकि वहां सशस्त्र क्रांति में सक्रय है।

उनके अतिरिक्त डॉक्टर साहब का सहायक प्यारो और विश्वनाथ बाबू का नौकर रंजीत की अपनी मनोदशा है । वह अपने मालिक के प्रति वफादार हैं और उनका शुभ चाहने वाले हैं। लेकिन उनकी परिवर्ति और संस्कार से संबंधित वचार भी बीच-बीच में आते रहते हैं ।

2.7 मैला आंचल के कथानक का भाषा- शल्प

मैला आंचल की भूमिका में ही रेणु ने स्वीकार किया है कि यह एक आंचलिक उपन्यास है । हमने देखा है कि उपन्यास का कथानक एक आंचलिक विशेष को लेकर लिखा गया है । आंचलिक विशेष की सामाजिक राजनीतिक स्थिति , पात्रों का चयन , भाषा शिल्प सभी स्थितियों में मैला आंचलिक विशेष है । भाषा आंचलिक है, उसके अधिकांश पात्र आंचलिक भाषा का प्रयोग करते हैं । यद्यपि केवल भाषा के आधार पर ही किसी उपन्यास को आंचलिक मान लेना न्याय संगत नहीं है । किंतु आंचलिकता का एक प्रमुख पक्ष भाषा है । मैला आंचलिक की भाषा आंचलिक होने के कारण पाठक को पहली बार इतना समझ में नहीं आता किंतु फिर भी मैला आंचलिक हिंदी उपन्यास के इतिहास में मील का पत्थर है।

मैला आंचलिक में घटना बहुलता है । रेणु ने भली भांति बिखरे हुए कथा सूत्रों का संयोजन किया है। उपन्यास के कथानक किसी फिल्मी दृश्य की तरह तेजी से बदल रहे हैं । कहानी को बढ़ाने के लिए दृश्यात्मक कथा शैली का प्रयोग हुआ है । परिदृश्य संबंधी अंशों का प्रकटीकरण अत्यंत नाटकीय ढंग से हुआ है ।

रेणु ने मैला आंचलिक उपन्यास में आंचलिक भाषा का मानक उपस्थित किया है । उपन्यास की भाषा पर मथलांचल का प्रभाव है । रेणु ने ध्वनि और बिम्ब युक्त भाषा का प्रयोग करके घटना संबंधित दृश्य को जीवंत बना दिया है। मैला आंचलिक की भाषा के विविध आयाम हैं । रेणु ने उपन्यास में मथला आंचलिक के मेरीगंज गांव के आसपास के क्षेत्र में जनता द्वारा बोली जाने वाली भाषा को प्रयोग में लिया है । और आजादी के तुरंत पश्चात् जनता के शैक्षिक स्तर और उस समय की राजनीति , समाज और धर्म में प्रयोग किए जाने वाली शब्दावली को प्रयुक्त किया है । हमें खड़ी बोली और अंग्रेजी के कई शब्द ऐसे मिल जाते हैं । जो सुनने में पूरा रूप बदले हुए हैं । शब्दों की रोचकता बढ़ गई है । हम ऐसे शब्दों को देख सकते हैं-

म लट्टी	मलेटरी
गरफतार	गरफफ
जयहिंद	जाय हिंद
डस्ट्रिक्ट बोर्ड	डस्टीबोट
वाइसचेयरमैन	भैंसचरमन
इस्पिताल	अस्पताल
डॉक्टर	डागडर
राइट	रैट
वॉलेंटियर	भोलटियर
आंदोलन	अंडोलन
अनशन	अंट संट

इस प्रकार की रोचक भाषा का सबसे अधिक प्रयोग बालदेव और बावनदास की भाषा में होता है । बालदेव और बावन दास दोनों कांग्रेसी कार्यकर्ता हैं । और मेरीगंज से बाहर सबसे अधिक राजनीतिक जीवन का अनुभव इन्हें ही है ।

कसी भी अंचल की भाषा को वहां के लोकगीत समृद्ध बनाते हैं । मैला आंचल में भी स्वाभाविक रूप से लोकगीतों का प्रयोग हुआ है । मैला आंचल में हर अवसर के गीत हैं । मठ के प्रसंग में निर्गुण गीत के कई प्रसंग आते हैं । ऐसे ही एक प्रसंग में सेवा दास बालदेव बाबू को धूनी के पास बैठकर बीजक पढ़ने के लिए कहते हैं-

....बीजक बताओ बित्त को

जो बित्त गुप्ते होय

शब्द बतावे जीव को

बूझे बिरला कोय । ।

उपन्यास में लोक कथाओं को भी लोकगीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है । लोक में रानी सारंगा और सदा ब्रिज की कहानी बहुत प्रसिद्ध है । उपन्यास के ग्यारहवें खंड की शुरुआत खलासी जी के गीत से होती है । जो क सरंगा, लोरिक और सदाबृज की कहानी को लोकगीतों के माध्यम से सुनाते हैं-

सासु मोरा मरे हो , मरे मोर बहिनी से ,

मरे ननद जेठ मोर जी !

मरे हमर सबकुछ प लबरवा से ,

फसी गइली परेम के डोर जी !

उपन्यास के चौदहवें खंड में रोमांस का एक गीत डॉक्टर प्रशांत और कमली के प्रेम की पृष्ठभूमि में गाया गया है ।

या है । सड़क पर गाड़ी वाहनों का दल भौजिया गीत गाते हुए गाड़ी हांक रहे हैं । और गीत गा रहे हैं -

चढ़ली जवानी मोर अंग अंग फड़के से

कब होइहैं गवना हमारे रे भौजियाSSS !

उपन्यास में सोशलिस्ट पार्टी की मीटिंग में खड़ी बोली का एक राजनीतिक गीत भी रेणु ने लिखा है। कामरेड राजबल्ली, कालीचरण को लाल झंडा लेने के लिए कहते हैं । और गीत प्रस्तुत होता है-

उठ मेहनतकश अब होश में आ

हाथ में झंडा लाल उठा ,

जुल्म का नामोनिशान मटा

उठ होश में आ बेदार हो जा !

लोकगीत के साथ-साथ रेणु ने लोक संगीत की ध्वनियों का भी शब्दों में चित्रित किया है । ऐसे कई अवसर हैं जहां पर उपन्यास में ढोल बजाने का चित्र संगीत में बिम्ब द्वारा खींचा गया है । ढोलक का बिम्ब अधिकांश गांव और अखाड़ों के रूप में प्रस्तुत हुआ है । उपन्यास के तीसरे खंड के अंत में हर गौरी और बालदेव के ववाद के पश्चात कालीचरण बालदेव की रक्षा के लिए यादव टोली चल पड़ता है । कंतु उससे पूर्व ही राजपूत टोली के लोग इस ववाद को सुलझा लेते हैं । इस दृश्य में हम ढोल के थाप की आवाज सुन सकते हैं-

बात बनाने में दुल्हनिया से कोई जीत नहीं सकता । लाल पढ़ना नहीं समझे ?..... हा हा..... हा हा.....खी खी ! लाल पढ़ना !

ढाक ढिन्ना ,ढाक ढिन्ना !

मठ में प्रातः व संध्या बेला में भजन गायन के समय खंजड़ी की ध्वनियों का चित्रण किया गया । उपन्यास के चौथे खंड की शुरुआत में रामदास के व्यक्तित्व की चर्चा होती है । जिसमें कहा जाता है क रामदास बचपन से ही साधु की संगत में रहकर भी नहीं सुधरा कंतु उसके दो गुना की चर्चा होती है । एक तो वह सेवा अच्छी तरह करता है और दूसरा खंजड़ी बजाने में बेजोड़ है-

बस, दो ही गुण है - सेवा अच्छी तरह करता है और खंजरी बजने में बेजोड़ है ।

.....

.....

डम - ड मक - ड मक , डम - ड मक - ड मक !

इसी प्रकार खंड 15 में वद्यापति नाच में मृदंग का एक चित्रण है। खम्हार खुलने की खुशी में वद्यापति नाच रखा गया है। जो की बालदेव को पसंद नहीं है। बालदेव मृदंग की आवाज बंद करने के लिए कहते हैं, लेकिन मृदंग की आवाज पूरे वातावरण में गुंजायमान है

तिर कट धन्ना तिर कट धन्ना !

धन तक धन्ना , धन तक धन्ना !

धनक धनक धा ,

धक धक तिन्ना !

उपन्यास में कई स्थानों पर मुहावरों लोकोक्तियों और कहावतों का प्रयोग हुआ है। कई प्रकार की आंचलक कहावतें हैं। जो बाद में चलकर खड़ी बोली को समृद्ध करती हैं। झगड़ा का धर्म संकट , कुबेर का भंडार ,दिल में घर करना , गोलमाल करना , पेट में जलेबी का चक्कर , नेबुआ नून चटाना आदि मुहावरों का प्रयोग हुआ है

रेणु ने अपने उपन्यास की कहानी के लिए ववरण शैली का प्रयोग किया है। भाषा में खड़ी बोली , मैथिली , अंग्रेजी आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। संवाद की आवश्यकता के अनुसार उनके चरित्रों ने अपने पृष्ठभूमि के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है। संक्षेप में इनकी भाषा में वधता , जीवंतता और सृजनात्मकता है।

बोध प्रश्न

1. सही विकल्प द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

क. फणीश्वर नाथ रेणु..... युगीन उपन्यासकार हैं।(प्रेमचंद,प्रेमचंदोत्तर)

ख. मैला आंचल..... उपन्यास है। (आंचलक ऐतिहासिक)

ग. मैला आंचल उपन्यास का नायक..... है। (बावनदास,मेरीगंज)

घ. कालीचरण.....का क्रांतिकारी कार्यकर्ता है। (सोशलिस्ट पार्टी/कांग्रेस)

2. सही अथवा गलत का चुनाव कीजिए:

क. मैला आंचल 1954 में लखा आंचलक उपन्यास है। (सही/गलत)

ख. फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी मारे गए गुलफाम पर फिल्म बनी है। (गलत/सही)

ग. उदय शंकर भट्ट तथा नागार्जुन आंचलक उपन्यासकार हैं। (गलत/सही)

घ. परती परिकथा फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी वधा में लखी रचना है। (गलत/सही)

3. सही जोड़ों का मलान करें-

(क) मैला आंचल का प्रकाशन	(अ) कहानी
(ख) फणीश्वर नाथ रेणु	(ब) 1954
(ग) परती परिकथा की वधा	(स) आंचलक उपन्यासकार
(घ) तीसरी कसम की वधा	(द) उपन्यास

अभ्यास प्रश्न

1. मैला आंचल का नायक कसे कहा जा सकता है?
2. मैला आंचल की भाषा की व वधता पर चर्चा कीजिए।
3. मैला आंचल की पात्र योजना बताइए
4. मैला आंचल में आंचलकता के तत्त्व का वर्णन कीजिए।

सारांश

इस इकाई में आपने प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास के अंतर्गत आंचलकता और हिंदी उपन्यास के साथ ही हिंदी के आंचलक उपन्यासों में मील का पत्थर माने जाने वाले फणीश्वरनाथ रेणु के मैला आंचल उपन्यास का अध्ययन किया।

- अब आप प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास का वश्लेषण करने के साथ ही आंचलक उपन्यासों की वश्लेषताएं बताने में सक्षम हैं।
- मैला आंचल की कथानक और भाषा शल्प का वश्लेषण कर सकते हैं।
- मैला आंचल उपन्यास के पात्रों की वश्लेषताएं बता पाएंगे।
- मैला आंचल की सामाजिक धार्मिक चेतना का वश्लेषण कर सकते हैं।

2.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

1. क. प्रेमचंदोत्तर ख. आंचलक ग. मेरीगंज घ. सोशलिस्ट पार्टी
2. क. सही ख. सही ग. सही घ. गलत
3. क-(ब) 1954 ख-(स) आंचलक उपन्यासकार ग-(द) उपन्यास घ-(अ) कहानी

अभ्यासों के उत्तर

1. इस प्रश्न के उत्तर हेतु 2.3 का पुनः अध्ययन करें।
2. इस प्रश्न के उत्तर हेतु 2.4 का पुनः अध्ययन करें।
3. इस प्रश्न के उत्तर हेतु 2.6 का पुनः अध्ययन करें।
4. इस प्रश्न के उत्तर हेतु 2.4 का पुनः अध्ययन करें।

उपयोगी पुस्तकें

फणीश्वर नाथ रेणु, मैला आंचल, राजकमल प्रकाशन।

डॉ कृष्ण देव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद।

डॉ रामदरश मश्रा, हिंदी उपन्यास की अंतर्गता राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

राम वलास शर्मा, आस्था और सौंदर्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

संपादक, परमानंद श्रीवास्तव, मैला आंचल : पुनर्पाठ।

इंद्रनाथ मदान , आधुनिकता और हिंदी उपन्यास , राजकमल प्रकाशन ।

उपयोगी वेब लिंक्स

https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%B2%E0%A4%BE_%E0%A4%86%E0%A4%81%E0%A4%9A%E0%A4%B2%E0%A4%B0%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A5_%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%A3%E0%A5%81

<https://www.youtube.com/watch?v=9HSnY6d3oqQ>

http://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%B2%E0%A4%BE_%E0%A4%86%E0%A4%82%E0%A4%9A%E0%A4%B2_%E0%A4%AB%E0%A4%A3%E0%A5%80%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A5_%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%A3%E0%A5%81

http://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%B2%E0%A4%BE_%E0%A4%86%E0%A4%82%E0%A4%9A%E0%A4%B2_%E0%A4%AB%E0%A4%A3%E0%A5%80%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A5_%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%A3%E0%A5%81

http://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%B2%E0%A4%BE_%E0%A4%86%E0%A4%82%E0%A4%9A%E0%A4%B2_%E0%A4%AB%E0%A4%A3%E0%A5%80%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A5_%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%A3%E0%A5%81

खंड दो (Block) के बारे में-

परास्नातक हिंदी चतुर्थ प्रश्नपत्र कथा साहित्य का द्वितीय खंड हिंदी साहित्य की लोक प्रय
वधा कहानी पर आधारित है। इसके अंतर्गत आप दो इकाइयों का अध्ययन करेंगे।

द्वितीय खंड की इकाइयां इस प्रकार हैं-

Block - II	Unit- 1. कहानी • आख्यान और कथासंरचना • आख्यायिका, कथा और कहानी • प्रारं भक हिंदी कहानी Unit- 2. स्वाधीनता पूर्व हिंदी कहानी • 'उसने कहा था' चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' • 'कफन': प्रेमचंद • 'मधुआ': जयशंकर प्रसाद
--------------------------	--

इकाई 1 कहानी

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 आख्यान और कथा संरचना

1.3 आख्यायिका, कथा और कहानी

1.4 हिंदी की पहली कहानी

1.5 प्रारं भक हिंदी कहानी

1.6 सारांश

1.7 बोध प्रश्नों/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

- इस इकाई में हम आख्यान, अख्यायिका, कहानी, कहानी संरचना और हिंदी की प्रारं भक कहानी के बारे में जान सकेंगे।

- इस इकाई से हम आख्यान के बारे में जान सकेंगे।
- हिंदी में कहानी के प्रारंभ को जान सकेंगे।
- हिंदी में अख्यायिका और आख्यान के अंतर को समझ सकेंगे।
- हिंदी में प्रारंभक कहानी के प्रमुख लेखकों के बारे में जान सकेंगे।
- हिंदी की प्रमुख प्रसिद्ध कहानियों के बारे में जान सकेंगे।
- प्रारंभक हिंदी कहानियों के कथ्य और शिल्प के बारे में जान सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

प्राचीन समय से ही वाद-ववाद और संवाद को ज्ञान प्राप्त करने का या वास्तविक ज्ञान को प्रकाश में लाने का एक मुख्य तरीका माना गया है। यदि हम पश्चिमी देशों में देखें तो यूनान में सोफिस्ट इस कार्य में दक्ष थे। और यदि हम अपने देश में देखें तो प्राचीन ग्रंथों में हमें इसके सूत्र मिलते हैं। जब भी कोई ज्ञानी किसी विशेष ज्ञान को सामान्य व्यक्ति को समझाता है तो वह आख्यान का सहारा लेता है। आख्यान वषय को मनोरंजन पूर्ण बनाने का एक साधन है। इस वषय पर विद्वानों में मतभेद हो सकता है कि आख्यान में कल्पना तत्त्व अधिक है या ज्ञान तत्त्व। किंतु आख्यान विध से ज्ञान प्रदान करने का माध्यम बहुत पुराना है। आख्यान को समझने के लिए हमें सर्वप्रथम उसके अर्थ और अवधारणा को समझना पड़ेगा।

1.2 आख्यान और कथा की अवधारणा

संस्कृत भाषा में कहा गया है “आख्यायते इति आख्यानम्” अर्थात् जो कुछ कहा जाए वही आख्यान है। किंतु इसका संदर्भ इतिहास के संबंध में है। संस्कृत के कुछ आचार्य ने इसका अर्थ वर्णन, वृत्तान्त, कथा माना है। आख्यान का एक अर्थ बोलना भी है या किसी कहानी को बोलना। संस्कृत के आचार्य विश्वनाथ ने आख्यान का अर्थ पूर्ववृत्तकथन माना है जिसका

अगर सामान्य अर्थ कया जाए तो पुरानी कहानी को बोलना । संस्कृत साहित्य में यह भी माना गया है क स्वयं द्वारा देखे गए का कथन करना ही आख्यान है । आख्यान के अंतर्गत इतिहास, कहानी और पुराण आते हैं । रामायण, महाभारत आदि महाकाव्य में कथा तत्व प्रधान ऐतिहासिक घटनाओं और इतिवृत्तात्मक वर्णन को आख्यान कहा गया है। रामायण में पूरी राम कथा, अंतर्कथा और संदेश को आख्यान कहा गया है। महाभारत में नलोपाख्यान , रामोपाख्यान आदि इसके उदाहरण हैं। जैन आचार्य हेमचंद्र ने काव्य अनुशासन में एक समय में कही गई एक बात को आख्यान कहा है। इस प्रकार यदि हम देखें तो आख्यान कहानियों के लिए रूढ़ हो चुका है। हिंदी में आख्यान के लिए मथक शब्द का प्रयोग होता है, जिसे अंग्रेजी में **myth** कहते हैं। यह शब्द पुराण, कहानियां या अन्य प्राचीन कथाओं के लिए प्रयोग होता है। अंग्रेजी साहित्य में मथक को कोरी कल्पना माना जाता है। जब क हिंदी साहित्य में मथक में अलौकिकता का भी पुट होता है। इसी लिए हिंदी साहित्य या भारतीय साहित्य में वीर पुरुषों और देवताओं के लिए हजारों मथक आख्यान हैं ; जो प्राचीन काल से हमारे परंपरा और साहित्य में वद्यमान हैं। और उनकी एक लंबी वाचक परंपरा भी है । कथा का उद्देश्य सामान्य कोटि का मनोरंजन और उसके साथ-साथ कसी एक उपदेश की अभिव्यक्ति या कसी नैतिक मूल्य को प्रतिपादित करना होता है। जब क आधुनिक कहानी का उद्देश्य मनोरंजन या नैतिक मूल्य का प्रतिपादन नहीं रह गया है। अभी तो आधुनिक कहानी का उद्देश्य यथार्थ का चित्रण है और सामान्य जन जिस सत्य को न देख पाए उस सत्य को उजागर करना कहानी का उद्देश्य है। भारतेंदु युग के लेखकों ने कहानी के आधुनिक उद्देश्य को ध्यान में न रख पारंपरिक कहानी लिखी। जब क उनके बाद के कहानीकारों ने अपने-अपने स्तर पर सत्य को उजागर किया।

प्रायः हिंदी के वदयार्थी कथा और कहानी का प्रयोग एक ही अर्थ में करते हैं । संस्कृत की कथा ने ही प्राकृत और अपभ्रंश में कहा का रूप ले लिया । अपभ्रंश काव्य में भव्यकहा इसका एक प्रमुख उदाहरण है । अपभ्रंश में कहानी पद भी प्रचलित हुआ। वदयापत्ति की रचना कीर्तिलता में पुरुष कहानी कहा गया है । इस प्रकार संस्कृत की कथा प्राकृत और अपभ्रंश में कहा और धीरे-धीरे क्षेत्रीय बोलियों में कहानी के रूप में परिचित होते हुए खड़ी बोली में कहानी के रूप में प्रस्तुत हुआ।

यदि हम कहानी की संरचना की बात करें तो कई वद्वानों ने कहानी के आकार के आधार पर उसका वर्गीकरण किया है । छोटी से छोटी कहानी को हम कहानी और बड़ी से बड़ी कहानी को हम उपन्यास की संज्ञा दे सकते हैं । कंतु कहानी का छोटापन या बड़ा होना किसी मापदंड को निर्धारित नहीं करते । प्रायः कहा जाता है की छोटी कहानी एक बैठक में समाप्त हो जानी चाहिए । परंतु यह कोई उचित परिभाषा नहीं हुई । कुछ वद्वान शब्द संख्या के आधार पर कहानी का निर्धारण करते हैं । न्यूनतम 150 शब्द और अधिकतम 10000 शब्द को भी कहानी कहा जा सकता है । इस प्रकार कहानी के आकार को अगर हम एक मापदंड माने तो 150 से 300 शब्द तक की कहानी को लघु कथा ,1000 से 3000 शब्द संख्या वाली कहानी को कहानी और लंबी कहानी की शब्द संख्या 4000 से 15000 मानी जा सकती है ।

कहानी के आकार के पश्चात् हम इसकी संरचना पर विचार करेंगे । कहानी का उद्देश्य पाठक के ऊपर एक तीव्र प्रभाव का निर्माण करना है , जो किसी एक दृश्य या घटना के ऊपर लखी गई हो । इस प्रकार लघु कथा में एकल कथानक , दृश्य और सी मत संख्या में पात्र होते हैं । छोटी कहानियों का आरंभ और अंत थोड़े समय में ही हो जाता है । मानसरोवर भाग 1 प्राक्कथन में प्रेमचंद जी ने माना है क सबसे उत्तम कहानी का आधार किसी

मनोवैज्ञानिक सत्य पर होता है । यद्यपि कहानी में इतना अवकाश नहीं रहता कि हम उपन्यास की तरह कई चरित्र और कई घटनाओं का संयोजन कर सकें। कहानी में हम किसी एक चरित्र को या किसी एक घटना को आधार बनाकर लिखते हैं। कहानी का एकल प्रभाव , आकस्मिकता और तीव्रता गुण है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास में प्राचीन कथा साहित्य को दो भेदों में वर्गीकृत किया है - घटना प्रधान और मार्मिक। कथा बेताल पच्चीसी , सहासन बत्तीसी आदि को उन्होंने घटना प्रधान में और कालिदास , माधवन कामकंदला को उन्होंने मार्मिक कथाओं में स्थान दिया है । आचार्य शुक्ल के अनुसार कहानियों में घटनाओं की कड़ी सीधी न होकर जो झुंझ-झुंझ चलती है , वह नाटक का प्रभाव है। और आधुनिक कहानियों में यह विशेषता उन्हें पुराने कहानियों से अलग करती है। इसी आधार पर राजा शिव प्रसाद सतारों हिंद की कहानी राजा भोज का सपना को आचार्य शुक्ल ने आधुनिक कहानी कहा है । शुक्लजी का भी यही मानना था कि आधुनिक कहानी अपनी संरचना में पश्चिमी शैली से प्रभावित है। परंतु हिंदी कहानियों के कथ्य और शिल्प नितांत भारतीय हैं । यद्यपि किसी निश्चित संरचना को कहानी का मापदंड मान लेना उचित नहीं होता। कहानियों की संरचना स्वरूप निरंतर परिवर्तित हो रहे हैं। हैरान करने वाली घटनाएं सामान्यतः 19वीं शताब्दी की कहानी की पहचान होती थी। जो बाद की कहानियों के लिए अप्रासंगिक हो गई। कहानी के विकास में कहानी की संरचना किसी बात पर आधारित न होकर मनोवैज्ञानिक द्वंद्व के चारों ओर घूमने लगी। आश्चर्य और कौतूहलजनक घटनाओं को आधार बनाकर लिखे जाने वाली कहानियां का चलन समाप्त हो गया । संरचना की दृष्टि से चौथे दशक में हिंदी कहानी प्रवणता को पहुंच गई जिसका श्रेय प्रेमचंद , जैनेंद्र आदि को जाता है। पांचवें दशक में मंटो, बेदी; छठे दशक में अमरकांत, मोहन राकेश, कमलेश्वर,

राजेंद्र यादव, शेखर जोशी निर्मल वर्मा, रेणु ने कहानी की संरचना को नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया।

कहानी कसी एक वशेष सच्चाई या वशेष संबंध संवेदना को आधार बनाकर रची जाती है । कहानी में सी मत मात्रा में पात्र होते हैं । कहानी का केंद्रीय पात्र भी पूरी कहानी का वषय नहीं होता बल्कि उसे पात्र की कसी मा र्मक प्रसंग या कोई घटना या कोई मनोवैज्ञानिक द्वंद्व कहानी का वषय बनता है । कहानी में यथार्थ का चित्रण वस्तुतः न होकर सूक्ष्म रूप में होता है ।

1.3 आख्यायिका, कथा और कहानी

संस्कृत साहित्य में कहानी का अति प्राचीन पर्याय कथा है जो थोड़े बहुत अंतर के साथ आख्यान , उपाख्यान , आख्यायिका , वृत्त , इतिवृत्त ,गाथा ,वार्ता आदि नाम से प्रचलन में रहे हैं। साहित्य शास्त्र के आचार्य भामह ने सर्वप्रथम काव्य अलंकार में कथा, आख्यायिका और गाथा के लक्षणों में अंतर स्पष्ट किया है । उन्होंने गद्य से युक्त संस्कृत रचना को आख्यायिका माना है । जो शब्द-अर्थ और समस्त पद अवकार द्वारा श्रेय हो । भामह के अनुसार ही संस्कृत ,प्राकृत और अपभ्रंश की वह रचना जिसमें न तो द्वंद्व हो न उच्छ्वास हो कथा कहलाती है । आचार्य वश्वनाथ ने साहित्य दर्पण में तत्कालीन रचनाओं के आधार पर कथा और आख्यायिकाओं में कुछ भन्नता प्रदर्शित करते हुए आख्यान को कथा और आख्यायिका के अंतर्गत माना है । वश्वनाथ ने साहित्य दर्पण में आख्यान का उदाहरण नहीं दिया । कंतु कथा के प्रतिनिध ग्रंथ के रूप में कादंबरी और आख्यायिका के लए हर्ष चरित्र को उद्धृत किया है । जब क कादंबरी में आख्यान को आख्यायिका से भन्न रूप में प्रस्तुत किया गया है । आख्यान को ऐतिहासिक वृत्तांत माना गया है । इस प्रकार यदि हम संस्कृत साहित्य के वश्लेषण पर ध्यान दें तो कथा , आख्यान , पुरावृत्त शब्द

पर्यायवाची शब्द के रूप में प्रयुक्त हुए हैं । और पुराण में वृत्तांत अलौकिक-कथाओं को आख्यान कहा गया है । कंतु परवर्ती काल में आख्यान की संकल्पना में परिवर्तन हुआ । कहानी वधा की शुरुआत कहां से हुई यह कहना तो मुश्किल है , कंतु प्रेमचंद ने कहानी की शुरुआत के बारे में जो वचार व्यक्त कए हैं उससे सहमत हुआ जा सकता है -

कहानी का जन्म तो इस समय हुआ जब मनुष्य ने बोलना सीखा । ले कन प्राचीन कथा साहित्य का हमें जो कुछ ज्ञान है वह कथा सरितसागर , ईशा की कहानी और लैला मजनू आदि पुस्तकों से हुआ है । इन कहानियों का लक्षण कथा वै चत्र्य था । मानव हृदय को वै चत्र्य से सदा प्रेम रहा है । अनोखी घटनाओं को सुनकर हम आज भी प्रसन्न होते हैं।

सरस्वती के पहले ही अंक में प्रकाशित कशोरी लाल गोस्वामी की रचना इंदुमती को रामचंद्र शुक्ल जी ने और अन्य आलोचकों ने भी कहानी बताई ,उसे स्वयं कशोरी लाल गोस्वामी जी ने आख्यायिका कहा था । सबसे पहले श्यामसुंदर दास ने अंग्रेजी की शॉर्ट स्टोरी के लए हिंदी में आख्यान पद का प्रयोग किया । महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती का संपादन कार्य लेने के साथ ही नई कथा के लए आख्यान के पद को स्वीकार किया । अक्षय का खंड शीर्षक स्तंभ से खुद के चार आख्यान प्रकाशित कए । यहां ध्यान देने की बात यह है क यहां पर आख्यायिका और कथा में कोई अंतर नहीं किया गया । स्वयं रामचंद्र शुक्ल ने अपने रचना ग्यारह वर्ष का समय को आख्यान ही कहा था । जयशंकर प्रसाद ने भी अपनी छोटी रचनाओं को आख्यायिका ही कहा । 1936 तक आख्यायिका कहानी का प्रयोग साथ-साथ होता रहा और दोनों में लगभग कोई अंतर नहीं रह गया। प्रेमचंद ने 1908 में प्रकाशित अपनी कहानी संग्रह सोजे वतन की भूमिका में शॉर्ट स्टोरी के लए कहानी पद का प्रयोग किया। और वह अपनी कहानी को कभी आख्यान, कभी कहानी और कभी गल्प कहते रहे।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने हिंदी साहित्य के इतिहास में अंग्रेजी के शॉर्ट स्टोरी के तर्ज पर हिंदी में छोटी कहानी कहा। जिसे संक्षेप में कहानी भी कहा जाने लगा जो बाद में कहानीकारों इतिहासकारों और आलोचकों के लिए मान्य हो गया ।

1.4 हिंदी की पहली कहानी

हिंदी की पहली कहानी कौन सी है। इसमें विद्वानों में मतभेद है। इंदुमती को हिंदी की प्रथम कहानी माना जाता है। इसका वातावरण भारतीय होने के बावजूद इस पर शेक्सपियर के नाटक टेम्पेस्ट की छाया दिखाई पड़ती है। इसी लिए अधिकांश आलोचक इसको हिंदी की मौलिक कहानी न होने के कारण पहली कहानी भी नहीं मानते । इंदुमती का प्रकाशन 1900 में हुआ था। 1903 में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की ग्यारह वर्ष का समय का प्रकाशन हुआ। किंतु इससे भी पूर्व 1901 में छत्तीसगढ़ मंत्र में माधव प्रसाद सप्रै की कहानी एक टोकरी भर मट्ठी का प्रकाशन हुआ। देवी प्रसाद शर्मा इसे हिंदी की पहली कहानी मानते हैं। रामचंद्र शुक्ल बंग महिला की दुलाई वाली को हिंदी की पहली कहानी मानते हैं। जो 1907 में प्रकाशित हुई। बच्चन सिंह के अनुसार हिंदी की पहली कहानी कशोरी लाल गोस्वामी की प्रणयनी परिणय है जो 1887 में लिखी गई । किंतु लेखक ने स्वयं इस कहानी को उपन्यास कहा। राजेंद्र यादव ने हिंदी की पहली कहानी चंद्रधर शर्मा गुलेरी की उसने कहा था को माना क्योंकि 1915 में यह कहानी फ्लैशबैक तकनीक व स्थानीय वातावरण सजीवता के चित्रित होने के कारण मौलिक कहानी है । यहां यह भी उल्लेखनीय है कि जब हिंदी में कहानी लेखन आरंभ हुआ तो पश्चिम में कहानी अपने शीर्ष पर पहुंच चुकी थी। पश्चिम में सभी प्रसिद्ध कहानीकार 20वीं शताब्दी के आरंभ से पहले हो चुके थे। प्रेमचंद और प्रसाद हिंदी कहानी के विकास युग में दो आधार स्तंभ हैं इन्हीं दोनों के आधार स्तंभों का अनुकरण और प्रभाव कहानी के पूरे विकास युग पर प्रभावित रहा प्रेमचंद आदर्श उन्मुख यथार्थवादी

परंपरा के कहानीकार हैं, और प्रसाद भाव मूलक परंपरा के। गुलबहार और प्लेग की चुड़ैल में कहानी के तत्व कम हैं इस लए कहानी के तत्वों के आधार पर और मौलक प्रयास के आधार पर ग्यारह वर्ष के समय और दुलाई वाली ही पहली कहानी माने जाने योग्य हैं। इनमें आधुनिक कहानी के तत्व हैं। इन कहानियों में तत्कालीन सामाजिक जीवन के यथार्थ का चित्रण मिलता है। हिंदी कहानी में प्रसिद्ध प्राप्त करने वाले वंशभर नाथ शर्मा कौशिक की पहली कहानी रक्षाबंधन 1913 ईस्वी में सरस्वती में प्रकाशित हुई। इस प्रकार यदि हम कालक्रम और कथ्य के आधार पर निर्धारित करें तो माधव प्रसाद सप्रे की कहानी टोकरी पर मट्टी हिंदी की पहली कहानी प्रतीत होती है। इस प्रकार हम देख रहे हैं कि पहली मौलक कहानी पर वद्वानों का भन्न-भन्न मत है किंतु माधव प्रसाद सप्रे की एक टोकरी भर मट्टी को हिंदी की पहली कहानी मानने पर अधिकांश वद्वान सहमत हैं।

1.5 आरंभिक हिंदी कहानी

यह निर्ववाद रूप से मान्यता है कि इतिहास के आरंभ से ही कहानियों का चलन रहा है। उसके स्वरूप, संकेत भाषा आदि में भन्नता हो सकती है, किंतु प्रत्येक सभ्यता में कहानी कहने और सुनने की परंपरा रही है। वेद उपनिषद, रामायण, महाभारत और अन्य संस्कृत में हम इन कहानियों के उत्कृष्ट रूप को देख सकते हैं। इतिहास के क्रम में आगे बढ़ने पर राज्यों और साम्राज्यों के संघर्ष में एक दूसरे की सभ्यता का आदान-प्रदान हुआ और एक दूसरे की कहानियों से परिचय भी हुआ।

इस इकाई में हमें आरंभिक हिंदी कहानियों का अध्ययन करना है। आरंभिक हिंदी कहानियों में जिसे हम प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी भी कहते हैं। हिंदी की आरंभिक कहानी उपरोक्त परिदृश्य से प्रभावित कहानी है। हिंदी कहानी का आरंभ और उसका विकास भारतीय प्राचीन कथा, जातक कथा पंचतंत्र की तर्ज पर न होकर अंग्रेजी साहित्य की शॉर्ट स्टोरी की तर्ज पर

माना जाता है। पश्चिम की कहानी भारत में एक लोक प्रिय साहित्य वधा के रूप में प्रसिद्ध हो रही थी। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में पश्चिम का कहानी साहित्य अधिकतर पढ़ा जाने लगा। 19वीं सदी के अंतिम दशक और बीसवीं सदी के आरंभ के वर्षों में बांग्ला में कहानी लेखन प्रारंभ हुआ। हिंदी साहित्यकारों ने इसी से प्रेरणा लेकर कहानी लेखने की शुरुआत की। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हम खड़ी बोली के गद्य का विकास देखते हैं। और हिंदी गद्य के विकास के साथ-साथ हिंदी कहानी का विकास भी होता गया। सन् 1800 में अंग्रेजों ने फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। और कुछ अध्यापकों को हिंदी कहानी लेखने का काम सौंपा गया। लल्लू लाल कृत बेताल पच्चीसी और प्रेम सागर, सदल मश्र की नासकेतोपाख्यान इसी का परिणाम है, जिसे डॉक्टर लक्ष्मी सागर वाष्णीय ने हिंदी की पहली कहानी माना। इसी दौरान सदासुखलाल ने सुखसागर की रचना की। किंतु इन रचनाओं के कथा सूत्र संस्कृत से जुड़े हैं और इस कारण इसे मौलिक कहानी नहीं माना गया। इंशाल्ला खान की रानी केतकी की कहानी प्रयोग के रूप में लखी गई किंतु कलात्मक दृष्टि से इसका रचना वधान आधुनिक कहानी जैसा नहीं था। हमें भारतेंदु युग के पत्रिकाओं में 1867 से 1900 तक प्रकाशित रचनाओं में कथन तत्वों का समावेश तो मिलता है किंतु स्वतंत्र कथा रचना नहीं मिलती। आरंभिक हिंदी कहानियों का प्रारंभ 19वीं शताब्दी के अंतिम दशक में माना जाता है। इन अंतिम दशक में जिन तीन प्रमुख कहानियों का उल्लेख है जो बहुत प्रसिद्ध हैं - उनमें मुंशी इंशाल्ला खान की रानी केतकी की कहानी, राजा शिवप्रसाद सतारे हिंद की कहानी राजा भोज का सपना और भारतेंदु हरिश्चंद्र की कहानी अद्भुत अपूर्व स्वप्न है। कुछ इतिहासकारों और आलोचकों ने रानी केतकी की कहानी को हिंदी की पहली कहानी माना है। परंतु अधिकांश आलोचकों का मानना है कि इसमें आधुनिक कहानी के तत्व मौजूद नहीं हैं। हिंदी कहानी की वास्तविक शुरुआत 20वीं शताब्दी से माना जाता है। 1900

में सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन के साथ ही हिंदी कहानी का आरंभ माना गया है। 20वीं शताब्दी के आरंभ में इन कहानियों को प्रमुख रूप से माना जाता है - गुलबहार - कशोरी लाल गोस्वामी, प्लेग की चुड़ैल - मास्टर भगवानदास, वर्ष का समय - रामचंद्र शुक्ल, पं डत और पं डतानी - गरजा दत्त वाजपेई, धुलाई वाली - बंग महिला। 1911 ईस्वी में बनारस से इंदु पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। जयशंकर प्रसाद की पहली कहानी ग्राम का प्रकाशन इसी पत्रिका में हुआ। इसी पत्रिका में राधका रमण प्रसाद संह की कहानी कानों में कंगना का प्रकाशन 1913 में हुआ। आगे चलकर हिंदी कहानी में अत्यंत प्रसिद्ध होने वाले वशवंथ नाथ शर्मा कौशिक की कहानी रक्षाबंधन 1913 ई. सरस्वती में प्रकाशित हुई जो उनकी पहली कहानी थी। हिंदी कहानी को प्रमुख रूप से तीन युगों में बांटा गया है और निर्णायक आधार हैं मुंशी प्रेमचंद। इस प्रकार कहानी के प्रमुख तीन युग निर्धारित किए गए हैं -

प्रेमचंद पूर्व युग

प्रेमचंद युग

प्रेमचंदोत्तर युग

हिंदी की आरंभिक कहानी में हमने प्रेमचंद पूर्व युग की प्रवृत्तियों का अध्ययन किया। प्रेमचंद ने हिंदी कहानी को अत्यंत समृद्ध बनाया। उन्होंने हिंदी कहानी को एक नया धरातल दिया। प्रेमचंद ने हिंदी कहानी के कथ्य व कला दोनों दृष्टियों से कहानी को समृद्ध किया। प्रेमचंद का मूलनाम धनपत राय था। उन्होंने उर्दू में नवाबराय के नाम से कहानी लखी। प्रेमचंद ने 1904 ई से लेकर 1916 ई तक उर्दू में कहानी लखी। जैसा कि हम सब जानते हैं प्रेमचंद का युग स्वतंत्रता से पूर्व का युग था और उस समय प्रेमचंद युवा थे। देश में क्रांतिकारी आंदोलन का समय था। स्वाभाविक है कि प्रेमचंद भी इससे अछूते नहीं थे। उस समय के तमाम राष्ट्रवादी नेताओं का प्रेमचंद पर प्रभाव था। महात्मा गांधी का भी आजादी की लड़ाई में

प्रवेश हो चुका था और लोकमान्य तिलक की गरफ्तारी, टेक्सटाइल मजदूरों की हड़ताल के संबंध में हो चुकी थी। भारतीय मजदूर वर्ग की या पहली हड़ताल थी। 1905 में बंग-भंग, 1907 में कांग्रेस में फूट , 1908 में लोकमान्य तिलक को जेल। इन सबका प्रेमचंद पर प्रभाव पड़ा। प्रेमचंद साहित्यकार होने के साथ-साथ एक पत्रकार भी थे। हालांकि प्रेमचंद कभी जेल नहीं गए लेकिन उन्होंने अपनी कलम के माध्यम से देश सेवा की। उनकी कई कहानियों, उपन्यासों आदि में हम स्वतंत्रता आंदोलन, अंग्रेजी सरकार का अत्याचार, आंदोलन की व भन्न वचारधारा इन सब का वर्णन हमें देखने को मिलता है। साथ-साथ उन्होंने सामाजिक मुद्दों को भी अपने साहित्य में उठाने का प्रयास किया। जैसे -स्वदेशी, वधवा - ववाह, छुआछूत शिक्षा का अभाव, बाल - ववाह आदि। प्रेमचंद ने हिंदी कथा साहित्य को नए मानक, नए मानदंड दिए। उन्होंने अपने साहित्य में किसानों, मजदूरों आदि के जीवन को बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया है। प्रेमचंद एक प्रगतिशील लेखक थे, और वह प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़े हुए थे। प्रेमचंद का कथा साहित्य अपने पूर्ववर्ती कथा साहित्य से इस लिए भन्न है क्योंकि उन्होंने मनुष्यता, न्याय, समानता के धरातल पर अपनी लेखनी को आवाज दी। प्रेमचंद ने 1901 से अपना लेखन प्रारंभ किया उनके लेखन की शुरुआत उपन्यासों से हुई, कहानी उन्होंने बाद में लेखनी शुरू की। हंस के आत्मकथात्मक अंक में प्रेमचंद ने स्वयं स्वीकार किया है कि 1907 में उन्होंने सबसे पहले गल्प लेखना शुरू किया। उनकी पहली कहानी है संसार का सबसे अनमोल रत्न। यह कहानी 1907 ईस्वी में जमाना में छपी इस कहानी के साथ सात और उर्दू कहानियों को मिलाकर 1908 ईस्वी में सोजे वतन का प्रकाशन हुआ। जो उनका कहानी संग्रह था जिस पर अंग्रेजी सरकार ने रोक लगा दी और कहानियों को जब्त कर लिया। उस समय प्रेमचंद शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर पद पर थे और हमीरपुर जिले में तैनात थे। सोजे वतन के संबंध में प्रेमचंद बताते हैं कि प्रकाशन के बाद हमीरपुर

के जिलाधीश ने उन्हें दूसरे दिन अपने पास बुलवाया और उनके पास सोजे वतन की एक प्रति रखी हुई थी। जिलाधीश ने प्रेमचंद से पूछा - क्या यह तुमने लखी हुई है ? प्रेमचंद के हां कहने पर उन्होंने बिगड़ कर कहा -

तुम्हारी कहानियों में से डशन भरा हुआ है। अपने भाग्य को बखानों की अंग्रेजी अमलदारी में हो। मुगलों का राज्य होता तो तुम्हारे दोनों हाथ काट दिए जाते।

जिलाधीश की सलाह के बाद उन्होंने कुछ दिन तक लखना बंद कर दिया। नवाब राय और धनपत राय दोनों नाम अंग्रेजी सरकार के संज्ञान में थे। इसी लए जमाना के संपादक दयनारायण निगम ने उन्हें नया नाम प्रेमचंद दिया। प्रेमचंद 1916 तक उर्दू में ही कहानियां लखते रहे। **1916** में हिंदी में उनकी पहली कहानी पंच परमेश्वर प्रकाशत हुई। प्रेमचंद की पहली कहानी आदर्शोन्मुख थी और हृदय परिवर्तन की जो परंपरा आगे प्रेमचंद की कहानी और उपन्यासों में हमें दिखती है उसकी नींव पंच परमेश्वर कहानी ही है। इस कहानी के बाद उन्होंने आत्माराम कहानी लखी और उनकी प्रारंभिक कहानियों का संग्रह करके सप्तसरोज के रूप में कहानी संग्रह का प्रकाशन हुआ। प्रेमचंद ने लगभग 300 कहानी लखी । जो मानसरोवर के आठ भागों में संकलित है। इस प्रकार यदि हम देखते हैं तो प्रेमचंद की कहानी 1907 से लेकर 1920 तक एक दौर की और 1920 से लेकर 1936 तक दूसरे दौर की कहानी है। हम देख सकते हैं पहले दौर की कहानियों में राष्ट्रीय प्रश्न उठाए गए हैं। जब क दूसरे दौर की कहानी में सामाजिक और आर्थिक प्रश्न संबोधित करने का प्रयास है। इस प्रकार हम देख सकते हैं क प्रेमचंद की पहली कहानी दुनिया का सबसे अनमोल रत्न में देश प्रेम का जो उदात्त चित्र दिखाया गया है देशभक्ति के रूप में वह सबसे अनमोल है। इस कहानी में त्याग, बलदान, संघर्ष और साहस का वर्णन है। दिल फगार अपनी प्रेमका दिल फरेब के लए अपना सब कुछ छोड़कर निरंतर संघर्ष करते हुए प्रेम का ऊंचा आदर्श दिखाता है तो

राजपूत सपाही अपने देश की आजादी के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर देता है। देशप्रेम और प्रेयसीप्रेम दोनों को मिलाकर कहानी अंत में पाठक को प्रभावित करती है और देशप्रेम को दुनिया का सबसे अनमोल रत्न मानती है।

प्रेमचंद की अन्य राष्ट्रीय समस्याओं को संबोधित कहानियों में पंच परमेश्वर, नमक का दरोगा, दामुल का कैदी आदि प्रमुख हैं। पंच परमेश्वर में जुम्मन और अलगू चौधरी दोनों मत्र हैं परंतु न्यायधर्म पर जिस तरह प्रेमचंद ने दोनों को चित्रित किया है और व्यक्तिगत राग द्वेष से ऊपर उठकर जिस प्रकार पंचों को न्याय के लिए प्रेरित किया जाता है वह अपने शीर्षक कहानी पंच परमेश्वर को साकार करता है। अलगू चौधरी अपने न्याय के पद पर जुम्मन से मत्रता को कमजोरी नहीं बनने देता। ऐसे ही जब जुम्मन से पंच बनता है तो लोगों को लगता है कि अलगू चौधरी से अपना बदला लेगा परंतु जुम्मन शेख पंच परमेश्वर के आसन पर बैठा है और वह भी न्याय का साथ नहीं छोड़ता।

नमक का दरोगा भी इसी प्रकार की ईमानदारी, धर्म निष्ठा, कर्तव्यपरायणता और आदर्शवादी मूल्य की कहानी है। उर्दू में यह कहानी 1914 में प्रेम पचीसी में प्रकाशित हुई थी। बंशीधर अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा से पंडित अलोपी दिन की तथाकथित प्रतिष्ठित छवि को उजागर कर देते हैं। पंडित अलोपीदीन का हृदय परिवर्तित हो जाता है और वह बंशीधर की ईमानदारी से प्रभावित हो जाते हैं। इस प्रकार का आदर्शवाद प्रेमचंद की कई कहानियों में देखने को मिलता है। ईदगाह, बूढ़ी काकी, बड़े घर की बेटी, अलगूझा, बड़े भाई साहब, दो बैलों की कथा आदि ऐसी ही कहानियां हैं। किंतु इन कहानियों में आदर्शवाद, हृदय परिवर्तन के साथ-साथ कोई न कोई मनोवैज्ञानिक सत्य भी है।

प्रेमचंद की कहानी धीरे-धीरे कहानीपन के शिल्प से द्वंद्व के शिल्प में प्रवेश करती है। उनके आगे की कहानियों में आदर्शवाद, नैतिक मूल्यों की स्थापना आदि मौजूद तो हैं परंतु

कहानियों का मुख्य कथ्य वह नहीं है। प्रेमचंद की कहानी विकास यात्रा अपने ही मानकों को नए रूप और नए मानकों में बदलने की यात्रा है। प्रेमचंद अपने अंतर्वरोध को समझते हुए अपने रचनाकर्म में निरंतर सुधार करते हैं। इसी लिए प्रेमचंद के दूसरे दौर की कहानी का कथन और उद्देश्य उनके पहले दौर की कहानी से अलग है। इन कहानियों में प्रमुख हैं- समर यात्रा, दुस्साहस, शतरंज के खिलाड़ी, सवा सेर गेहूं, जुलूस आहुति आदि। यदि हम तत्कालीन राजनीतिक परिवेश देखें तो उस समय असहयोग आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन, स वनय अवज्ञा आंदोलन का समय था। और साथ-साथ सामाजिक सुधार आंदोलन का भी समय था। शतरंज के खिलाड़ी कहानी में मर्जा और मीर के माध्यम से वह स्वाधीनता की चेतना पर प्रकाश डालना चाहते हैं। समर यात्रा कहानी में एक पात्र आदर्शवाद और यथार्थवाद के बीच अंतर समझाता है। प्रेमचंद की कई ऐसी कहानी भी हैं जिसमें किसान, मजदूर जमींदारों के चंगुल में फंसे हैं। यही उस समय और समाज का यथार्थ था। सवा सेर गेहूं, ठाकुर का कुआं, सद्गति आदि ऐसी ही कहानी हैं।

यद्यपि प्रेमचंद की कहानियों के कारण ही इस युग का नाम प्रेमचंद युग रखा गया किंतु प्रेमचंद युग में ही उनके समकालीन बहुत से ऐसे कहानीकार थे जो प्रेमचंद की ही विचार की कहानी लिख रहे थे और कई ऐसे कहानीकार भी थे जो संवेदना की कहानियां की कह रहे थे, जिनमें से ज्यादातर कहानीकार प्रेमचंद के बाद अस्तित्व में आए किंतु इस प्रकार की कहानियों की शुरुआत प्रेमचंद युग में ही हो गई थी। इन कहानीकारों ने राष्ट्र, समाज आदि के प्रश्नों को अपनी कहानी का विषय न बनाकर मनुष्य मन की समस्याओं को अपनी लेखनी का विषय बनाया। प्रेमचंद के यहां भी कई कहानियां मानव मन और चरित्र को आधार बनाकर लिखी गई किंतु एक मनोवैज्ञानिक सत्य की तलाश जिस प्रकार जैनेंद्र अज्ञेय आदि का कहानीकारों ने प्रारंभ किया उसे आगे के कहानीकार और ऊंचाई के धरातल पर ले गए।

प्रेमचंद के समय में ही जिन कहानीकारों ने वस्तु और शल्प दोनों ही स्तरों पर कहानी को समृद्ध किया उनमें- जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुदर्शन, वशंभर नाथ शर्मा कौशिक, राजा राधका रमण प्रसाद सिंह, सयाराम शरण गुप्त, जी पी श्रीवास्तव, गोपाल राम गहमरी, भगवती प्रसाद वाजपेई, पदुमलाल पुन्नलाल बखशी, गोवंद बल्लभ पंत आदि प्रमुख हैं।

प्रेमचंद युग की कहानी की दो धाराएं हैं- पहली धारा, जो प्रेमचंद से होकर गुजरती है और दूसरी प्रसाद से होकर। प्रेमचंद धारा के कहानीकार कहानी में सामाजिक यथार्थ को दिखाते हैं और प्रसाद धारा के कहानीकार मनोवैज्ञानिक यथार्थ को। प्रसाद जी की कहानी वस्तु और शल्प दोनों स्तरों पर छायावादी काव्य चेतना से प्रभावित हैं। उनकी कहानियों में एक गीत संवेदना भी पाई जाती है - पुरस्कार, आकाशदीप, ममता, आंधी इसी प्रकार की कहानी हैं। प्रसाद की धारा में आगे चलकर मनोवश्लेषण को और सूक्ष्म बनाने का कार्य आगे जैनेंद्र और इलाचंद्र जोशी आदि कहानीकारों ने किया।

सन 1936 ईस्वी में प्रेमचंद की मृत्यु के पश्चात प्रेमचंद युग का अवसान हो गया। प्रेमचंद के पश्चात हिंदी कहानी पर दोवादों का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा उनमें से पहला है - प्रगतिवाद और दूसरा है मनोवश्लेषणवाद। प्रगतिवाद के अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक कार्ल मार्क्स थे और मनोवश्लेषणवाद के अंतरराष्ट्रीय प्रेरक सैगमंड फ्रायड थे। प्रगतिवाद से प्रभावित प्रमुख कहानीकारों में उपेन्द्रनाथ अशक, यशपाल प्रमुख हैं। जबकि मनोवश्लेषणवाद से प्रभावित कहानीकारों में जैनेंद्र और अज्ञेय प्रमुख हैं।

उपेन्द्रनाथ अशक की कहानी- कांगड़े का तेली, डाची, अंकुर, ठहराव प्रमुख हैं। यशपाल की कहानियों का पहला संग्रह पंजरे की उड़ान था। यशपाल की कहानियों में कुत्ते की पूंछ, परदा, आदमी का बच्चा आदि प्रमुख हैं।

जैनेंद्र की आरंभक कहानियों का संग्रह फांसी 1929 में प्रकाशित हुआ। इनकी प्रमुख कहानी फांसी, गदर के बाद, जयसंध आदि हैं। अज्ञेय का साहित्य के सभी वधाओं पर समान अधिकार था। वपथगा अज्ञेय का पहला कहानी संग्रह पत्रिका 1937 में प्रकाशित हुआ। आगे की प्रमुख कहानी हारीति, अकलंक, द्रोही, वपथगा आदि हैं।

सरस्वती पत्रिका के साथ-साथ हिंदी कहानियों में इंद्रु नामक पत्रिका का भी प्रमुख योगदान है। इंद्रु का प्रकाशन काशी से 1911 ईस्वी में प्रारंभ हुआ जिसमें सर्वप्रथम जयशंकर प्रसाद की कहानी ग्राम का प्रकाशन हुआ राधका रमण प्रसाद सिंह की कहानी कानों में कंगन का प्रकाशन 1913 में हुआ। हिंदी की आरंभक कहानी का युग अनुवाद और प्रयोग का कल रहा। हिंदी में कहानी के स्वाभाविक गति और मौलिकता सर्वप्रथम 1915 ईस्वी में दिखाई दी जब सरस्वती में पंडित चंद्र शर्मा गुलेरी की कहानी उसने कहा था का प्रकाशन हुआ। एक तरह से यह हिंदी के लिए बहुत ही उल्लेखनीय कहानी है और बहुत बड़े उपलब्धि है। इस कहानी में त्याग बलिदान का भारतीय परंपरा का चित्रण है। इस एक कहानी ने हिंदी कहानी के आरंभक इतिहास को अनुवाद और प्रयोग के प्रयत्नों से पृथक् कर एक समृद्ध धरातल पर उपस्थित कर दिया, हिंदी की आरंभक कहानियां में परिपक्वता का पट दे दिया इसमें हिंदी कहानी को स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान किया जो कि आगे आने वाले कहानीकारों के लिए प्रेरणा और मानक के रूप में स्थापित हुई।

हिंदी की आरंभक कहानी वातावरण घटना प्रधान कथानक चरित्र प्रधान संवेदना सभी दृष्टियों से आदर्श आदर्शात्मक, रोमानी के साथ-साथ उपदेश पूर्ण धरातल पर भी वचरण करती रहीं। रानी केतकी की कहानी में राजा उदय भान और रानी केतकी की प्रेम कथा है। इसमें वचरण है परंपरागत कस्सागोई है। इस कहानी में कहानीपन तो है किंतु आधुनिक कहानी का पुट छुट्टा प्रतीत होता है। आरंभक हिंदी कहानियों में हमें कई रूप मिलते हैं किंतु वह

अधिकांशतया द्वंद तक ही सी मत रहते हैं। उनमें एक सूक्ष्म आंतरिक द्वंद का अभाव दिखता है जो क आगे आने वाले कहानीकारों में मुख्य है। आरंभक हिंदी कहानियों में घटना प्रधानता होने के कारण कौतूहल पूर्ण है और यह घटनाएं चरित्र और परिस्थितियों को नियंत्रित करते हैं और अधिकांश कहानीकार घटना प्रधान कहानी लिखते हैं जिसमें राजा शवप्रसाद सतारे हिंद की कहानी राजा भोज का सपना, भारतेन्दु हरिश्चंद्र की कहानी अद्भुत अपूर्व स्वप्न प्रमुख है

बोध प्रश्न

1. सही विकल्प द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

क. इंदुमती कहानी के लेखक..... हैं (कशोरी लाल गोस्वामी/प्रेमचंद)

ख. उसने कहा था कहानी..... युगीन कहानी है।(प्रेमचंदपूर्व/प्रेमचंद)

ग.प्रसाद की पहली कहानी ग्राम का प्रकाशन..... पत्रिका में हुआ (सरस्वती/इंदु)

घ. रामचंद्र शुक्ल ने अपने ग्यारह वर्ष के समय को..... कहा है।(आख्यान/कहानी)

2. निम्न लिखत कथनों में सही अथवा गलत का चुनाव कीजिए:

क. आरंभक कहानियां सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुईं।(सही/गलत)

ख. राजा भोज का सपना के लेखक आचार्य शुक्ल हैं।(सही/ गलत)

ग. सोजे वतन कहानी संग्रह प्रसाद की कहानियों का संग्रह है। (सही/गलत)

घ. आचार्य शुक्ल ने इंदुमती को पहली आधुनिक कहानी माना। (सही/गलत)

3. सही जोड़ों का मेलन करें-

क. राजा भोज का सपना के लेखक अ. आचार्य शुक्ल

ख. इंदुमती

ब. शव प्रसाद सतारेहिंद

ग. ग्यारह वर्ष का समय

ग. प्रेमचन्द की पहली हिंदी कहानी

घ. पंच परमेश्वर

घ. सरस्वती में प्रकाशित

अभ्यास प्रश्न

1. आख्यान के तात्पर्य को स्पष्ट कीजिए।
2. प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी के विकास और स्वरूप का ववेचन कीजिए।
3. प्रेमचंद की कहानियों में उत्तरोत्तर विकास दिखाई देता है उनकी कहानियों में आदर्श और यथार्थ के द्वंद्व को चित्रित कीजिए।

1.6 सारांश

- आपने इस इकाई को ध्यान से पढ़ा होगा तथा उसका ववेचन वश्लेषण किया होगा।
- इस इकाई को पढ़कर अब आप आख्यान और कथा संरचना से भली-भांति परिचित हो गए होंगे। आख्यान, आख्यायिका तथा कथा और कहानी के तात्पर्य और उनके बीच झीने अंतर से अवगत हो गए होंगे तथा इनका वश्लेषण करने में सक्षम हो गए होंगे।
- प्रारंभिक हिंदी कहानियों की वश्लेषताओं तथा कहानीकारों की कहानी कला की वश्लेषताओं से परिचित हो गए होंगे तथा इस आधार पर आप प्रारंभिक कहानियों की वश्लेषताओं के बारे में बताने में और वश्लेषण करने में सक्षम हो गए होंगे।

1.7 बोध प्रश्न/अभ्यासों के उत्तर

1. क. कशोरी लाल गोस्वामी ख. प्रेमचंदपूर्व ग. इंदु घ. आख्यान
2. क. सही ख. गलत ग. गलत घ. सही
3. क- ब. शव प्रसाद सतारेहिंद ख- घ. सरस्वती में प्रकाशित

ग- अ. आचार्य शुक्ल

घ- ग. प्रेमचन्द की पहली हिंदी कहानी

अभ्यासों के उत्तर

3. इस प्रश्न के उत्तर हेतु 1.2 का पुनः अध्ययन करें
4. इस प्रश्न के उत्तर हेतु 1.5 का पुनः अध्ययन करें
5. इस प्रश्न के उत्तर हेतु 1.5 का पुनः अध्ययन करें

उपयोगी पुस्तकें

मधुरेश : सल सला, प्रकाशन संस्थान , दिल्ली ।

वश्वनाथ त्रिपाठी : कुछ कहानी : कुछ वचार , राजकमल प्रकाशन ।

गोपाल राय : हिंदी कहानी का इतिहास , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली ।

डॉ सत्यकाम : नई कहानी नए सवाल , अनुपम प्रकाशन , पटना ।

ब्लॉक II

इकाई II स्वाधीनता पूर्व हिंदी कहानी

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 उसने कहा था: सारांश

2.2.1 उसने कहा था: पात्र योजना

2.2.2 उसने कहा था: शल्प

2.3 कफ़न: सारांश

2.3.1 कफ़न: पात्र योजना

2.3.2 कफ़न: शल्प

2.4 मधुआ: सारांश

2.4.1 मधुआ: पात्र योजना

2.4.2 मधुआ: शल्प

2.5 सारांश

2.6 बोध प्रश्न के उत्तर

2.0 उद्देश्य

- उसने कहा था कहानी का सारांश जान सकेंगे
- कहानी के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण कर सकेंगे
- कहानी के शल्पगत विशेषताएं जान सकेंगे
- कफन कहानी का सारांश जान सकेंगे
- कफन कहानी के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण कर सकेंगे
- कफन कहानी का शल्प जान सकेंगे
- मधुआ कहानी का सारांश जान सकेंगे
- मधुआ कहानी के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण कर सकेंगे
- मधुआ कहानी का शल्प जान सकेंगे

2.1 प्रस्तावना

पछले इकाई में हमने आख्यान, आख्या का कथा में अंतर का अध्ययन किया तथा हिंदी की प्रारंभिक कहानी के बारे में भी अध्ययन किया इस इकाई में हम स्वाधीनता पूर्व की तीन प्रमुख कहानियों के बारे में पढ़ेंगे इस इकाई में जिन तीन कहानियों को हमें पढ़ना है उनके कहानीकार हिंदी कहानी के इतिहास में युग निर्धारित करने वाले कहानीकार हैं पहली कहानी चंद्र शर्मा गुलेरी की कहानी उसने कहा था जिसका प्रकाशन 1915 ईस्वी में सरस्वती पत्रिका में हुआ था दूसरी कहानी मुंशी प्रेमचंद की कहानी कफन है जिसका प्रकाशन 1936 ईस्वी में हुआ था तीसरी कहानी जयशंकर प्रसाद की है जिसका प्रकाशन आंधी कहानी संग्रह में सन 1931 में हुआ था ।

चंद्रधर शर्मा गुलेरी प्रेमचंद पूर्व युग के एक प्रमुख कहानीकार हैं। गुलेरी जी ने मात्र तीन कहानियां लखी बुद्धू का कांटा सुखमय जीवन उसने कहा था इन्हीं तीन कहानियों ने गुलेरी जी को हिंदी कहानी के इतिहास में अमर बना दिया गुलेरी जी की कहानी उसने कहा था ।

2.2 उसने कहा था: सारांश

उसने कहा था कहानी की शुरुआत अमृतसर के एक बाजार से होती है कहानी का समय 19वीं शताब्दी का अंतिम दशक संभवत 1890 के आसपास का है । अमृतसर के बाजार में 12 वर्षीय लड़का और 8 वर्षीय लड़की की मुलाकात होती है । दोनों सख्त हैं। लड़का लड़की से पूछता है तेरी कुड़माई हो गई लड़की धत कहती है और भाग जाती है दोनों बच्चों में थोड़ा परिचय भी हो जाता है मलने का यह सल सला चलता रहता है लड़का हर बार लड़की से यही पूछता है तेरी कुड़माई हो गई लड़की जवाब देती है धत इस पूछने और बताने में ही उनके बीच एक अनकहा मधुर संबंध का रूप लेने लगता है जिसे अपने कम उम्र के कारण नहीं जान पाए एक दिन इसी तरह मलने पर जब लड़का कुड़माई के बारे में पूछता है तो लड़की जवाब देती है हां हो गई लड़के को लड़की के इस उत्तर से आघात लगता है वह समझ नहीं पाता क वह क्यों बदल गई है और वह गुस्से में कई लोगों से झगड़ पड़ता है कहानी का पहला भाग यहीं समाप्त हो जाता है यहां तक गुलेरी जी ने दो कशोर उम्र की ओर बढ़ते बच्चों के स्नेह संबंध को बड़े ही सुंदर ढंग से चित्रित किया है गुलेरी जी इस कहानी को यहीं छोड़ देते हैं

कहानी के दूसरे भाग की घटना का आरंभ लगभग 25 वर्ष बाद होता है प्रथम विश्व युद्ध के कल से फ्रांस में भारतीय सेवा इंग्लैंड की ओर से जर्मनी के खिलाफ लड़ने के लिए तैनात है इसमें लहना सिंह भी हैं जो क वही 12 वर्ष का बालक एक सेना का नौजवान सपाही है

कंतु इस बात का पता पाठक को लगभग कहानी के मध्य में पता लगता है । कहानी बिल्कुल नए धरातल पर आगे बढ़ती है। युद्ध के मैदान पर सपाही अपने अपने मोर्चे पर हैं। इनमें सूबेदार हजारा संह है, उनका बेटा बोधा संह है, लहना संह है, इसके अलावा भी और कई पात्र हैं लहना संह चाहता है क युद्ध के इन स्थितियों में पड़े रहने से अच्छा है क जल्दी से लड़ाई शुरू हो और हम जर्मन फौज पर हमला कर दें। हजारा संह का बेटा बोधा संह बीमार है लहना संह उसका काफी ध्यान रखता है और उसकी देखभाल करता है। यहां अभी हमें नहीं मालूम क लहना संह उसका इतना ध्यान क्यों रख रहा है। सपाहियों की आपसी बातचीत से मालूम पड़ता है क यह सपाही जो कसान परिवार के हैं उनके सपने भी कसी जीवन से जुड़े हैं लहना संह की इच्छा यह है क युद्ध समाप्त होने के पक्ष पर अपने आम के बगीचे में अपने भतीजे कीरत संह के साथ आराम से रहेगा । सैनिकों के हिसाब से बातचीत के साथ कहानी का दूसरा भाग भी खत्म हो जाता है।

कहानी का तीसरा भाग फर एक नया मोड़ लेता है। यहां हम देखते हैं क पहले दो भाग केवल कहानी की पृष्ठभूमि और पात्रों के परिचय बताते हैं तीसरे भाग में कहानी का विकास होता है यहां लपटन साहब नाम के एक नए पात्र का प्रवेश होता है जो हजारा संह को आदेश देता है क वह एक मील आगे 50 जर्मन सैनिकों की टुकड़ी पर आक्रमण करें और इसके लिए वह 10 सैनिकों को छोड़कर शेष सभी को अपने साथ ले जाए। बोधा संह की बीमारी के कारण सूबेदार की इच्छा समझ कर लहना संह वहीं रह जाता है। इसी दौरान लहना संह लपटन साहब से बात करने लगता है और बातचीत से लहना संह तत्काल समझ जाता है क वह अंग्रेज अफसर नहीं वरन कोई जर्मन जासूस है। इस नाटकीय मोड़ पर कहानी का यह भाग यहीं समाप्त होता है। नए भाग में लहना संह अपनी बुद्धिमानी का परिचय देते हुए तत्काल एक सपाही को हजारा संह के पास भेज देता है और खुद उस

जर्मन को काबू करने की कोशिश करता है लेकिन उसी दौरान जर्मन सपाही की पस्टल से निकली गोली लहना सिंह की जांघ पर लग जाती है। बोधा सिंह पस्तौल की आवाज से पूछता है क्या हुआ लेकिन लहना सिंह उसे वास्तविकता नहीं बताता। इसी समय 70 जर्मन सैनिक उस खाई पर हमला कर देते हैं। लहना सिंह वीरता पूर्वक उनका सामना करता है तभी हजार सिंह की टुकड़ी भी वहां पहुंच जाती है और इस तरह दो तरफ से घिर जाने के कारण जर्मन सैनिक मारे जाते हैं। इस लड़ाई में लहना सिंह घायल हो जाता है वह अपना घाव हजार सिंह और बोधा सिंह से छुपाता है। जब उसकी सहायता के लिए डॉक्टर और बीमार ढोने वाली गाइयां पहुंचती हैं तो लहना सिंह गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद खुद ना जाकर हजार सिंह और बोधा सिंह को भेज देता है। यहां लहना सिंह सूबेदार से कहता है सूबेदारनी को चट्ठी लिखना तो मेरा माथा टेकना लिख देना और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझे उन्होंने जो कहा था वह मैंने कर दिया। यहां कहानी का चौथा भाग खत्म हो जाता है। कहानी का पांचवा भाग और अंतिम भाग कथा का सबसे महत्वपूर्ण अंश है। लहना सिंह खाएं में पड़ा है और अंतिम सांस ले रहा है। उसके साथ उसका साथी वजीरा सिंह है। उसे एक-एक कर पछली घटनाएं याद आने लगती हैं। गुलेरी की कहानी का चरम उत्कर्ष यहां देखते हैं। फ्लैशबैक शैली का प्रयोग करते हुए उन्होंने लहना सिंह के जीवन के पहले की घटनाओं को पाठकों के सामने खोला है, लेकिन यहां अतीत और वर्तमान इस तरह मले हैं कि लगता है जैसे हम एक साथ दोनों को देख रहे हैं। पहले उसे बचपन की वह घटना याद आती है जब उसने अमृतसर बाजार में लड़की से पूछा था तेरी कुड़माई हो गई। बचपन की यह याद बचपन के साथ ही वलीन हो गई थी। लहना सिंह सब कुछ भूल गया था लेकिन 25 साल बाद इस लड़की से लहना सिंह की मुलाकात होती है जो अब सूबेदार हजार सिंह की पत्नी है लहना सिंह को बचपन के वह दिन याद आते हैं और उन दिनों के

साथ जुड़ी वह लड़की भी जो अब सूबेदारनी है और एक जवान बेटे बोधा संह की मां है। सूबेदारनी का बचपन के उन यादों और लहना संह की सूरत को मन में संजों रखना लहना संह के लिए सुखद आश्चर्य का अनुभव है। इसके बाद लहना संह को सूबेदारनी के साथ हुई सारी बातें याद आती हैं। सूबेदारनी उसे याद दिलाती है कि बचपन में उसने एक बार अपनी जान जो खम में डालकर उसे बचाया था। वह लहना संह से प्रार्थना करती है कि युद्ध के मोर्चे पर वह उसी तरह उसके पति और पुत्र की रक्षा करे। सूबेदारनी अपना आंचल पसार कर दोनों की प्राण रक्षा की भीख मांगती है। सूबेदारनी की यह बातें युद्ध के मैदान में लहना संह के उत्साह और साहस को बनाए रखती है और सूबेदार और उसके बेटे की सेवा के लिए लहना संह हमेशा उपस्थित रहता है। और अंत में अपने प्राणों को त्याग कर सूबेदारनी को दिए वचन को निभाते हैं। सारी कहानी लहना संह के चरित्र के ऐसे पहलू को उजागर करता है जो एक अनोखे मानवीय प्रेम को अत्यंत करुणापूर्ण बना देता है। लहना संह मर जाता है शायद बच भी सकता था अगर वह हजारों संह और बोधा संह को भेजने की बजाय खुद अस्पताल की गाड़ी से चला जाता क्योंकि लहना संह की दशा हजारों संह और बोधा संह से ज्यादा खराब थी किंतु अपने घाव को छुपा कर वह उन्हें अस्पताल की गाड़ी से भेज देता है और खुद मरने के लिए पीछे रह जाता है। अंत में वह मर भी जाता है लेकिन उसका यह प्रेम सर और त्याग उसे कहानी में अमर बना देता है। लहना संह की मौत अत्यंत साधारण मौत है। कहानी की दृष्टि से वह अत्यंत वस्मरण नहीं है किंतु ब्रिटिश सेवा के लिए वह सिर्फ एक सपाही की मौत है।

इस तरह यह कहानी लहना संह के त्रासद अंत के साथ खत्म हो जाती है।

2.2.1 उसने कहा था: पात्र योजना

उसने कहा था कहानी में कई पात्र हैं- जैसे सूबेदार हजारा सिंह, सूबेदारनी, उसका बेटा बोधा सिंह, वजीरा सिंह, लपटन साहब, लहना सिंह। कंतु इस कहानी के दो प्रमुख पात्र हैं। लहना सिंह और सूबेदारनी तथा हम दो मुख्य पात्रों के चरित्र का वश्लेषण करेंगे ।

लहना सिंह

लहना सिंह का पहला परिचय पाठक से अमृतसर के बाजार में होता है। उसकी उम्र 12 वर्ष व स्वभाव से शरारती और चुलबुला है। वह अपने मामा के यहां आया हुआ है। बाजार में ही उसकी मुलाकात 8 वर्ष के लड़की से होती है। शरारतपन के कारण ही वह पूछता है तेरी कुड़माई हो गई। लहना सिंह बार-बार लड़की से पूछता है और इसी से उसका संबंध बन जाता है, ले कन मजाक मजाक में पूछा गया सवाल उसके दिल में उस अनजान लड़की के प्रति प्रेम पैदा कर देता है। कंतु उम्र कम होने के कारण उसको यहां आकर्षक समझ नहीं आता, ले कन जब लड़की की सगाई हो जाती है तो उसके हृदय में आघात लगता है। उस लड़की के प्रति उसका लगाव गुस्से के रूप में बाहर आता है। लहना सिंह के चरित्र की एक और वशेषता है उसका साहस। अपनी जान जो खम में डालकर वह उस लड़की की जान बचाता है। यह बात सूबेदार लहना सिंह को तब बताती है जब वह उसे सूबेदार के यहां मलती है। इस तरह लहना सिंह के दो गुण हैं एक उस लड़की के प्रति प्रेम जो की बालो चत है और दूसरा साहस। जो आगे चलकर उसके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

25 साल बाद बा लका सूबेदार हजारा सिंह की पत्नी बन जाती है लहना सिंह एक कसान का बेटा है जो फौज सेवा में भर्ती हो जाता है। सपाही में भर्ती होने के बाद भी उसकी मान सकता एक कसान की ही तरह है। उसके स्वप्न उसकी इच्छाएं कसान की तरह रहते हैं। सेवा में वह सपाही के पद पर है। उसका जीवन एक कसान और सपाही जैसा मला-जुला जीवन है। थोड़ा छुट्टी लेकर वह अपने गांव जाता है जमीन के मुकदमे की पैरवी के

लए। लहना संह के ववाह के बारे में कुछ कहानी में नहीं बताया गया। इसका एक भतीजा है कीरत संह, लेकिन उसके साधारण जीवन में बदलाव तब आता है जब उसकी दूसरी मुलाकात उस लड़की से होती है जो अब एक सूबेदार की पत्नी है और बोधा संह की मां है। सूबेदार हजारा संह को बहादुरी का खताब मला है और उसके जमीन जायदाद भी है। सूबेदारनी उसे इतने सालों बाद भी देखकर पहचान लेती है। उसे बचपन की घटना अभी तक याद है। सूबेदारनी ने जब लहना संह को बचपन की घटना का स्मरण कराती है तो वह आश्चर्यचकित हो जाता है। लहना संह के लिए सूबेदारनी से इस तरह मलन सुखद आश्चर्य था। सूबेदारनी द्वारा लहना संह को बचपन की बातें याद कराना और उस पर यह विश्वास करना कि लहना संह युद्ध के मैदान में हजारा संह और बोधा संह की जान की रक्षा करेगा, लहना संह का बचपन का साहस उसका व्यक्तित्व निर्मित करता है और वह साहस उसके युद्ध के मैदान में भी काम आता है। जब जर्मन जासूस लपटन साब बनाकर उनकी टुकड़ी में घुस आता है तब, उसकी सूझबूझ चतुराई और साहस देखते बनता है। उसे यह पहचानने में देर नहीं लगती कि लपटन साहब जर्मन जासूस है और वह उसी हिसाब से कदम उठाता है और सूबेदारनी को दिए गए वचन के प्रति सजग रहता है। हजारा संह और बोधा संह की जान बचाने के लिए वह युक्ति सोचता है और अंत में अधिक घायल होने के पश्चात भी हजारा संह और बोधा संह को अस्पताल की गाड़ी से भेज देता है और अपने घाव को छुपा लेता है जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार कहानी के नायक का त्रासद अंत हो जाता है। कहानी में ना तो अंग्रेज सरकार और ना ही सूबेदारनी द्वारा लहना संह के मृत्यु का किसी प्रकार रेखांकन दिखाया गया है।

सूबेदारनी

लहना संह की बात से ही सूबेदारनी का परिचय पाठक से बचपन में होता है।

सूबेदारनी कहानी में दो बार आती है- एक बार कहानी के आरंभ में और दूसरी बार कहानी के अंतिम भाग में। वह भी लहना संह की स्मृतियों में। लहना संह के बार-बार पूछने पर तेरी कुड़माई हो गई, 8 वर्ष की वह लड़की जवाब में धत्त कहती है कंतु कुछ दिनों का पश्चात् इसी प्रश्न का जवाब तेरी कुड़माई हो गई है लड़की कहती है हां हो गई देखते नहीं यह रेशम से काढ़ा हुआ शालू। इस प्रकार 8 वर्षीय लड़की सगाई को एक सम्मान का व्यवहार समझती है और अपनी उम्र से अधिक परिपक्वता और आत्म विश्वास उसके इस जवाब में है।

लहना संह के उस वार्तालाप का प्रभाव इतना गहरा सूबेदारनी के ऊपर था कि 25 वर्ष बाद भी वह लहना संह को ना भूल सकी और लहना संह की एक झलक में ही वह उसे पहचान गई। लहना संह और सूबेदारनी दोबारा उम्र के उसे पड़ाव पर मले जहां सूबेदारनी भावनात्मक रूप से अपने पति और पुत्र की जान के प्रति चिंतित थी। जहां वह एक पतिव्रता पत्नी और ममतालु मां के रूप में उपस्थित है। वह लहना संह से अपने पति हजारा संह और पुत्र बोधा संह की जान बचाने का आग्रह करती है। सूबेदारनी के लिए जितना महत्व अपने पति और पुत्र के प्रति प्यार और कर्तव्य है उतना ही महत्व लहना संह के लिए वह स्मृतियां हैं। सूबेदारनी ने अपने दूसरे मुलाकात में लहना संह के साहस के गुण से हजारा संह, बोधा संह की जान मुश्किल में पड़ने पर उनकी रक्षा का वचन लिया

2.2.2 उसने कहा था: शल्प

उसने कहा था कहानी वर्णनात्मक है कंतु इसमें नाटकीयता का भी पट है। कहानी का धरातल मुख्यतः दो रूप है- पहले अमृतसर का बाजार और दूसरा युद्ध का मैदान। एक कहानी का प्रारंभ है और दूसरा कहानी का अंत। कहानी के अंतिम भाग में फ्लैशबैक तकनीक का प्रयोग किया गया है जिससे कहानी का पहला भाग जुड़ता है।

कहानी की भाषा उसके परिवेश और तथ्य के आधार पर है। गुलेरी जी ने कहानी में भाषा के संयम को भी बनाए रखा और अपनी भाषा से परिवेश के सत्य को भी उजागर करने का पूरा प्रयास किया है। गुलेरी जी ने तांगे वालों की भाषा को जिस प्रकार व्यक्त किया है वह अद्भुत है। कहानी में कई स्थानों पर ऐसे वर्णन कए गए हैं जहां पर भाषा की आवश्यकता पात्रों के मनोभाव से पूरी हो जा रही है। इस प्रकार का एक- जब सूबेदारनी दोबारा लहना संह से मलती है तो लहना संह हजार संह और बोधा संह की कोई प्रतिक्रिया कहानी में नहीं दर्शाया जाता है। वहां लहना संह कुछ बोलता नहीं है कंतु सूबेदारनी और उसके प्रति जो स्मृतियां हैं और सूबेदारनी द्वारा कही बातों को वह सहर्ष स्वीकार करता है। कहानी का आधार पंजाब का अमृतसर जिला है- इसी लए पंजाबी शब्द आना स्वाभा वक है। कहानी में कई पंजाबी शब्द हैं जैसे कुड़माई, सालू, करमा वा लये, पुता प्यारिए, गनीम आदि

कहानी के आरंभ में ही अमृतसर बाजार का वर्णन है। उस भीड़ भाड़ वाले जगह का इतना अच्छा वर्णन भाषा में गुलेरी जी ने आरंभक हिंदी कहानी में प्रस्तुत किया

“बड़े-बड़े शहरों के इक्के-गाइवालों की जबान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गई है, और कान पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है क अमृतसर के बम्बूकार्ट वालों की बोली का मरहम लगाएं। जब बड़े-बड़े शहरों की चौड़ी सड़कों पर घोड़े की पीठ चाबुक से धुनते हुए, इक्केवाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट-सम्बन्ध स्थिर करते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आंखों के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अंगुलियों के पोरे को चीरकर अपने-ही को सताया हुआ बताते हैं. और संसार-भर की ग्लानि, निराशा और क्षोभ के अवतार बने नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी बिरादरी वाले तंग चक्करदार गलियों में, हर-एक लड्डी वाले के लए ठहर कर सब्र का समुद्र उमड़ा कर ‘बचो खालसाजी’ ‘हटो भाई

जी' 'ठहरना भाई जी।' 'आने दो लाला जी.' 'हटो बाछा'.. कहते हुए सफेद फेटों, खच्चरों और बत्तकों, गन्नें और खोमचे और भारेवालों के जंगल में से राह खेतें हैं।

उसने कहा था कहानी दो बच्चों के अपरिभाषित स्नेह की कहानी है। एक किसान परिवार के नौजवान के सपाही बनने की कहानी है एक सपाही की वचनबद्धता और उसके साहस की कहानी है

2.3 कफन: सारांश

कफन में घीसू माधव और माधव की पत्नी बुधया की कहानी है। माधव की पत्नी बुधया घर के भीतर प्रसव वेदना से कराह रही है और बाहर घीसू और माधव अलाव के पास साथ बैठे हैं।

घीसू माधव के घर में और कोई स्त्री भी नहीं है कंतु उन्हें बुधया के दर्द का एहसास नहीं है घीसू और माधव का पूरा ध्यान अलाव में डाले हुए आलू पर है। दोनों भूखे हैं। बीच-बीच में बुधया की दिल दहला देने वाली आवाज सुनकर भी दोनों वहां जाने की जहमत नहीं उठाते। घर के अंदर बुधया तड़प-तड़प कर कर मर रही है और घीसू माधव ठाकुर के यहां की दावत याद कर रहे हैं। दोनों अलाव के आलू निकालकर खाते हैं और सो जाते हैं और बुढ़िया प्रसव वेदना से छटपटाती हुई मर जाती है। सुबह दोनों बुधया की मौत पर जोर-जोर से चलाते हैं। आसपास के लोग इकट्ठा होते हैं बुधया के अंतिम संस्कार की तैयारी होने लगती है कंतु माधव के पास अंतिम संस्कार के लिए पैसे नहीं हैं। बुधया के अंतिम संस्कार के लिए घीसू और माधव गांव में पैसे मांगते हैं। जमींदार ने उनको दो रुपये दिए। उनके पास पांच रुपये से ज्यादा इकट्ठे हो जाते हैं। आस पड़ोस के लोग बाकी इंतजाम कर रहे हैं। घीसू और माधव कफन के लिए शहर जाते हैं। दो-चार जगह कफन देखने के बाद दोनों शराब की दुकान पर पहुंचते हैं, जी भरकर शराब पीते हैं और भी चीज खाते हैं और बचा

हुआ खाना भखारी को दान में दे देते हैं फर नशे में मस्त होकर निर्गुण गाते हैं और निहाल होकर गर पड़ते हैं। बुधया को परलोक में खुश रहने का आशीर्वाद देते हैं शुभकामना देते हैं और मस्त होकर गर पड़ते हैं

2.3.1 कफन: पात्र योजना

कफन कहानी में घीसू और माधव हमेशा साथ-साथ रहते हैं और दोनों के गुण एक समान हैं। माधव घीसू का पुत्र है और उसे उत्तराधकार में कामचोरी, आलस्य, निकम्मापन मले हुए हैं। प्रेमचंद दोनों के चरित्र के बारे में कहानी में बताते हुए लिखते हैं-

“लोग इन दोनों को (मजदूरी के लए) उस वक्त बुलाते हैं जब दो आदमियों से एक का काम कराकर भी संतोष कर लेने के सवा कोई चारा न होता”।

घीसू और माधव हमेशा कहानी में साथ-साथ रहते हैं इस लए हम दोनों चरित्रों का वश्लेषण एक साथ करेंगे-

कफन कहानी तीन भागों में वभाजित है- पहले भाग में चरित्र के बारे में बताया गया है। कहानी में प्रेमचंद्र स्वयं आते हैं और बताते हैं- व चत्र था इनका जीवन- व चत्र यह था क घीसू माधव कामचोर थे, घीसू एक दिन काम करता था तो तीन दिन आराम करता था आधे घंटे काम करता तो घंटे भर चलम पीता, दूसरा गुण दोनों में था क वह दोनों बहुत संतोषी प्रकृति के थे। इनकी सादगी और संयम पर प्रेमचंद ने व्यंग्य करते हुए लिखा है क अगर दोनों साधु होते तो दोनों को नियम संयम और व्रत के लए प्रयास नहीं करना पड़ता। तीसरा या क संपत्ति के नाम पर उनके पास दो चार बर्तन के सवा कुछ नहीं था। दोनों आलसी और कामचोर होने के साथ-साथ समझते थे क हाड़ तोड़ मेहनत करने से कोई लाभ नहीं है। काम चोरी उनकी जीवन की रणनीति थी। घीसू माधव का पता है वह उसका जैविक पता होने के साथ-साथ आलस और कामचोरी में भी पता है। उसका अनुभव भी माधव से

ज्यादा है। माधव इस बात के लए परेशान है क अगर बच्चा हुआ तो और चीज कहां से आएंगे। घीसू का अनुभव इस मामले में अ धक है। इस पर घीसू कहता है सब कुछ आ जाएगा। जब माधव बु धया की मृत्यु के बात करता है और कहता है क कफन का इंतजाम कहां से होगा तब भी घीसू अपने अनुभव से बोलता है यही लोग देंगे। प्रेमचंद ने घीसू और माधव की कहानी के माध्यम से और भी कई समस्याओं पर प्रकाश डाला है। कहानी ऊपरी तौर पर देखने पर घीसू और माधव के आलस्य, निकम्मापन, कामचोरी का दस्तावेज दिखती है कंतु थोड़ा ध्यान से कहानी पढ़ने पर यदि हम कहानी का वश्लेषण करें तो हमें यह पता चलता है की कहानी में घीसू माधव एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का उत्पादन है जहां मेहनत करने वाला कसान और मजदूर दुखी है और व्यवस्था की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जो लोग जानते हैं वह कहीं अ धक संपन्न है। यहां हम यह कह सकते हैं की घीसू और माधव ने इस व्यवस्था में अपने लए जो रास्ता चुना है वह जानबूझकर चुना है। उनकी हाड़ तोड़ मेहनत भी उनके आ र्थक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं ला सकती। जिस प्रकार शोषक वर्ग व्यवस्था की दुर्बलताओं को समझकर लाभ उठाता है उसी प्रकार घीसू भी शोषक वर्ग के भावनात्मक दुर्बलताओं को जानता है और दोनों कहानी में इसका लाभ उठाते हैं। जिस सामाजिक आ र्थक व्यवस्था में घीसू और माधव हैं उस व्यवस्था में मेहनत करने वालों के लए कोई स्थान नहीं है। न तो न्यूनतम मजदूरी है और न तो मेहनत का कोई नीयत समय। सारी व्यवस्था शोषण पर आधारित है। घीसू और माधव में एक तरह का ढीठपन है जिसके कारण वह व्यवस्था से शो षत नहीं होते। तभी तो व्यवस्था के उच्च वर्ग की भावनाओं का शोषण करते हुए आ र्थक लाभ उठाते हैं। घीसू माधव अपने समस्त अवगुणों के रहते हुए भी हमारी सहानुभूति से वं चत नहीं होते । पाठक का सारा ध्यान समाज के उस उत्पीड़न की ओर जाता है जिसके परिणाम स्वरूप घीसू और माधव इस अवस्था को प्राप्त हुए हैं।

2.3.2 कफन शल्प

कफन मुशी प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानी ही नहीं सर्वाधिक ववादास्पद कहानी भी है। कफन में मनोवैज्ञानिक चित्रण के साथ साथ सामाजिक यथार्थ का चित्रण भी हुआ है। कहानी में चमारों की बस्ती का वर्णन प्रेमचंद ने किया है। अकर्मण्य और कामचोर लोगों के लिए समाज में जिस प्रकार की धारणा होती है, उसी प्रकार की भाषा का प्रयोग प्रेमचंद ने किया है -

“चमारों का कुनबा था और सारे गांव में बदनाम। घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम करता। माधव इतना कामचोर था क आधा घंटे काम करता तो घंटे भर चलम पीता। इस लिए उन्हें कहीं मजदूरी नहीं मिलती थी। घर में मुट्ठी भर भी अनाज मौजूद हो, तो उनके लिए काम करने की कसम थी। जब दो-चार फांके हो जाते तो घीसू पेड़ पर चढ़कर लड़कियां तोड़ लाता और माधव बाजार से बेंच लाता और जब तक वह पैसे रहते दोनों इधर-उधर मारे-मारे फरते। गांव में काम की कमी न थी। किसानों का गांव था मेहनती आदमी के लिए पचास काम थे। मगर इन दोनों को उस वक्त बुलाते, जब दो आदमियों से एक का काम पाकर भी संतोष कर लेने के सवा और कोई चारा न होता” ।

प्रेमचंद ने कहानी में वीभत्स स्थिति का चित्रण भी किया है। घीसू माधव अलाव के सामने बैठकर जब आलू का इंतजार कर रहे थे तो माधव की पत्नी प्रसव पीड़ा से कराह रही थी। पर दोनों में से कोई उसे उठकर देखने नहीं जाता। और जब दूसरे दिन माधव सुबह अपनी पत्नी को देखने गया तो झोपड़ी का चित्रण इस प्रकार था-

“सवेरे माधव ने कोठरी में जाकर देखा, तो उसकी स्त्री ठंडी हो गई थी। उसके मुख पर मक्खियां भनक रही थीं। पथराई हुई आंखें ऊपर टंगी हुई थीं। सारी देह धूल से लथपथ हो रही थी। उसके पेट में बच्चा मर गया था”।

कफन कहानी बोधात्मक शल्प में लखी गई है। क्षणक होने के कारण इसकी भाषा भी वक सत और समृद्ध है। प्रेमचंद की अन्य कहानियों की भांति भाषा सहज और सरल है। ववरण की भाषा का प्रयोग किया है। कफन कहानी की भाषा में परिस्थिति की वडंबना को और चारित्रिक वसंगतियों की सूक्ष्मता अभिव्यक्त करने की पूरी क्षमता मौजूद है।

घीसू और माधव जब बाजार में बुध्या के लिए कफन लेने पहुंचते हैं तो उनका संवाद एक दूसरे के मनोवृत्त को ध्यान में रखकर होता है। घीसू और माधव दोनों अपनी आदत से मजबूर हैं। और दोनों शराब पीना चाहते हैं। मन भर के अच्छे-अच्छे पकवान खाना चाहते हैं। बहुत दिनों के बाद उनके पास इतना पैसा आया है लेकिन दोनों एक दूसरे से नैतिकता का आग्रह महसूस करते हैं। कंतु दोनों एक दूसरे के मन की बात ताड़ जाते हैं। बाजार में पहुंचकर दोनों का संवाद इस प्रकार है -

बाजार में पहुंचकर घीसू बोला - लकड़ी तो उसे जलाने भर को मल गई है , क्यों माधव!
माधव बोला - हां,लकड़ी तो बहुत है, अब कफन चाहिए।

तो चलो, कोई हल्का सा कफन ले लें।

हां, और क्या! लाश उठते - उठते रात हो जाएगी। रात को कफन कौन देखता है?

कैसा बुरा रिवाज है क जिसे जीते जी तन ढकने को लता भी ना मले , उसे मरने पर नया कफन चाहिए ।

कफन लाश के साथ जल ही तो जाता है।

और क्या रखा रहता है? यही पांच रुपए पहले मलते, तो कुछ दवा दारू कर लेते।

घीसू और माधव ने बाजार में छककर शराब पी। और बहुत से पकवान खाए और भखारी को भी खाने को दिया। खाते समय वह बुध्या को मन से दुआएं देते जा रहे थे। पर उन्हें भगवान का भय भी था। दो शराबियों के संवाद को प्रेमचंद ने इस प्रकार व्यक्त किया है-

घीसू दार्शनिक भाव से बोला - हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है तो क्या उसे पुन्न न होगा? माधव ने श्रद्धा से सर झुका कर तसदीक की - जरूर से जरूर होगा। भगवान तुम अंतर्यामी हो। उसे बैकुंठ ले जाना। हम दोनों हृदय से आशीर्वाद दे रहे हैं। आज जो भोजन मला वह कभी उम्र भर न मला था।

एक क्षण के बाद माधव के मन में एक शंका जागी बोला - क्यों दादा, हम लोग भी एक-न - एक दिन वहां जाएंगे ही?

घीसू ने इस भोले - भाले सवाल का कुछ उत्तर न दिया। वह परलोक की बातें सोचकर इस आनंद में बाधा न डालना चाहता था।

जो वहां हम लोगों से पूछे क तुमने हमें कफन क्यों नहीं दिया तो क्या कहोगे? कहेंगे तुम्हारा सर!

पूछेगी तो जरूर!

तू कैसे जानता है क उसे कफन ना मलेगा? तू मुझे ऐसा गधा समझता है है साठ साल दुनिया में घास खोदता रहा हूं? उसको कफन मलेगा और बहुत अच्छा मलेगा!

माधव को वश्वास ना आया। बोला - कौन देगा रुपए तो तुमने चट कर दिए। वह तो मुझे पूछेगी। उसकी मांग में तो सेंदुर मैंने डाला था।

कौन देगा, बताते क्यों नहीं?

वही लोग देंगे, जिन्होंने अबकी दिया है। हां, अबकी रुपए हमारे हाथ न आएंगे।

इस प्रकार हम देखते हैं क हर परिस्थिति में माधव के पास एक प्रश्न है, और घीसू के पास उसका जवाब है। घीसू के पास अनुभव है आलस्य का, अकर्मण्यता का शोषक वर्ग के भावनात्मक दुर्बलताओं का। घीसू को पता है क हाड़तोड़ मेहनत करने पर भी हमारी स्थिति नहीं सुधरनी है। इसी लए आलस्य को उसने अपना स्वभाव बना लिया है।

कफन कहानी में प्रमुख रूप से दो परिवेश उल्लेखनीय हैं - पहला परिवेश- जब घीसू और माधव अपनी झोपड़ी के बाहर अलाव के पास बैठे हैं। प्रेमचंद परिवेश के वर्णन में सद्धहस्त हैं। चाहे फर वह प्रकृत का वर्णन हो या फर कसी भौतिक स्थिति का। उनकी कहानियों और उपन्यासों में परिवेश का वर्णन अत्यंत मार्मिक और संजीव होता है। प्रकृति का वर्णन भी मनमोहक होता है। घीसू- माधव जब बाजार जाते हैं तो वहां की प्रकृति के साथ-साथ उस भौतिक स्थान का भी वर्णन प्रेमचंद ने किया है -

“ज्यों ज्यों अंधेरा बढ़ता था और सतारों की चमक तेज होती थी, मधुशाला की रौनक भी बढ़ती जाती थी। कोई गाता था, कोई डींग मारता था, कोई अपने संगी के गले लपटा जाता था, कोई अपने दोस्त के मुंह में कुल्हड़ लगाए देता था। वहां के वातावरण में सरूर था, हवा में नशा। कतने तो यहां आकर एक चुल्लू में मस्त हो जाते थे। शराब से ज्यादा यहां की हवा उन पर नशा करती थी। जीवन की बाधाएं यहां खींच लाती थीं और कुछ देर के लिए यह भूल जाते थे कि वे जीते हैं या मरते हैं। या न जीते हैं न मरते हैं”।

घीसू और माधव कस प्रकार अपने परिवेश के अनुकूल फट बैठते हैं और भुने हुए आलू का इंतजार कर रहे हैं। यह हम इस अनुच्छेद में देख सकते हैं -

“झोपड़े के द्वार पर बाप और बेटा दोनों एक बुझे हुए अलाव के सामने चुपचाप बैठे हुए हैं और अंदर बेटे की जवान बीवी बुधिया प्रसव वेदना से पछाड़ खा रही थी। रह रह कर उसके मुंह से ऐसी दिल दहला देने वाली आवाज निकलती थी कि दोनों कलेजा थाम लेते थे। जाड़ों की रात थी, प्रकृति सन्नाटे में डूबी हुई। सारा गांव अंधकार में लीन हो गया था”।

घीसू और माधव दोनों अलाव में आलू का इंतजार करते हैं। दोनों भूखे हैं किंतु वह बुधिया के दुख को सुनते हुए भी अनसुना कर देते हैं। उनकी भूख उनके ववेक को नष्ट कर देती है। दोनों आलू निकालकर जलता हुआ उसे खाने लगते हैं लेकिन फर भी उनका पेट नहीं

भरता और अतीत में हुए एक दावत की याद घीसू करता है जो क ठाकुर की बारात थी। लड़की वालों ने सबको भरपेट पूरिया खलाई थी। इसी प्रकार के एक परिवेश का वर्णन जब कोई भूखा अपने परिवेश में कस प्रकार का व्यंजन को देखाता है-

“लड़की वालों ने सबको भरपेट पूरिया खलाई थी, सबको! छोटे-बड़े सबने पूरिया खाई और असली घी की ! चटनी, रायता, तीन तरह के सूखे साग एक रसेदार तरकारी, दही, मठाई। अब क्या बताऊँ क इस भोज में क्या स्वाद मला! कोई रोक-टोक नहीं थी। जो चीज मांगो और जितना चाहो खाओ। लोगों ने ऐसा खाया, ऐसा खाया, कसी से पानी न पया गया। मगर परोसने वाले हैं क पतल में गरम-गरम गोल-गोल सुवा सत कचौरियां डाल देते हैं। मना करते हैं क नहीं चाहिए, पतल पर हाथ रोके हुए हैं, मगर वे हैं क दिए जाते हैं और जब मुंह धो लया, तो पान-इलायची भी मली, मगर मुझे पान लेने की कहां सुध थी! खड़ा न हुआ जाता था। चटपट जाकर कंबल पर लेट गया ऐसा दिल दरियाव था वह ठाकुर”!

दूसरा प्रमुख परिवेश जब वह कफ़न लेने के लए बाजार जाते हैं और शराब और खाने की दुकान पर अपने मन की तृप्ति करते हैं -

“पयक्कड़ों की आंखें उनकी ओर लगी हुई थी और यह दोनों अपने धुन में मस्त हुए जाते थे। फर दोनों नाचने लगे। उछले भी, कूदे भी, गरे भी मटके भी। भाव भी बताए अ भनव भी कये। और आ खर नशे में मस्त होकर वहीं गर पड़े”।

2.4 मधुआ : सारांश

ठाकुर सरदार संह का लड़का लखनऊ में पढ़ता था। ठाकुर साहब भी यहां आ जाते थे। ठाकुर साहब को कहानी सुनना बहुत अच्छा लगता था। एक शराबी बहुत अच्छी कहानी सुनाता था। वह ठाकुर साहब के पास कसी भी समय आकर लच्छेदार भाषा में कहानी सुनाता है और ठाकुर साहब का मनोरंजन करता है।

शराबी, ठाकुर साहब को कहानी सुनाता है। और ठाकुर साहब को धीरे-धीरे नींद आ जाती है। फिर वह शराबी को एक रुपए ले जाने के लिए कह देते हैं। और सो जाते हैं बाहर जाते समय उसे एक बच्चे के रोने की आवाज आती है। बच्चे का नाम मधुआ है कुंवर साहब के साथ दिनभर खेल में उनका सामान ढोता रहा लेकिन रात को भी उसे कुछ खाने को नहीं मिला। और खाने को मिला तो कुंवर साहब की दो लातें। और वह ठाकुर के जमादार के यहां जब सूचना देने जाता है तो यहां माधव को रोते हुए देखकर उसका मन मधुआ के ऊपर द्रवित होता है। और वह अपने यहां लेकर मधुआ को बाहर आता है तो शराबी उसे अपने साथ लेकर अपनी कोठरी में जाता है। और उस भूखे बच्चे को कुछ खाने को देता है। खाने के बाद मधुआ फिर भी भूखा है तो शराबी ठाकुर साहब से मिले एक रुपए में जाकर उसके लिए और खाने की सामग्री ले आता है। दोनों बैठकर खाते हैं। शराबी रात में यह सोचता है कि सुबह होने पर मैं मधुआ को भगा दूंगा। पर वह उसको भगा नहीं पाता। उसके ऊपर उसे दया आ जाती है। वह सुबह उठकर गोमती नदी के किनारे जाता है और सोचता है कि मधुआ को वह के बाहर भेजे या अपने पास में रखे। शराबी लौट कर अपनी कोठरी में आता है तो देखता है कि मधुआ उसकी कोठरी में है। शराबी मधुआ से पूछता है कि तुम कहीं और नहीं जाओगे ? तो वह कहता है कि मैं कहां जाऊंगा? और दोनों काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं। वह ठाकुर के यहां न जाने का प्रण लेता है। और शराबी शराब छोड़ने का प्रण लेता है। दोनों काम के लिए कोठरी से निकल पड़ते हैं।

मधुआ कहानी एक बाल मनोवैज्ञानिक कहानी है। कहानी में एक शराबी की मानवीय संवेदना को स्पष्ट किया गया है। शराबी अपने जीवन को मानमाने ढंग से चला रहा था। वह केवल शराब पीने के लिए ठाकुर को कहानी सुना कर जीवन यापन करता है। इसका मुख्य लक्ष्य

शराब पीना है। पेट भरना बाद में या यह कह सकते हैं क वह शराब से ही पेट भरता है।
कंतु शराबी होने के साथ-साथ वह एक संवेदनशील मनुष्य है।

2.4.1 मधुआ : पात्र योजना

मधुआ एक चरित्र प्रधान कहानी है। मधुआ में दो पात्र प्रमुख हैं - मधुआ और शराबी। मधुआ कहानी का प्रमुख पात्र शराबी है। कहानी के प्रारंभ से अंत तक यही एक पात्र है जो पूरी कहानी में उपस्थित है। उसके चरित्र को ही केंद्र में रखा गया है। शराबी कहानी के प्रारंभ में ही कहता है की सात दिन हो गए। मैंने छुआ तक नहीं, ठाकुर सरदार संह जब उससे शराब पीने के बारे में पूछते हैं ,तो वह कहता है -

आज सात दिन हो गए पीने को कौन कहे छुआ तक नहीं ! आज सातवां दिन है सरकार !

तुम झूठे हो । अभी भी तुम्हारे कपड़ों से महक आ रही है ।

वह ... वह तो कई दिन हुए । सात दिन से ऊपर कई दिन हुए अंधेरे में बोतल उड़ेलने लगा था । कपड़ों पर गर जाने से नशा भी न आया और आपको कहने का क्या कहूं सच मानिए । सात दिन ठीक सात दिन से एक बूंद भी नहीं ।

शराबियों में जो एक प्रकार का क्षणवाद का दर्शन वक सत हो जाता है । उसमें अभी इसी प्रकार का दर्शन वक सत हो गया है । ठाकुर साहब जब उसे कहते हैं क सात दिन का पेट काटकर अच्छा भोजन न करके तुम्हें पीने की सूझ रही है तो वह एक दार्शनिक वाक्य बोलता है-

सरकार मौज बहार की एक घड़ी, एक लंबे दुख पूर्ण जीवन से अच्छी है । उसकी खुमारी में अच्छे दिन काट लए जाते हैं।

इस कहानी में और भी कई पात्र हैं । ठाकुर सरदार सिंह , उनका बेटा - कुंवर साहब , जमादार । कंतु पूरी कहानी मधुआ और शराबी के आसपास ही घूमती है । मधुआ एक बालक है और वह ठाकुर साहब के यहां उनके लड़के कुंवर साहब के साथ रहता है । कहानी में उसका परिचय शराबी से होता है, जब उसे खाने की जगह कुंवर साहब की लात खानी पड़ती है । शराबी जब उसे अपने घर ले आता है और उससे कुछ खाने के लिए पूछता है तो मधुआ बताता है-

यही कहने तो मैं गया था जमादार के पास ; मार तो रोज ही खाता हूं । आज तो खाना ही नहीं मला । कुंवर साहब का ओवर कोट लिए खेल में दिनभर साथ रहा । सात बजे लौटा तो और भी नौ बजे तक काम करना पड़ा । आटा रख नहीं सका था,रोटी बनती तो कैसे ! जमादार से कहने गया था !

इसी इकाई में हमने कफन कहानी पढ़ी । जहां हमने घीसू और माधव के चरित्र के बारे में भी पढ़ा कि वह कामचोर और आलसी हैं , शराबी हैं , और एक आलू के लिए वह संवेदनहीन हो गए हैं । माधव की पत्नी मर जाती है पर वह अलाव के पास से आलू के लालच में नहीं जाते ।

दूसरी तरफ मधुआ कहानी का शराबी भी आलसी और कामचोर है । और वह अपने जीवन यापन के लिए लोगों को कहानी सुनाया करता है । वह भी शराबी है, उसके भीतर भी वही द्वंद्व चल रहे हैं । जो घीसू और माधव के भीतर के द्वंद्व हैं पर अंत में वह अपने इन द्वंद्वों पर वजय पा लेता है । और एक संयम जीवन जीता है । और मधुआ को संरक्षण देता है और वही घीसू माधव अमानवीयता की सारी हदें पार कर देते हैं । और बुध्या के लिए कफन में मले पैसे की शराब पी लेते हैं ।

दूसरा प्रमुख चरित्र उस बालक मधुआ का है । जो कुंवर साहब के साथ दिन भर उनके खेल का सामान ढोता है । रात में खाना न मलने पर रोने लगा इस बीच उसे मार भी पड़ी । वह अपने उम्र से अधिक परिपक्व है । शराबी के साथ उसके घर चला जाता है। शराबी की सहानुभूति में उसे सच्चाई दिखती है । वह दृढ़ निश्चय है कि वह ठाकुर के द्वार पर नहीं जाएगा ।

शराबी द्वारा पूछे जाने पर कि वह कहाँ जाएगा ? वह बहुत ही विश्वास से कहता है -कहीं नहीं ! मधुआ स्थिति को समझ जाता है, और उसी अनुसार अपना व्यवहार करता है। उसे पता है कि शराबी उसे नुकसान नहीं पहुंचाएगा । उसके अंदर एक मानवीय संवेदना है । और वह ठाकुर के यहां नहीं जाना चाहता । जहां उसका शोषण है और उसे पेट भर भोजन भी नहीं मिलता ।

क्यों रे माधव अब तू कहाँ जाएगा ?

कहीं नहीं ।

यह लो तो तो फर यहां जमा गाड़ी है कि मैं खखो -खोद कर तुझे मठाई खला रहूंगा?

तब कोई काम करना चाहिए ।

करेगा ?

जो कहो ?

“अच्छा तो आज से मेरे साथ-साथ घूमना पड़ेगा । यह कल तेरे लिए लाया हूं । कहां, इसका कुछ ठीक नहीं । पेड़ के नीचे रात बिता सकेगा ना ?

कहीं भी रह सकूंगा ; पर उस ठाकुर की नौकरी न कर सकूंगा ।

इस प्रकार मधुआ एक दृढ़ निश्चयी बालक है । और उसके संगत का प्रभाव शराबी के ऊपर पड़ता है । और वह भी शराब की लत छोड़कर अपने काम के पुराने रास्ते पर लौट आता है। और दोनों परिश्रमपूर्ण जीवन यापन करने के पक्ष में हैं।

2.4.2 मधुआ: शल्प

मधुआ कहानी की भाषा सरल और पात्र अनुकूल हैं। कंतु अवसर आने पर प्रसाद जी काव्यमय भाषा के प्रयोग का लोभ संवरण नहीं कर पाते । ऐसे अवसरों पर काव्य भाषा में संस्कृतनिष्ठ शब्दों का भी प्रयोग प्रसाद ने किया है । जो क उनके काव्य की विशेषता है । और ऐसी काव्य में भाषा में एक प्रकार का दर्शनिकता का पुट भी आ जाता है-

कसने ऐसे सुकुमार फूलों को कष्ट देने के लिए निर्दयता की सृष्टि की आह री नियति?
शराबी और मधुआ के संवाद में आपसी विश्वास और भविष्य के प्रति एक आशा के संचार को देखा जा सकता है। जब क अभी दोनों में परिचय ही एक दिन का है । दोनों की परिस्थितियां एक दूसरे की पूरक हैं। शराबी का कोई परिवार नहीं है। और न ही मधुआ का कोई परिवार है। शराबी अपने जीवन के कन परिस्थितियों के कारण शराबी हुआ इसका चित्रण तो नहीं है कंतु वह शराब छोड़ना चाहता है। और मधुआ से मिलने के पश्चात उसने शराब छोड़ दी। दोनों मेहनत करना चाहते हैं और दोनों अच्छा दिन गुजारना चाहते हैं। इसी लिए शराबी जब मधुआ से काम के बारे में पूछता है तो वह सहर्ष तैयार हो जाता है -
शराबी ने पूछा,“तू कसे उठाएगा?”

“जिसे कह”!

“अच्छा तेरा बाप जो मुझे पकड़े तो”?

“कोई नहीं पकड़ेगा, चलो भी । मेरे बाप कभी के मर गए।”

शराबी आश्चर्य से उसका मुंह देखता हुआ बोतल उठाकर खड़ा हो गया। बालक ने गठरी लादी। दोनों कोठरी छोड़ चल पड़े।

इस प्रकार प्रसाद जी की इस कहानी में भाषा पात्र अनुकूल है। और संवाद परिस्थिति के अनुसार हैं

बोध प्रश्न

1. सही विकल्प द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

क. उसने कहा था कहानी शैली में लखी गई है। (पूर्वदीप्ति/ऐतिहासिक)

ख. घीसू और माधव..... कहानी के पात्र हैं। (मधुआ/कफन)

ग. मधुआ एक..... प्रधान कहानी है (चरित्र/ऐतिहासिक)

घ. कफन प्रेमचंद के..... कहानी है। (अंतिम दौर की/प्रारंभिक दौर की)

2. सही जोड़ों का मेलन करें-

क. उसने कहा था अ. जयशंकर प्रसाद

ख. . मधुआ ब. फणीश्वर नाथ रेणु

ग. कफन स. चंद्रधर शर्मा गुलेरी

घ. तीसरी कसम द. प्रेमचंद

3. निम्न लखत कथनों में सही अथवा कलत का चुनाव कीजिए:

क. उसने कहा था कहानी का नायक लहना सिंह है। (सही/ गलत)

ख. मधुआ जयशंकर प्रसाद की कहानी है। (सही/गलत)

ग. घीसू और माधव मेहनती किसान हैं। (गलत/सही)

घ. उसने कहा था प्रेमचंद पूर्व युग की सर्वश्रेष्ठ कहानी मानी जाती है। (सही/गलत)

अभ्यास प्रश्न

- 1.. उसने कहा था कहानी के आधार पर लहना संह के चरित्र का चित्रण कीजिए।
2. कफन कहानी के भाषा शल्प को स्पष्ट कीजिए।
3. मधुआ कहानी के आधार पर कहानी का सारांश ल खए कीजिए।
4. मधुआ कहानी के भाषा शल्प को स्पष्ट कीजिए।

2.5 सारांश

इस इकाई में अपने स्वतंत्रता पूर्व हिंदी कहानीकारों की कहानियों का अध्ययन किया। चंद्रधर शर्मा गुलेरी की प्रसिद्ध कहानी उसने कहा था प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानियों में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। यह 1916 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। हिंदी कहानी के इतिहास में प्रेमचंद के समय को प्रेमचंद युग के नाम से जाना जाता है तथा उन्हें हिंदी समाज उपन्यास सम्राट के रूप में भी स्वीकार करता है। कहानी के विकास में प्रेमचंद और प्रसाद का काल एक साथ है। परन्तु दोनों लेखन की कहानी दो भिन्न रचना दृष्टियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रेमचंद का साहित्य उस युग की राजनीतिक स्थितियों के अनुरूप विकसित हुआ। वे स्वाधीनता आंदोलन के रूप में स्वाधीनता के पक्ष में साहित्य सृजन कर रहे थे। इसके साथ उनकी रुचि समाज सुधार और सांप्रदायिक सद्भाव की ओर भी थी। प्रेमचंद एक जागरूक रचनाकार थे और अपने लेखन द्वारा समाज में जागरूकता फैलाना चाहते थे। प्रेमचंद युग में कहानी की दो धाराएं हैं पहली धारा प्रेमचंद से होकर गुजरती है और दूसरी प्रसाद से। प्रसाद जी की कहानी वस्तु और शल्प दोनों स्तरों पर छायावादी काव्य चेतना से प्रभावित है और उनकी कहानियों में हमें गीत संवेदना भी देखने को मिल जाती है। इस इकाई की तीनों कहानियों का आपने गंभीरता से अध्ययन किया होगा। अब आप कहानियों का सारांश, पात्र योजना तथा शल्प का विश्लेषण कर सकते हैं।

2.6 बोध प्रश्न/अभ्यासों के उत्तर

1. क.पूर्वदीप्ति ख. कफन ग.चरित्र घ.अंतिम दौर की
2. क. चंद्रधर शर्मा गुलेरी ख. जयशंकर प्रसाद
ग. प्रेमचंद घ. फणीश्वर नाथ रेणु
3. क. सही ख.सही ग.गलत घ.सही

अभ्यासों के उत्तर

1. इस प्रश्न के उत्तर हेतु 2.2.1 का पुनः अध्यन करें
2. इस प्रश्न के उत्तर हेतु 2.3.2 का पुनः अध्यन करें
3. इस प्रश्न के उत्तर हेतु 2.4 का पुनः अध्यन करें
4. इस प्रश्न के उत्तर हेतु 2.4 का पुनः अध्यन करें

उपयोगी पुस्तकें

हिंदी कहानी : अस्मिता की तलाश मधुरेश : आधार प्रकाशन , पंचकूला

हिंदी कहानी का विकास : मधुरेश : नई कहानी अलोपी बाग , इलाहाबाद

कहानी : अनुभव और अभिव्यक्ति : राजेंद्र यादव